संस्कार सागर

• वर्ष : 23 • अंक : 251 • मार्च 2020

• वीर नि.संवत 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- आचार्य श्री सुनील सागर की प्राकृत कृतियाँ 09
- आर्यिका श्री 105 विशुद्धमति माताजी का अवदान 15
- पुरातत्व सम्पदा से परिपूर्ण जैन तीर्थ देवगढ़ 19
- मूकमाटी में प्रतिपादित वनस्पति पर्यावरण 21
- आचार्य प्रभाचंद और उनका परमाणुवाद 23
- देव-शास्त्र गुरु की त्रिवेणी श्रवणबेलगोला 36
- आजादी की लड़ाई में जैन महिलाओं की सहभागिता 42
- जैन व्यक्तित्व- श्रीमद् राजचंद्र जी 50
- मध्यप्रदेश में व्यवसायिक शिक्षा की निम्नता की उच्चता पर 53
- थोथा चना बाजे घना 56
- हार्निया का समय पर उपचार द्वारा सर्जरी से बचें 57

बाल कहानी

- नेक अभियान 59

कविता

- हाथ में क्या 08
- ममता की मूरत माँ 14
- जीतहार के चक्कर 25
- अस्तित्व मिटाती नदी 39
- ओ रसना 41
- नजारे बदल गये 49

कहानी

- पारुल की पतंग 45

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 13 चलो देखें यात्रा : 25
आगम दर्शन :26 • कैरियर गाइड : 27 • पुराण प्रेरणा : 29 • माथा पच्ची : 29 • दुनिया भर की बातें : 30
दिशा बोध : 34 • इसे भी जानिये: 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 40 • हमारे गौरव : 49
डाक टिकटो पर जैन इतिहास एवं संस्कृति : 50 • हास्य तरंग : 58 • शरीर विकास के कुछ खेल : 58
बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं : अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
  खाता क्र.07882151004198(IFSC:ORBC0100788)
- आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 155104000037022
- आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

✲✲ कार्यालय ✲✲
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर जनवरी 2020 के अंक में ब्र. समता मारौरा का लेख पढ़ा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी की भूमिका शीर्षक से लिखे गये लेख में विषय वस्तु बहुत गम्भीर है। दुनिया की आधी आबादी नारी की है अब वह युग बीत गया है जब नारी को दोयम् दर्जे का माना जाता था। पुरुष वर्ग का अहंकार सदैव नारी का अपमान करने में लगा रहता था परंतु सच यह है कि नारी की कर्मठता उस समय भी प्रशंसनीय रही है जब हर प्रकार से नारी की उपेक्षा की जाती थी। उस समय भी नारी ने चरम बिन्दु तक अपनी उन्नति की थी। आज चारों ओर नारी अपना वार्चस्व मनवाने में सफल हो रही है। लेख की भाषा शैली सरल और सुबोध है। लेख स्तरीय है।

श्रीमति अंजू जैन, घुंवारा

• सम्पादक महोदय, **जल पर्यावरण मूकमाटी में** शीर्षक से संस्कार सागर के 250वें अंक फरवरी 2020 में दृष्टिगोचर हुआ लेख शोध परक एवं विवेचनात्मक है। जल ही जीवन है या फिर जल है तो कल है जैसे उद्घोषों को साकार रूप प्रदान करने में यह लेख सक्षम है लेख की भाषा शैली सरल सुबोध है । मूकमाटी के संदर्भों का बखूबी उपयोग किया गया तथा इन संदर्भों की सार्थकता सिद्ध करने में कुछ हद तक सफलता भी प्राप्त की है आचार्य श्री विद्यासागर जी ने तो जल संरक्षण का प्रतीक कमण्डलु घोषित किया है । जैन साधना पद्धति में जल बचाओ के सूत्र को प्राथमिकता प्रदान की गई। लेखक स्तुत्य है।

श्रीमति पुष्पा जैन, राहतगढ़

• सम्पादक महोदय, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय संसद में कुछ ऐसे प्रस्ताव पारित कराये है जो राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवीय समानता और सम्मान के लिये बेहद जरूरी थे उन्हें सफलता मिली है और इसमें उन्हें पूरे विश्व ने सराहा भी हैं । एक नागरिक संशोधन विधेयक को लेकर कुछ राजनैतिक दलों ने अपने वोट बैंक के लिये विरोध का झंडा उठाया है । इस विधेयक को मुस्लिम विरोधी घोषित कर एक भ्रम फैलाने का प्रयास किया गया जो कि अत्यंत घिनौना षडयंत्र है । सच पूँछा जाये तो पाकिस्तान बांग्लादेश अफगानिस्तान से आये हिन्दू जैन सिक्ख ईसाई जो प्रताड़ित हुये दुष्कर्म के शिकार हुये उन्हें भारत के सिवाय सम्मान की जिन्दगी जीने का अवसर आखिर कौन देश दे सकता प्रधानमंत्री का निर्णय सम्मानीय एवं स्वीकार्य है।

अंशुल पारासर, लटेरी

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों अमेरिका और ईरान के बीच अघोषित युद्ध प्रारंभ हुआ तब ईरान ने यूक्रोन के यात्री विमान पर 30 सेकेंड में दो मिसाईलों दागी विमान सवार 176 लोगों की मौत हुई ईरान के राष्ट्रपति हसन रूहानी ने सैन्य दल से कहा कि वह यूक्रेन से माफी मांगें । प्रश्न यह है युद्ध का जुनून इतनी हदों को लाँघ सकता है जो 176 निर्दोषों की जान ले लेने से भी न हिचके। युद्ध की हिंसा इसे नहीं माना जा सकता है क्योंकि जब यूक्रेन के यात्री विमान पर मिसाईलें दागी गयी तब अमेरिका और ईरान में से किसी ने भी युद्ध की घोषणा नहीं की थी अतः हम कह सकते हैं ईरान के सैन्य दल ने मात्र आतंकी जैसी गतिविधि को आगे बढ़ाया है जो अन्यायपूर्ण अनुचित सैन्यधर्म के विरूद्ध है किसी भी सैन्य दल को आतंकी जैसे हमले से परहेज करना चाहिये अन्यथा विश्वशांति खतरे में पड़ सकती है।

श्री राजकुमार जैन, इन्दौर

भक्ति तरंग

अरिहंत महिमा

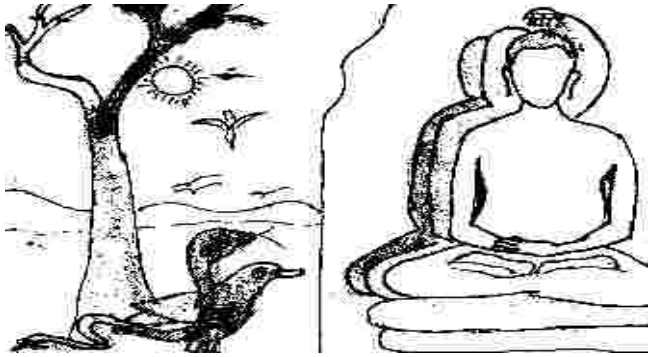

अरिरजरहस हनन प्रभु अरहन जैवंतो जग में ।
देव अदेव सेव कर जाकी, धरहिं मौलि पग में ।। अरि रज....।।
जो तन अष्टोत्तर सहस्र लक्खन लखि कलिल शमें ।
जो बच दीप शिखातैं मुनि विचरैं शिव मारग में ।।1।। अरि रज..।
जास पासतैं शोक हरन गुन, प्रगट भयो नगमें ।
व्याल मराल कुरंगसिंघ को, जाति विरोध गमें ।।2।। अरि रज..।
जा जस गगन उलंघन कोऊ क्षम न मुनी-खग में ।
दौल नाम तसु सुरतरु है या, भव मरूथल मग में ।।3।। अरि रज..।

अरहंत प्रभु जगत में सदा जयवन्त रहें, जिनने मोहनीय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, और अन्तराय इन घातिया कर्मों का नाश किया है। देव व अन्य सभी जन जिनके चरणों में अपना शीश झुकाकर, मुकुट रखकर वन्दना करते हैं, सेवा करते हैं।

जिनके शरीर में 1008 सुलक्षण देखकर सारे पापों का शमन हो जाता है। जिनकी दिव्यध्वनि के आलोक में (प्रकाश में) मुनिजन मोह की राह में बढ़ते हैं।।1।।

जिनकी समीपता से वृक्ष में सारे खेद-शोक का नाश करने का गुण प्रकट हो जाता है और वह **अशोक** वृक्ष कहलाने लगता है, जिनकी समीपता में शरण में सर्प व मोर, हरिण व सिंह सभी अपना जातिगत विरोध भूलकर गमन करते हैं, विचरण करते हैं।।2।।

जिनका यश सारे आकाश में, जगत में फैल रहा है। उस यश-गगन अर्थात् यश के विस्तार का पार पाने में मुनि रूपी पक्षी भी सक्षम नहीं हैं। दौलतराम जी कहते हैं कि इस भवरूपी रेगिस्तान की राह में वे कल्पवृक्ष के समान हैं।।3।।

(अरि= मोहनीय कर्म, रज= ज्ञानावरण, दर्शनावरण कर्म, रहस= अन्तराय कर्म, नग= वृक्ष, क्षम= समर्थ, भव मरूथल= भवरूपी रेगिस्तान)

संस्कार प्रवाह क्या आप भी भीड़वादी बने

सम्पूर्ण जीव जगत में पारस्परिक प्रेम करूणा समानता की भावना को साकार रूप देना ही मानवता है। शोषण के विरूद्ध आवाज उठाना मानवता का आधार है। दुःखी, तिरस्कृत, अत्याचार से प्रताड़ित मनुष्यों को शरण देना भारत माटी की खास तासीर है। जब रावण ने अपने भाई विभीषण को तिरस्कृत किया, अपमानित किया, उपहास का पात्र बनाया और देश से निकाला दे दिया तब भगवान राम ने अपने शत्रु के भाई विभीषण को शरण दी और विभीषण की रक्षा के लिये संकल्पित हुये। और भाई लक्ष्मण को भी समझाया कि शरण में आये निरीह निर्दोष की रक्षा करना ही वीरों का सच्चा धर्म है।

पाकिस्तान में विभाजन के बाद अल्प संख्यकों की संख्या 30% से अधिक थी आज संख्या 2% से भी कम रह गई है तो हमें सोचना पड़ेगा कि पाकिस्तान के अल्पसंख्यक कहाँ गये या तो उन्हें मार दिया गया होगा या फिर उन्हें पाकिस्तान छोड़ने के मजबूर किया गया होगा या फिर उन पर अत्याचार करके डरा धमकाकर उनका धर्म परिवर्तन करा दिया गया होगा या स्त्रियों लड़कियों के जबरन अपहरण किया गया होगा। यही स्थिति बांग्लादेश अफगानिस्तान की है। इन देशों के हिन्दू सिक्ख जैन ईसाई अपनी जान अस्मिता बचाकर धन दौलत मकान कारोबार सब कुछ वहीं छोड़कर भारत आये। उनके लिये भारत ने शरण दी वे भारत में वर्षों से शरणार्थी बनकर रह रहे थे उनको सम्मान की जिन्दगी जीने का अधिकार देने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं गृहमंत्री अमित शाह ने लोकसभा एवं राज्यसभा में नागरिक संशोधन विधेयक पारित कराया जिसमें गैर मुस्लिम लोगों को नागरिकता देने का प्रावधान दिया गया है। इस संशोधन विधेयक मैं किसी भी मुस्लिम की नागरिकता छिनने की कोई संभावना नहीं है जो पाकिस्तान और बांग्लादेश से आये घुसपैठिया या आतंकी भारत की नागरिकता चाह रहे है उनके गलत तरीकों को रोकने का प्रयास अवश्य किया गया है। क्योंकि वे धर्म के नाम पर देश का विभाजन कराके अपने आनुपातिक हिस्से की जमीन पहले ही ले चुके हैं। उनका फिर से भारत भूमि पर हक नहीं बनता।

मानवीय सम्मान सुरक्षा की भावना से प्रेरित नागरिकता संशोधन विधेयक का विरोध उन लोगों के द्वारा हो रहा जिन्होंने अपनी सत्ता बापिसी के भविष्य को खतरे में देखा है उन्होंने अफवाहों का बाजार गर्म किया। लोगों को हिंसा के लिये उत्प्रेरित किया तथा अराजकता का रास्ता भोली भाली जनता को बनाया। भीड़वादी लोग हिंसा अराजकता के शिकार पर चल पड़े। गरीब असहाय वृद्ध बीमार महिला पुरुष भीड़ के शिकार बने आगजनी, तोड़फोड़ हिंसा से क्या समाधान निकल सकता है। इसे नहीं सोच गया परिणाम राष्ट्र के विकास को रोकना ही

हुआ शांति भंग हुई इन नकारात्मक सोच पर चिन्तन नहीं किया गया।

सत्ता पर नजर गढ़ाये राजनेता सदैव ऐसे मुद्दों की तलाश में रहते हैं जिनके आधार पर वे अफवाह फैलाकर जनता को राष्ट्रहित के रास्ते से भटककर, जाति पंथ, व्यक्तिगत हितों से जोड़ते रहे जिससे उत्तेजना फैलाने का काम किया जा सके। नागरिक संशोधन विधेयक के विरोध में राजनेताओं ने बड़ी वेशर्मी से अपनी रोटी सेंकने का प्रयास किया है। विधेयक की दिशा ही बदलने का प्रयास किया है। खैर दुनिया में देर तो है पर अंधेर नहीं। भीड़ ऐसे लोग भी होते हैं जो पहले उत्तेजित हो जाते हैं फिर बाद में अपने किये पर जरूर पछताते हैं। मुझे ऐसा लगता है जिन्हें नागरिक संशोधन विधेयक तथ्य पूर्ण जानकारी नहीं थी वे भीड़ में शामिल हो गये पर जब इस विधेयक की राष्ट्रहित की अपूर्व भावना की जानेंगे समझेंगे तब जरूर उनकों अपने किये पर पछतावा अवश्य होगा। उन्हें गुस्सा आयेगी उन राजनेताओं पर जिनके कहने से वे भीड़वादी बन गये। और वे सोच सोचकर रह जायेंगे कि हमने एक मानवता का सच्चा साथी समर्थक विधेयक का विरोध करके अपने ही भाई बहिनों के हित के साथ खिलवाड़ की है। हर बटोही को बाट चलने के पहले बाट की पहचान अवश्य करना चाहिये।

कविता

हाथ में क्या

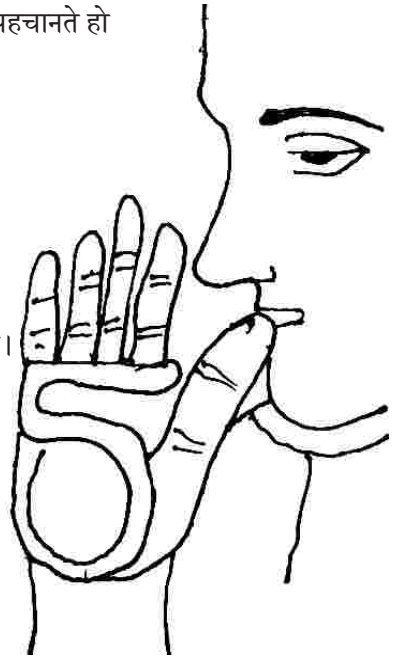

क्या तुम हाथ को दिखाते हो और हाथ को ही नही पहचानते हो
हाथ में शक्ति होती है रेखाओं में नही
रेखायें बदल जाती हैं पर हाथ नहीं बदलता
जिसके ऊपर होता गुरु का हाथ
उसे नहीं चाहिये ज्योतिष का साथ
सारे ग्रह भी उल्टे हो जाते हैं गुरु के साथ हो जाने से
गुरु की कृपा दृष्टि से सारे काम भी बन जाते हैं
ज्योतिष तो मौसम विज्ञान जैसा है जब होती है
भारी वर्षा की घोषणा तो आदमी बूंद-बूंद को तरसता है।
कोई व्यंग में कहता है आज छाता मत ले जा
आज वर्षा नही होनी है जब होती है
सूखे की घोषणा तो बाढ़ आ जाती है
तो मौसम विज्ञान की बात झूठी निकल जाती है
ज्योतिषी भी तो सभी सफल नहीं हो पाते हैं
इसलिये करो तुम विश्वास गुरु पर भगवान पर
अपने आप पर बस सफल होते चले जाओगें

आचार्य श्री सुनील सागर की प्राकृत कृतियाँ

❊ डॉ. आशीष जैन, शाहगढ़ ❊

भावणसारो (भावनासार)- प्राकृत भाषा में 72 पद्यों में आचार्य श्री भावणासारो नामक ग्रन्थ की रचना की हैं। इस कृति में अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचित्व, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक बोधिदुर्लभ और धर्म इन बारह भावनाओं का संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित विवेचन किया है। प्राचीन ग्रन्थों की तरह भावणासारो में मंगलाचरण में सिद्धों की वंदना के साथ ही ग्रन्थ रचना करने की प्रतिज्ञा की है।

ग्रन्थ के कर्ता आचार्य श्री सुनीलसागर जी कहते हैं कि अल्पश्रुति सहित किंतु जो मुनि का मुख्य लक्षण है ध्यान अध्ययन युक्त मेरे द्वारा यह श्रेष्ठ भावनासारो ग्रन्थ रचा गया है। इसमें बारह भावनाओं का संक्षिपत वर्णन हैं। यह बारह भावनायें संवेग व वैराग्य की जननी हैं। कार्तिकेयानुप्रेक्षा में इन्हें **भविय जणाणंद जणणीओ** कहा हैं। निश्चित ही भव्यजनों को यह ग्रन्थ कल्याणकारी होगा ज्ञानीजन इसका संशोधन तथा संवर्धन करें।

आचार्य श्री लिखते हैं कि कृति के संयोजन में मूलतः आत्मकल्याण की भावना रही है। पश्चात् परहित और प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि भी रही है। तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज के शिष्य आचार्य श्री सुन्दरसागर जी ने इसकी सन्मति बोधनी नामक लघु व्याख्या लिखी है। यह लघुग्रन्थ सर्वप्रथम सन् 2004 में भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली के द्वारा प्रकाशित हुआ। और इस कृति का सम्पादन प्राकृत भाषा के महान विद्वान् राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त-कर्त्ता प्रो. उदयचन्द्र जी उदयपुर ने किया है। आज तक इस ग्रन्थ के 5 संस्करण प्रकाशित किये जा चुके है। इसका दूसरा संस्करण जैन संस्कृति शोध संस्थान इन्दौर से प्रकाशित किया गया है।

आचार्य श्री कृत भावणासारो शौरसेनी प्राकृत भाषा की अध्यात्म प्रधान एक महत्वपूर्ण कृति है। इसमें अनित्यादि बारह भावनाओं (अनुप्रेक्षाओं) का बहुत ही उत्कृष्टा के साथ विवेचन किया है। इस ग्रन्थ पर अब तक कोई संस्कृत टीका नहीं थी। जिसकी पूर्ति पं. धनपाल जी हवले ने प्रौढ़ संस्कृत भाषा में उत्कृष्ट टीका लिखी है।

णीदी संगहो (नीति-संग्रह)- नीति संग्रह प्राकृत भाषा में प्रणीत इस ग्रन्थ में कुल 161 गाथायें हैं, जिसकी विषय वस्तु को दो भागों में विभाजित किया गया है। **धम्म णीदी** (धर्म नीति) जिसमें 60 गाथायें हैं तथा **लोग णीदी** (लोक नीति) जिसमें 101 गाथायें हैं। प्राचीन ग्रन्थों की तरह णीदी संगहो के मंगलाचरण में जिनधर्म, सर्वज्ञ, साधु तथा उनकी वाणी के अनुसार रचे गये समस्त शास्त्रों को मन वचन काय रूप तीनों योगों से नमस्कार किया गया हैं। इसके साथ ही ग्रन्थ का उद्देश्य एवं ग्रन्थ रचना करने की प्रतिज्ञा की गई है।

धम्म णीदी में जिनस्तुति की महिमा, जिनपूजा की महिमा, जिन सेवा का फल, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह रूप पाँच व्रतों की महिमा, जिन धर्म सेवा के फल, धर्मात्मा का लक्षण, धर्म की महिमा, कल्याणकारी धर्म, जिन धर्म की विशेषता, धर्म से

सुख, जहाँ धर्म वहाँ जय, सम्यग्दर्शन का लक्षण, सम्यक्त्व की महिमा, सम्यक्त्व के प्रभाव, ज्ञान का लक्षण, ज्ञान की महिमा, ज्ञान की उपयोगिता, ज्ञान आचरण सहित हो, चारित्र की महिमा, चारित्र बिना ज्ञान की निष्फलता, तप से आत्मशुद्धि, तप की दुर्लभता, आत्मसिद्धि के लिये ध्यान जरूरी, अदाता की दशा आदि विषयों का वर्णन किया गया है। इस कृति की भाषा शौरसेनी प्राकृत है। इसमें अनुष्टुप छंद का प्रयोग किया गया है। कृति के अन्तिम कबरपृष्ठ पर भारदी त्थुदी (भारती-स्तुति) प्राकृत भाषा में लिखी हुई है।

शतक काव्य की परम्परा में आचार्य समन्तभद्रस्वामी का जिनस्तुति शतक संस्कृत का प्रमुख शतक काव्य है। प्राकृत भाषा में मुक्तक काव्य के रूप में **वज्जालग्गं** और **गाथसप्तसई** प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त अन्य भी नई रीति प्रधान रचनायें प्राकृत समृद्धि की गाथा गा रहीं हैं। मेरे अध्ययन के अनुसार प्राकृत के मुक्तक काव्य **वज्जालग्गं** और **गाथसप्तसई** के बाद **णीदी-संगहो** मुक्तक काव्य के रूप में इस शताब्दी में देखने को मिला है। कृति का सम्पादन राष्ट्रपति पुरुस्कार से पुरूस्कृत प्रो. उदयचन्द्र जैन उदयपुर ने किया है। इस कृति का सर्वप्रथम प्रकाशन दिसम्बर 2003 में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम अशोकनगर, उदयपुर से किया गया था। द्वितीय संस्करण सोलापुर, तृतीय नातेपोते, चतुर्थ संस्करण इन्दौर से अभी तक इस कृति के पाँच संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

इस कृति की प्रमुख विशेषता यह है कि इस कृति को जगतगुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की शास्त्री परीक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

प्राकृत बोध- प्राकृत में प्रवेशकर्ताओं को लक्ष्य कर आचार्य श्री ने **प्राकृत बोध** नाम से इस प्राकृत व्याकरण की रचना की है। भाषा शैली, विषय की क्रमबद्धता तथा प्रतिपादन शैली की अपूर्व संबद्धता के कारण प्राकृत प्रवेशार्थियों के लिये यह प्राकृत-बोध कृति अत्यंत उपयोगी है। आचार्य श्री ने विद्वज्जनों के निवेदन पर इसे विद्यार्थी-संस्करण का रूप दिया है।

आचार्य सुनीलसागर जैसे युवा प्राकृतिक चिंतनकर बालोचित प्राकृत की जो रचना की है वह प्राकृत से अनभिज्ञ जनों के लिये अत्यंत उपयोगी है। यह सरल एवं सभी प्रकार के व्याकरणात्मक मूल्यों के लिये बहुत उपयोगी है। इसमें निम्न विषय हैं- वर्ण विचार, स्वर परिवर्तन सरल व्यंजन परिवर्तन, कठिन व्यंजन परिवर्तन, व्यंजन आगम, स्वर आगम, वर्ण विपर्यय, संधिप्रकरण, कारक प्रकरण, क्रिया प्रकरण, कृदन्त प्रकरण, तद्धित प्रकरण, समास प्रकरण, अव्यय प्रकरण, लिंग-विचार, विशेषण-विचार, पर्यायवाची शब्द, प्राकृत शब्दों के पर्यायवाची रूप, विविध प्राकृतों की विशेषतायें, वाक्य रचना, लघु निबन्ध आदि उपयोगी पक्ष समाहित हैं।

यह प्राकृत-बोध प्राकृत-नियम की विशेष पद्धति को लिये हुये है। इसमें आचार्य श्री ने प्रायः शौरसेनी के प्रयोग दिये हैं। अर्धमागधी के कुछ एक परिवर्तन यथास्थान निर्दिष्ट हैं। इसके प्रत्येक अध्याय के पश्चात् प्रश्न दिये गये हैं। जो बालकों की रूचि के अनुकूल हैं और उसी पाठ से सम्बंधित हैं।

इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ में परीक्षा हेतु प्रश्न-पत्र दिया गया है। इस कृति को सन् 2010 में बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान श्री धवलतीर्थम श्रवणबेलगोला में पाठ्यक्रम के रूप में चयनित करके रख लिया गया था। यह कृति संस्थानों, पीठों आदि के लिये कम मूल्य में पूर्ण सामग्री देने वाली है। इसे संस्कृत छात्रों को भी उपयोगी कहा जा सकता है क्योंकि जैन दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्ति-पूजक, स्थानकवसी आदि के श्रावक-श्राविकाओं साधु-संतों, आर्यिकाओं को पढ़ाकर प्राकत के ग्रन्थों में रूचि उत्पन्न की जा सकती है। इस कृति का सम्पादन प्राकृत भाषा के महान् विद्वान प्रो. प्रेमसुमन जी जैन एवं डॉ. महेन्द्र जैन मनुज ने किया हैं। अभी तक इस कृति के 6 संस्करण प्रकाशित हो चुके है। इस का प्रकाशन जैन संस्कृति शोध संस्थान इन्दौर से किया गया है।

भद्दबाहु-चरिय (भद्रबाहु-चरित्र)- यह प्राकृत भाषा में लिखित लघुकायिक ग्रन्थ हैं, इसमें आचार्य श्री ने गद्य का प्रयोग किया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में आचार्य श्री लिखते है कि सोलापुर चातुर्मास 2008 के बाद गोम्मटेश्वर बाहुबली स्वामी के दर्शन की इच्छा हुई थी। और मैं पद विहार करता हुआ श्रवणबेलगोला पहुँचा वही 9 फरवरी से 13 अप्रैल 2009 तक मंगलमय प्रवास रहा। इस बीच एक दिन निवेदन करते हुये भट्टारक श्री चारूकीर्ति स्वामी जी बोले प्राकृताचार्य जी हमने प्राकृत पद्य में तो आपका बहुत साहित्य पढ़ा है। मौन के दिनों में थुदि संगहो का अनेक बार पाठ भी किया है, अब मेरी भावना है कि आपके द्वारा रचित कुछ प्राकृत गद्य भी पढ़ने को मिले और आचार्य श्री ने अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहुत स्वामी के जीवन चरित्र को संक्षिप्त रूप में लिखने का मानस बनाया। और तीन दिन में ही भद्दबाहु चरियं का लेखन पूर्ण हो गया। यह देखकर भट्टारक जी बहुत प्रसन्न हुये।

इस कृति के मंगलाचरण में आचार्य श्री ने ऋषभादि चौबीस तीर्थंकरों के लिये और गोम्मटेश्वर जिननाथ के लिये नमस्कार करके, भद्दबाहु चरियं लिखने की प्रतिज्ञा की है। इस ग्रन्थ में भद्रबाहुत के जन्म स्थान, माता-पिता का नाम, जन्म समय, जन्म नाम, बचपन, विलक्षणता, शिक्षा आदि का वर्णन बहुत सुन्दर रूप में किया हैं। प्राचीन ग्रन्थों की तरह भद्रबाहु, चरियं के अन्त में मंगल प्रशस्ति विविध चार छन्दों में प्रस्तुत की गई है। प्रशस्ति पद्यबद्ध लिखी गई है। इसमें सर्वप्रथम परिपूर्ण श्रुत के ज्ञाता, संघ का क्षेम करने वाले मुनिनाथ भद्रबाहु-स्वामी एवं गुरु भक्ति में रत शिष्य श्री चन्द्रगुप्त मुनिराज को नमस्कार किया गया है। इसके बाद एक पद्य में रचना करने के स्थान का उल्लेख है।

इस कृति का प्रकाशन बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान श्रवणबेलगोला से किया गया है। कृति का सम्पादन प्राकृत भाशा के विश्रुत मनीषी एवं बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ, श्रवणबेलगोल के पूर्व निर्देशक प्रो. प्रेमसुमन जी जैन ने किया एवं हिन्दी अनुवाद युवा विद्वान डॉ. सुमत जैन जयपुर ने किया है। एवं कृति के मुख्य पृष्ठ पर आचार्य भद्रबाहु गुफा, श्रवणबेलगोला का चित्र दिया गया है।

सम्मदि-सदी (सन्मति-शती)- यह प्राकृत भाषा लिखित लघुकायिक ग्रन्थ है।

इसमें कुल 101 पद्य हैं । मुनिकुंजर आचार्य आदिसागर जी अंकलीकर परम्परा के तृतीयपट्टाधीश तपस्वी सम्राट् आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज के जीवन चरित्र को जानने के लिये यह एक अनुपम कृति है। सर्वप्रथम इस कृति के मंगलाचरण में आचार्य श्री ने प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के लिये नमस्कार किया है।

इस कृति के लेखन में आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज ने अनुष्टुप छंद का प्रयोग किया है। कृतिकार ने एक अनुष्टुप में आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज को विमल सुशोभित शुभ, आचार्य श्री आदिसागर के वंश में, आचार्य महावीकीर्ति जी के पद पर आचार्य सन्मतिसागर हुये ऐसा कहा हैं ।

आगे के पद्यों में आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज की क्षुल्लक दीक्षा, मुनि दीक्षा, दीक्षा गुरु, दीक्षास्थल, दीक्षा देने आदि का उल्लेख प्राप्त होता है। 17वीं गाथा से लेकर 101 वीं गाथा तक की सभी गाथाओं का अन्तिम चरण में वंदे सम्मदिसायरं कहकर आचार्य सन्मतिसागर जी को वंदन किया गया है।

ग्रन्थ के अन्तिम दो पद्यों में आचार्य श्री ने अपने गुरु आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज को वंदन किया है।

इस कृति का सम्पादन प्रो. उदयचन्द्र जी जैन उदयपुर एवं मेरे द्वारा (आशीष कुमार जैन बम्हौरी) के द्वारा किया गया हैं । इस का प्रकाश आचार्य आदिसागर अंकलीकर अंतराष्ट्रीय जागृति मंच मुंबई के द्वारा किया गया है।

भावालोयणा (भावालोयना)- यह प्राकृत भाषा में लिखित लघुकायिक ग्रन्थ हैं, प्रस्तुत ग्रंथ में 25 गाथा है। इसके दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। शौरसेनी भाषा में लिखी गयी कृति में भावों की आलोचना की है । इस में अपने दोषों की निंदा-गर्हा करते हुये साधक ने सामायिक व निर्ममत्व की प्रार्थना की है। सामायिक का साधारण अर्थ है आत्ममिलन, जीवन व मरण में, संयोग व वियोग में, अप्रिय व प्रिय में शत्रु व मित्र में, सुख व दुःख में समभाव को सामायिक कहते हैं। या ऐसा कहा जाय कि अच्छी तरह प्राप्त होना अर्थात् एकानत रूप से आत्मा में तल्लीन हो जाना समय है। मन, वचन, काय की क्रियाओं को अपने-अपने विषय से हटकर आत्मा के साथ तल्लीन होने से द्रव्य तथा अर्थ दोनों से आत्मा के साथ एक रूप हो जना ही समय का अभिप्राय है । समय को ही सामायिक कहते है । अथवा समय ही जिसका प्रयोजन है वह सामायिक है । इस कृति में आचार्य श्री द्वारा सामायिक में हमें किस प्रकार का चिंतवन करना चाहिये और सामायिक के समय हमारे किस प्रकार के भाव होना चाहिये इस पर प्रकाश डाला है।

प्राचीन ग्रन्थों की तरह भावालोयण में मंगलाचरण में जिनशासन कथित नव देवताओं को नमन किया गया है। इस कृति में प्रतिज्ञा वाक्य में कहा गया है कि हे भगवन! जैसे कोई अत्यंत चपल छोटा बालक माता के पास सभी दोष कह देता है, वैसे ही मैं भी मन में स्थित सत्य बात को आपके सामने विनय पूर्वक कहता हूँ।

ग्रन्थ के अन्त में अंतिम भावना में आचार्य श्री कहते हैं कि हे जिनेन्द्र ! आपके चरण कमल मेरे हृदय में तब तक स्थिर रहें तब तक कि मुझे बोधि, समाधि, परिणाम शुद्धि व निर्वाण लाभ अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति न हो जावे।

संयम स्वास्थ्य योग

शक्कर - SACCKARUM SUGAR से बचें स्वस्थ्य रहें

गुण धर्म- मधुर, रूचिकारक, अतिशीतल, अतिपुष्टिकर, इन्द्रियों की तृप्तिकर बलवीर्य वर्धक है। यह रक्त विकारदाह, मूर्च्छा, वमन, ज्वर आदि नाशक है।

गुड एवं शक्कर में अन्तर- शक्कर में सुक्रोज **SACCHARINE** अधिक प्रमाण में होने से शक्कर शरीर को उष्णता देती है । शरीर में पोषण की दृष्टि से यह लाभप्रद नहीं है । गुड़ एवं शक्कर में द्रव्यों का प्रमाण प्रकार से हैं।

गुड़	**शक्कर**
सुक्रोज 59.7%	99.4%
ग्लूकोज 21.28%	0.0%
खनिज द्रव्य 3.26%	0.02%
जल 8.86%	0.04%

गुड़ में प्राप्त खनिज द्रव्य

कैलशियम- 75% मिलीग्राम
फास्फोरस- 38% मिलीग्राम
लोह- 11% मिलीग्राम
ताम्र- 56% मिलीग्राम

उक्त खनिज द्रव्यों के कारण ही गुड का रंग कालापन लिये रहता है। गुड़ में जो शक्कर होती है। वह ग्लूकोज एवं फ्रेक्टोज जाति की होने से उसकी पाचन क्रिया सरलता पूर्वक होती है। गुड़ में बी-1, बी-2 विटामिन भी पाये जाते हैं। जो शक्कर में नहीं होते है। अतः गुड़ शक्कर की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है।

मिश्री- शक्कर को साफ कर भिन्न भिन्न प्रकार से पाक कर जमाकर मिश्री तैयार की जाती है। मिश्री शीतवीर्य लघु (पाचन में हल्की) वात पित्त नाशक है। यह शक्कर की अपेक्षा श्रेष्ठ है। दूध में मिश्री एवं घी मिलाकर पीने से सभी व्याधियों में लाभप्रद है। बल वीर्य वर्धक उत्तम रसायन है।

उरः क्षत सूखी खांसी, मुख पाक, एवं एसीडिटी में मुख में मिश्री रखकर चूसने से लाभ होता है।

कोकोनट शुगर- गुणकारी एवं शक्कर का सेहतमंद विकल्प है। यह शक्कर नारियल के पेड़ से प्राप्त की जाती है। नारियल के पेड़ में सतह एक फ्लूइड बहता रहता है। 1. अतः पेड़ में कट लगाकर इसे वर्तन में एकत्रित करते है। 2. पेड़ के डंठल को निकालकर गर्म कर उसका रस एकत्रित कर सुखा लेते हैं।

दोनों ही तरह से सुखाकर अंत में जो दानेदार कुछ मटमैला सा भूरे रंग का पदार्थ (खांडसारी शक्कर के समान) प्राप्त होता है। यही कोकोनट शुगर है।

लाभदायक तत्व-

1. कोकोनट शुगर में आयरन (लोह तत्व) जिंक पोटेशियम कैल्शियम आदि मिनरल्स (खनिज) पर्याप्त मात्रा में होते हैं।

2. कैलोरीज पर्याप्त मात्रा में रहती है।

3. फैटी एसिड्स एवं फेलोफेनॉल्स एवं एन्टी ऑक्सीडेन्टस होते है।

4. इससे प्राप्त इंसुलिन- ग्लूकोज को धीमी गति से शरीर में समाहित होने में मददगार है।

सामान्य शक्कर	कोकोनट शुगर
1. कैलोरी अधिक होने पर भी पोषक तत्व कम हैं।	1. पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में है। कोकोनट शुगर में आयरन, जिंक, पोटेशिम, कैल्शियम एवं मिनरल्स पर्याप्त मात्रा में होते हैं। कैलोरीज पर्याप्त मात्रा में होती है।
2. मेटावोल्जिम (चय अपचय क्रिया) पर खराब असर डालती है। इसमें मोटापा, कैंसर, मधुमेह, लीवर (यकृत) के आदि रंगों में हानिप्रद है।	2. यह चय अपचय की क्रिया में (मेटावोल्जिम) लाभप्रद है।
3. शक्कर के रक्त में मिलने से यह ग्लूकोज एवं फ्रक्टोज में विभाजित होकर जो व्यक्ति शारीरिक श्रम नहीं करते उनके लिये हानिप्रद है।	3. इससे प्राप्त इंसूलिन ग्लूकोज को धीमी गति से शरीर में समाहित होने देता है। इससे लाभप्रद है। अतः यह गुणकारी एवं शक्कर का सेहतमंद विकल्प है।

कविता

ममता की मूरत माँ

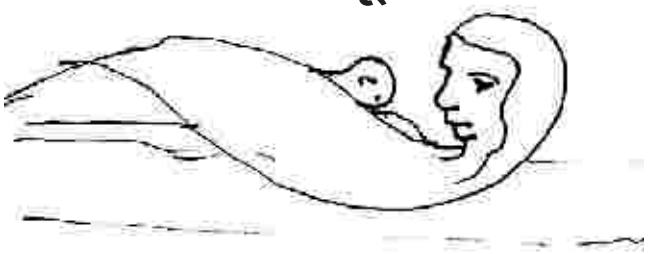

मेरी माँ दुख हरनी तू है, ममता की मूरत भी तू है
तेरी एक थपकी में ही बस, आँखों में निदिया आती बस
दूनिया में तू बस एक भरोसा तूने अमृत सदा परोसा
तेरे हाथों में क्या जादू और कहीं ना ऐसा जादू
माँ का आंचल स्वर्ग का आँगन माँ की गोदी रहती पावन
माँ की एक छूबन है ऐसी सुख अनुभूती बसती ऐसी
पल पल मेरा मन रम जाता माँ की गोद में सो जाता सब दूख से मुक्ति पा जाता है।

आर्यिका श्री 105 विशुद्धमति माताजी का अवदान

❊ श्रीमति सुषमा जैन, भिलाई ❊

हम किसी हरे भरे फलदार वृक्ष की शोभा निहारते हैं उसकी छाया का आनंद लेते हैं। तो मन में ये विचार आता है कि मिट्टी में छोटा सा पौधा रहा होगा, कुशल माली ने इसे खाद पानी और समय-समय पर बड़े परिश्रम से ये सुन्दर आकार दिया होगा। और वृक्ष ने भी जड़ो से रस लेकर अपना विकास किया होगा। ये सभी चिंतन परम विदुषी आर्यिका 105 श्री विशुद्धमति माता जी के व्यक्तित्व निर्माण में सही लगते हैं। माताजी गृहस्थ अवस्था में मेरी बुआ थीं, पहले हम सब उन्हें बाई कहा करते थे, उन्होंने अपने जीवन में जो ऊंचाईयां पाई। और अपनी (नारी) पर्याय में उत्कृष्ट पद को प्राप्त किया। ज्ञानार्जन तप, संयम, साधना का फल सल्लेखनापूर्वक मरण कर अपना जीवन सार्थक किया। उनके गृहस्थ जीवन को देखें तो लगता है, कि किसी सुविज्ञ ने सही कहा है।

शानदार था भूत भविष्यत भी महान है, गर संभाले आप उसे जो वर्तमान है।

माता जी अपने साथ पूर्व की पुण्य संपदा लाईं। अदभुत साहस और दृढ़ता के साथ सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा अपने वर्तमान के जीवन के साथ भावी जीवन भी अच्छा बना लिया। माता पिता से मिली संस्कारों की पूंजी के साथ पूज्य संत श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी के संपर्क से सदाचार और दया धर्म के संस्कार ही जीवन में सहायक हुये। थोड़ी सी स्कूली शिखा प्राप्त की, तभी पंद्रह वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया, कुछ समय बाद पिता का वियोग हो गया। विवाह के डेढ़ वर्ष बाद ही उन्हें वैधव्य का दुख सहन करना पड़ा उनके विधवा होते ही कुछ समय बाद उनके बड़े भाई जिन्हें परिस्थितियों से जूझने की हिम्मत विरासत में मिली थी, वे अपनी विधवा बहिन को अपने साथ घर ले आये। तब सुमित्रा बाई जी ने इसे अपने कर्मो का फल मानकर साहस से सहा और अपना सारा पुरुषार्थ वर्तमान को संवारने में लगा दिया। दिगम्बर जैन महिलाश्रम (सागर) में प्रवेश कर दो माह की पढ़ाई में प्रायमरी परीक्षा अच्छे नम्बरों से पास करी। मिडिल का तीन वर्षीय पाठ्यक्रम दो वर्ष में ही पूरा कर लिया। जबलपुर में नार्मल ट्रेनिंग करी। बम्बई में एक वर्ष का प्रशिक्षण लेकर आईं तब उनके भाई श्री नीरज जी उन्हें श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी का आशीर्वाद दिलाने ईसरी ले गये। वर्णी जी ने उन्हें सरकारी नौकरी करने को मना करा, और परिग्रह, परिमाण का संकल्प कराया और आदेश दिया कि जिस मातृ संस्था में तुमने शिक्षा प्राप्त की है उसी महिलाश्रम की सेवा तुम्हें करना है वह संस्था छोड़कर कही नहीं जाना। सुमित्रा जी ने 14 वर्ष तक अध्यापिका पद पर महिलाश्रम को अपनी सेवायें दीं। कई विधवा व असहाय बहनों को सहारा देकर उनका जीवन संवारा। स्वाध्याय का नियम होने से धर्म ग्रंथों का अध्ययन जारी रहा। सागर में श्री पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने कई वर्षों तक अत्यंत वात्सल्य भाव से धर्मग्रंथों का अभ्यास कराया। गर्मी या सर्दी पंडित जी प्रातः 4 बजे उन्हें पढ़ाने महिलाश्रम पहुँच जाते थे और बाई की भी ऐसी लगन थी कि अपना पाठ पूरा करके ही सोती थीं। महिलाश्रम का नियम था रात 10 बजे लाईट बंद हो जाती थी तो बाई भोजन में मिलने वाले घी का दीपक जलाकर अपना पाठ पूरा करती थीं। सुमित्रा जी का सेवाकाल के साथ व्यक्तित्व निर्माण का भी समय रहा। उन्होंने विद्याध्यन कर साहित्य रत्न विद्यालंकार आदि उपाधि प्राप्त की। ज्ञान के साथ-साथ जीवन में संयम की भावना अंकुरित होने लगी-धर्म अराधना और धर्म-प्रभावना के कार्य ही

सर्वोपरि हो गये। बिहार बंगाल और आसाम तक धर्मोपदेश के लिये यात्रायें करने लगीं। उन्ही के प्रयासों से महिलाश्रम में श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यालय की स्थापना हुई। इन सभी उपलब्धियों में सबसे ज्यादा सहायक हुआ पूज्य क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी का चरण सान्निध्य एवं आशीर्वारद। ईसरी प्रवास में वर्णी जी की समाधि के अंतिम पांच छह वर्षों तक प्रति वर्ष वर्णी जयंती पर हम सब परिजन एवं बाई जी ईसरी जाते थे। सन् 1961 में वर्णी जी के सल्लेखना समाधि के दृश्यों को देखकर सुमित्रा बाई जी के मन में वैराग्य के अंकुर पनपने लगे।

वैराग्य पथ की ओर- मणिकांचन संयोग मिला कि चारित्र चक्रवर्ती परमपूज्य आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के द्वितीय पट्टाचार्य परम तपस्वी आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के संघ के तपस्वी महामुनि धर्मसागर जी (जो बाद में आचार्य बने) का अगले ही वर्ष सागर में चातुर्मास हुआ। संघस्थ मुनि वैराग्य के साधक श्री सन्मति सागर के सद्उपदेशो ने सुमित्रा बाई के जीवन की दिशा ही बदल दी बहुत ही चिंतन मनन करके संयम ग्रहण करने का साहस जुटाया और विदुषी सुमित्रा बाई ने मुनि श्री धर्मसागर जी के चरणों में सातवीं प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। एवं उसी दिन गृह त्याग का भी संकल्प लिया। कुछ समय प्रतिमा पालन के बाद उन्हीं मुनिराज के चरणों में आर्यिका दीक्षा के लिये भी श्रीफल अर्पित कर दिया मुनिराज ने कहा हमारे साथ कोई आर्यिका माता जी नहीं हैं। अतः तुम्हें आचार्य श्री शिवसागर जी की शरण में जाकर प्रार्थना करना चाहिये। वहाँ संघ में चार माता जी हैं। पूज्य आचार्य श्री शिवसागर जी अपने संघ सहित बुंदेलखण्ड में ही विचार कर रहे थे। उनका चातुर्मास श्री क्षेत्र पपोरा जी में निश्चित हुआ। दीक्षा- विक्रम संवत 2021 की श्रावण शुक्ल सप्तमी 14 अगस्त 1964 को प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के द्वितीय पट्टाचार्य चारित्र शिरोमणि आचार्य शिवसागर जी ने अतिशय क्षेत्र पपौरा जी के प्रांगण में सुमित्रा जी को आर्यिका दीक्षा देकर अपने संघ में प्रवेश दिया ओर वे बन गई आर्यिका विशुद्धमति माताजी।

शिक्षा- माताजी की दीक्षा होते ही शास्त्राभ्यास प्रारंभ हो गया। पूज्य श्रुतसागर जी महाराज ने जैन सिद्धांत का अध्ययन कराया। पूज्य श्री अजित सागर जी महाराज ने इन्हें न्याय और व्याकरण शास्त्रों का अध्ययन कराया गणित का अभ्यास एवं षटखण्डागम सिद्धांत के स्वाध्याय में पं. रतनचंद जी मुख्तार सहयोगी बने, माता जी की लगन एवं परिश्रम से उन्होंने शीघ्र ही ज्ञानार्जन कर लिया। इसी बीच दीक्षा के प्रारंभिक काल में उनका उत्साह साह दृढ़ता बढ़ती गई, पर शरीर क्षीण एवं कमजोर होता जा रहा था, क्योंकि दीक्षा के बाद माताजी को लगातार अंतराय आते थे सो शरीर अशक्त होने लगा। आचार्य महाराज ने एक दिन इस उपद्रव की शांति के लिये माताजी को वृहद-शांतिमंत्र की एक माला रोज फेरने को कहा माताजी स्वयं बताती थी कि मेरे जीवन की यह प्रथम और अंतिम गुरु आज्ञा थी जिसे माताजी ने अत्यंत विनयपूर्वक दृढ़तापूर्वक आचार्य श्री से मना कर दिया। उनका उत्तर था क्यों यह पद लेकर रोटी के लिये अनुष्ठान करना उचित होगा स्वयं आचार्य महाराज ने उनकी इस दृढ़ता की सराहना की।

उद्बोधन- विशुद्धमति माताजी निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता थीं। आगम के अथाह सागर में गोते लगाकर उन्होंने जो मुक्ता माणिक चुने उन्हें सहज सरल भाषा में भक्तों को देकर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। वे हमेशा कहती थीं कि कुछ नियम लेकर जिनवाणी का पाठन एवं श्रमण करो तो मार्ग अवश्य मिलता है।

श्रुत सेवा- जैन आगम का अध्ययन करते-करते चिंतन मनन हर समय चलता रहा। आचार्य श्री शिवसागर जी के आदेश एवं मुनि श्री श्रुतसागर जी एवं अजितसागर जी के प्रेरणा से माताजी ने जिनवाणी लेखन को प्रारंभ किया। प्रारंभ में अनेक जनोपयोगी रचनायें करी। उनका लेखन दीक्षा के 4-5 वर्षों बाद प्रारंभ होकर अनवरत जारी रहा उनके समाधि साधना काल में भी 30 नवम्बर 2001 की रात्रि तक चलता रहा।

पूज्य 105 विशुद्धमति माता जी की श्रुत सेवा भाषा टीकायें

1. सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमीचन्द्राचार्य विरचित त्रिलोकसार टीका।
2. भट्टारक सकलकीर्ति विरचित सिद्धान्तसारदीपक टीका।
3. यतिवृषभाचार्य विरचित तिलोयपण्णत्तीः हिन्दी टीका (तीन खण्डों में)
4. क्षपणासार
5. अमितगति निसंगयोगिराज विरचित- योगसार प्राभृत (प्रश्नोत्तरी टीका)
6. मरणकण्डिका (प्रश्नोत्तरी टीका)

मौलिक रचनायें : 1. श्रुतनिकुंज के किंचित् प्रसून 2. गुरु गौरव 3. श्रावक सोपान और बारह भावना 4. आनंद की पद्धति अहिंसा 5. निर्माल्य ग्रहण पाप है 6. केवली विधान

प्रश्नोत्तर लेखन : 1 धर्मप्रवेशिका प्रश्नोत्तर माला 2. धर्मोद्योत प्रश्नोत्तर माला 3. छहढाला 4. इष्टोपदेश 5. स्वरूपसम्बोधनपंचविंशति

संकलन- सम्पादनः 1 वत्थुविज्जा (खण्ड 1- गृहशिल्प) 2. वत्थुविज्जा (खण्ड-2 मन्दिरशिल्प) 3. श्रमणचर्या 4. समाधिदीपक 5. दीपावली पूजनविधि 6. श्रावक सुमन संचय 7. स्तोत्र संग्रह 8. श्रावक सोपान 9. आर्यिका आर्यिका है 10. संस्कार ज्योति 11. पाक्षिक श्रावक प्रतिक्रमण सामायिक विधि 12. वृहद् सामायिक पाठ एवं व्रती श्रावक प्रतिक्रमण 13. आचार्य शान्तिसागर जी महाराज का संक्षिप्त जीवनवृत्त 14. रात्रिक/दैवसिक प्रतिक्रमण (अन्वयार्थसहित) 15. पाक्षिकादि प्रतिक्रमण (अन्वयार्थसहित) 16. वास्तुविज्ञान परिचय, 17. नित्यनियमपूजा 18. शन्तिधर्मप्रदीप 19. नारी बनो सदाचारी 20. महावीरकीर्ति स्मृति ग्रन्थ : एक अनुशीलन 21. ऐसे थे चारित्र चक्रवर्ती 22. चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर चरित्र।

समाधि भावना- स्वस्थ शारीरिक अवस्था में ही पूज्य माताजी ने 16 जनवरी 1990 को पूज्य आचार्य अजित सागर जी महाराज के समक्ष बारह वर्ष की उत्कृष्ट संलेखना के संकल्प की भावना व्यक्त करी और उनसे संलेखना व्रत की याचना करी। आचार्य महाराज ने उन्हें आशीर्वाद देकर यह संलेखना का नियम दिया। कुछ समय बाद ही आचार्य महाराज की समाधि हो गई, तो पंचम पट्टाचार्य श्री वर्धमान सागर जी माताजी की समाधि हेतु निर्यापकाचार्य बने। व्रत को लेते ही माताजी ने अपने शरीर को कृश करना प्रारंभ कर दिया आहार में कमी एवं उपवास अधिक होने लगे। 1998 वे का चातुर्मास प्रारंभ होते ही एक दिन आहार एक दिन उपवास प्रारंभ हो गया। उनका शरीर क्षीण हो रहा था, पर आत्मबल निरंतर बढ़ रहा था। 2000 के चातुर्मास में वे दो दिन के अंतर से आहार लेने लगी। आषाढ़ शुक्ला सप्तमी 27.06.2001 को भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस और अपने दीक्षा दिवस के अवसर पर माताजी ने पूज्य आचार्य वर्धमान सागर जी

के समस्त संघ के समक्ष क्षमा याचना की और सभी प्रकार के अनाज का जीवन पर्यंत के लिये त्याग कर दिया। दो दिन के अंतर में लेने वाले आहार में दूध छाछ केला और फल ही रहे। तीन महिने के भीतर क्रमशः केला दूध फिर छाछ का भी त्याग कर दिया। 9 दिसम्बर 2001 को माताजी ने पूज्य आचार्य वर्धमान सागर जी एवं संघ की उपस्थिति में आचार्य जी से अनुमति और आशीर्वाद लेकर शैया गृहण का अनुष्ठान किया। अब आहार में मुसम्बी का रस एवं जल मात्र लेने लगी। 3 जनवरी 2001 को त्याग करके 2-3 दिन के अंतर से मात्र जल की प्रक्रिया अपनाई। 16 जनवरी 2002 को बारह वर्षीय सल्लेखना की अवधि पूर्ण होने पर माता जी ने जल लेने का भी त्याग कर दिया। जल त्याग के छः दिन की साधना के बाद 22 जनवरी 2002 को प्रातः साढ़े चार बजे ब्रम्हमुहुर्त में आचार्य महाराज और गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमति माताजी से पंचनमस्कार सुनते हुये अंतिम सांस ली। संयमी जीवन का शानदार समापन हुआ।

माताजी ऐसी भाग्यवान साधिक थी जिन्हें अपने व्रती जीवन में पूज्य आचार्य शिवसागर जी, आचार्य धर्मसागर जी, आचार्य पूज्य अजितसागर जी, परमपूज्य वर्धमानसागर जी एवं आचार्य कल्प श्रुतसागर जी का मार्गदर्शन मिला। निर्यापकाचार्य श्री वर्धमानसागर जी के संघस्थ मुनिराजों एवं आर्यिका माताओं ने माताजी की समाधि साधना के अंतिम वर्ष में अपने संबोधन, सेवा, वैयावृत्ती, द्वारा सहयोग किया। इनमें पूज्य मुनि श्री पुण्यसागर जी पूज्य चिन्मय सागर जी, पूज्य अर्पितसागर जी एवं आर्यिका शीतलमति माताजी, दयामति माता जी, एवं वर्धितमति माताजी ने अथक परिश्रम किया और पूज्य प्रशांतमति माता तो छाया की भांति माताजी के साथ रहती थी। गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमति माता जी बाईस दिनों तक माता जी को अत्यंत वात्सल्यपूर्वक संबोधन देकर दृढ़ता प्रदान करती रहीं। सुपार्श्वमति माताजी की संघस्थ ब्रम्हचारिणी डॉ. प्रमिला जी (गौरवमति माताजी) ने भी माताजी की बहुत सेवा की। माताजी की भावना किसी सिद्धक्षेत्र पर समाधि करने की थी। पर अनुकूलता नही बन सकी। माताजी के पुत्रवत भक्त प्रतिष्ठाचार्य पं. हंसमुख जी ने 1997 में धरियावद से तीन किलोमीटर दूर एक निर्जन भूमि पर कुछ आवश्यक सुविधाओं का निर्माण कराया और नाम रखा नंदन वन। जिसे बाद में श्री क्षेत्र सिद्धांत तीर्थ संस्थान नंदनवन नाम दिया गया। माताजी के 1999, 2000 और 2001 का चातुर्मास यहीं सम्पन्न हुये। श्री हंसमुख जी निरंतर माताजी सेवा में समर्पित रहे। संघ की माताजी ने भक्तों की सब व्यवस्था कर रहे थे, और माताजी की समाधि नंदन वन में हुई। जहाँ श्री पं. हंसमुख जी ने समाधि स्थल को एक स्मारक का रूप दिया है।

मैं अपने आपकों बहुत सौभाग्यशाली मानती हूँ कि पूज्य माताजी का चरण सान्निध्य मुझे मेरे बचपन से उनके समाधि तक बराबर प्राप्त हुआ। उन्होंने जिनवाणी का अध्ययन कराया। अपने जीवन के हरक्षण का उपयोगा करना वे जानती थीं। अपने समाधि काल में उन्होंने एक भजन लिखा था (घड़ी) इसी भजन की अंतिम पंक्तियों से मैं अपनी लेखनी को विराम देती हूँ।

हे भव्य ! आयु अवसान समय, यह घड़ी घड़ी दिखलाती है।
तुम चेतों ! जागो ! उठो ! शीघ्र यह घड़ी खिसकने वाली है।।
जो घड़ी गई, जो निकल रही, वह कभी न वापस आयेगी।
मति कर विशुद्ध तो शेष घड़ी, अनमोल घड़ी बन जायेगी।।

पुरातत्व सम्पदा से परिपूर्ण जैन तीर्थ देवगढ़

❊ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ❊

उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिले के जिला मुख्यालय से 33 किलोमीटर की दूरी पर बेतवा के तट पर विन्ध्याचल की दक्षिण-पश्चिम पर्वत श्रृँखला पर देवगढ़ यहां का लोकप्रिय और ऐतिहासिक नगर है।

इसका प्राचीन नाम लुअच्छागिरि है। 1974 तक यह नगर झांसी जिले के अन्तर्गत आता था। यह नगर झांसी से लगभग 123 किलोमीटर है।

गुप्त, गुर्जर, प्रतिहार, गौंड, मुस्लिम शासकों और अंग्रेजों के काल में भी इस स्थान का उल्लेखन मिलता है। 8वीं से 17वीं शताब्दी तक यह स्थान जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था।

पहले प्रतिहारों और बाद में चंदेलों ने इस पर शासन किया। देवगढ़ में ही बेतवा के किनारे यहाँ 41 में से बचे 31 जैन मंदिर भी दर्शनीय हैं। यहाँ 19 मान स्तम्भ और दीवालों पर उत्कीर्ण 200 अभिलेख सहित कुल 500 अभिलेख प्राप्त हुये हैं। जैन मंदिरों के ध्वंसावशेष यहाँ बहुतायात में विद्यमान हैं। गुप्तकालीन दशावतार मंदिर भी दर्शनीय हैं। यहाँ प्रतिहार, कल्चुरि और चंदेलों के शासनकाल की प्रतिमायें और अभिलेख बिखरे पड़े हैं। पुरातत्व की दृष्टि से देवगढ़ जग प्रसिद्ध है। बिखरी हुई मूर्तियों को संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है। देवगढ़ पुरातत्वविदों का एक महत्वपूर्ण कला केंद्र है। पुरातत्व सम्पदा से सम्पन्न है देवगढ। इसे बेतवा नदी का आईसलैण्ड कहा जाता है।

दशावतार मंदिर- भगवान विष्णु को समर्पित इस मंदिर को प्रारंभ में पंचयत्न मंदिर के नाम से जाना जाता था। गुप्तकाल में बना यह मंदिर प्राचीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना है। गंगा और यमुना केआकर्षक चित्र मंदिर के प्रवेश द्वारा पर उकेर गये हैं । यह प्रवेश द्वार मंदिर के गर्भगृह तक जाता है। मंदिर की दीवारों के साथ बने गजेन्द्रमोक्ष, नर नारायण तपस्या और अनंतशायी विष्णु पैनल विष्णु पुराण के दृश्यों को दर्शाते हैं। मंदिर के निचले हिस्से में बनी मीनारें खासी आकर्षक हैं।

देवगढ़ किला- चन्देरी से 25 किलोमीटर दूर दक्षिण पूर्व में देवगढ़ किला स्थित है। किले के भीतर 9वीं और 10वीं शताब्दी में बने जैन मंदिरों का समूह है जिसमें प्राचीन काल की कुछ मूर्तियां देखी जा सकती हैं । किले के निकट ही 5वीं शताब्दी का विष्णु दशावतार मंदिर बना हुआ है, जो अपनी सुंदर मूर्तियों और नक्कासीदार स्तंभों के लिये जाना जाता है।

जैन मंदिर- देवगढ़ के 31 मंदिर लोगों को काफी आकर्षित करते हैं। विष्णु मंदिर के बाद बना यह मंदिर कनाली के किले के भीतर बने हुये हैं। यह किला एक पहाड़ी पर स्थित है, जहां से बेतवा नदी का सुंदर नजारा देखा जा सकता है। छठी से सत्रहवीं शताब्दी तक यह स्थान जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था। मंदिर में जैन धर्म से संबधित अनेक चित्र बने हुये हैं। बुंदेलखण्ड क्षेत्र में सात भोंयरे (भूमिगत स्थान) बहुत प्रसिद्ध हैं। जो पावा, देवगढ़, सेरोंन, करगुवां, बंधा, पपौरा, और थूवोन में स्थित हैं। कहा जाता है, यह सात 7 भोंयरे दो भाईयों अर्थात देवपत और खेवपत द्वारार निर्माण किये गये हैं।

देवगढ़ में सब मिलाकर 300 के लगभग अभिलेख मिले हैं, जो 8वीं शती से लेकर 18वीं शती तक के हैं। इनमें ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी द्वारा अंकित अठारह लिपियों का अभिलेख तो अद्वितीय ही है। चंदेल नरेशों के अभिलेख भी महत्वपूर्ण हैं। देवगढ़ बेतवा नदी के तट पर स्थित है। तट के निकट पहाड़ी पर 24 मंदिरों के अवशेष हैं , जो 7वीं शती ई. से 12 वीं शती ई. तक बने थे।

देवगढ़ का शायद सर्वोत्कृष्ट स्मारक दशावतार का विष्णु मंदिर है, जो अपनी रमणीय कला के लिये भारत भर के उच्च कोटि के मंदिरों में गिना जाता है। इसका समय छठी शती ई. माना जाता है, जब गुप्त वास्तु कला अपने पूर्ण विकास पर थी। मंदिर का समय भग्नप्राय अवस्था में है, किन्तु यह निश्चित है कि प्रारम्भ में इसमें अन्य गुप्त कालीन देवालयों की भांति ही गर्भगृह के चतुर्दिक पटा हुआ प्रदक्षिणा पथ रहा होगा। इस मंदिर के एक के बजाय चार प्रवेश द्वार थे और उन सबके सामने छोटे-छोटे मंडप तथा सीढियां थी। चारों कोनों में चार छोटे मंदिर थे। इनके शिखर आमलकों से अंलकृत थे, क्योंकि खंडहरों से अनेक आमलक प्राप्त हुये हैं। प्रत्येक सीढ़ियों की पंक्ति के पास एक गोखा था। मुख्य मंदिर के चतुर्दिक कई छोटे मंदिर थे, जिनकी कुर्सियाँ मुख्य मंदिर की कुर्सी से नीची हैं। ये मुख्य मंदिर के बाद में बने थे। इनमें से एक पर पुष्पावलियों तथा अधोशीर्ष स्तूप का अलंकरण अंकित है। यह अलंकरण देवगढ़ की पहाड़ी की चोटी पर स्थित मध्ययुगीन जैन मंदिरों में भी प्रचुरता से प्रयुक्त है।

पुरातात्विक संग्रहालय- देवगढ़ के आसपास के एकत्रित की गई अनेक मूर्तियों को इस संग्रहालय में रखा गया है। भारतीय इतिहास की विभिन्न कलाओं को यहां संरक्षित किया गया है। देवगढ़ और आसपास की खुदाई से प्राप्त की गई अनेक मूर्तियों को यहां देखा जा सकता है।

नीलकंठेश्वर- ललितपुर से 45 किलोमीटर दक्षिण में नीलकंठेश्वर स्थित है। यहां के घने जंगलों में चंदेल काल का एक शिव त्रिमूर्ति मंदिर है। यह मंदिर पाली मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इसके प्रवेश द्वार के निकट ही विशाल कैलाश पर परम शिव मूर्ति स्थापित है। मंदिर के निकट मैदान में एक मुखलिंग है। इस मुखलिंग की ऊंचाई 77 सेमी. है और इसका व्यास 1 फीट 30 सेमी. है।

रणछोड़जी- बेतवा तट पर तीसरा स्थान रणछोड़ जी है। यह स्थान धौर्रा से 4-5 किलोमीटर दूर है। पाली त्रिमूर्ति मंदिर के समान यहां भी एक मंदिर बना हुआ है, लेकिन यह मंदिर शिखरहीन है। यहां भगवान विष्णु और लक्ष्मी की सुंदर प्रतिमायें स्थापित हैं। हनुमान जी की भी एक विशाल मूर्ति यहां देखी जा सकती है। प्राचीन काल के कुछ मंदिरों के अवशेष भी यहां दर्शनीय हैं। जो हमारी समृद्धि का कहानी कहते हैं। कुछ समय पहले यहां घना जंगल था और अनेक जंगली जानवर यहां घूमते रहते थे।

वायु मार्ग- ग्वालियर देवगढ़ का नजदीकी एयरपोर्ट है, जो लगभग 235 किलोमीटर की दूर पर है। ग्वालियर से देवगढ़ के लिये टैक्सी या बसें की जा सकती है।

रेल मार्ग- जखलौन यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन है जो देवगढ़ से 13 किलोमीटर दूर है। झांसी-बबीना पैसेंजर ट्रैन से यहां आगमनी से पहुंचा जा सकता है। ललितपुर यहां का अन्य प्रमुख रेलवे स्टेशन है जो देवगढ़ से 23 किलोमीटर दूर है।

सड़क मार्ग- आस पास के शहरों से सड़क मार्ग के माध्यम से आसानी से देवगढ़ पहुंचा जा सकता है। झांसी, ओरछा, ललितपुर, माताटीला बांध, बरूआ सागर आदि स्थानों से नियमित बसें और टैक्सियों देवगढ़ के लिये चलती हैं।

देवगढ़ की मान्यता हैं की यहाँ शांति प्राप्त करने के लिये बहुत उपयुक्त स्थान हैं और ऐसी मान्यता हैं की यहाँ वास्तव में देवों का स्थान हैं। और अत्यंत रमणीय स्थल भी हैं।

मूकमाटी में प्रतिपादित वनस्पति पर्यावरण

❊ डॉ. मधु जैन (शिक्षिका), बाड़मेर ❊

आचार्य श्री ने वनस्पति पर्यावरण पर चिन्ता व्यक्त करते हुये कहा है कि-

पेड़ पौधे पर्वत-पाषाण पूरा निखिल पाताल तल तक
पिघलता, गलता हुआ दिखा अनल, अनिल हुआ कभी
अनिल सलित हुआ कभी और जल-थल हुआ झटपट
बदलता ढलता परस्पर में घुला मिला कलिल हुआ कभी।

जहाँ वनस्पति पेड़-पौधों आदि का चित्रण कवि के काव्यों में है वहीं पर कवि ने पेड़ पौधों के विनाश एवं हरी-हरी लताओं की छाँव आदि के मिटने पर गहरी चिन्ता व्यक्त की है। उन्होंने वन उपवनों के उजड़ते हुये स्वरूप पर चिन्ता व्यक्त की है।

आचार्य श्री ने डूबों मत लगाओं डुबकी नामक काव्य में पयोधरा और यशोधरा पृथ्वी पर व्यंग्य करते हुये कहा कि तेरी अंक में कितने ही बालक है जो अनाथ है कितनी ही वनस्पतियाँ पयोधर से पुष्ट होना चाहती है, फिर भी तू उन्हें अपने आँचल का दूध पिलाकर पुष्ट क्यों नहीं कर रही है।

आचार्य श्री फिर कहते है कि-

वर्षा हुई कृषक तो हल जोत लेगा , बोया असामयिक बीज नही फलेगा।।
तू देवनंदन अकाल अरे ! करेगा, होगा न मोक्ष तुझको भव में फिरेगा।।

होगा न मोक्ष तुझको भव में फिरेगा अकाल या वर्षा के अभाव में कृषक के द्वारा बोया गया बीज कभी पल्लवित नहीं हो सकता अकाल की यह स्थिति वनस्पति के अभाव में ही आती है।

इस प्रकार से आचार्य श्री ने वनस्पति की रक्षा का कदम-कदम पद संदेश दिया और अपनी लेखनी का विषय भी बनाया आचार्य श्री के विचार जीवन्त धारा से जुड़े हुये हैं। उनकी मौन दृष्टि से चेतना के प्रति लगाव है इसलिये वे चेतना के गहराव में अनुभूत विषय को अपने सहज भाव से प्रस्तुत करने में समर्थ हो सके हैं। आचार्य श्री ने मूकमाटी तथा चेतना के गहराव नामक काव्य में प्रकृति का चित्रण भी बड़े सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया है।

श्रमणचर्या और पर्यावरण संरक्षण - श्रमणों को जीवन जीने एवं व्यावहारिक मार्ग के अनुसरण करने आदि में भी सन्मार्ग है। आचार्य श्री ने जैनगीता मे कहा है कि ये मार्ग सदमार्ग या सन्मार्ग कहे जाते हैं। सन्मार्ग के दो भाग हैं । श्रमणमार्ग और श्रावकमार्ग। श्रावक सदैव दान, पूजा, गुरु, उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, पंचव्रत सात शीलव्रत, एवं सप्त व्यसन से दूर होते हैं श्रावकों के आचरण व्रतों के एक अंश पर आधारित होते हैं।

आचार्य श्री कहते हैं कि पाँचों महाव्रत महा मानवीय सत्ता को प्राणदान देने वाले हैं इसलिये आचार्य श्री ने श्रमणशतक में भावना व्यक्त की है कि हे श्रमण ! संसार में धन में सार नहीं वह असार है। स्थायी नहीं। इसलिये जो सार रूप समयसार है उसे स्वीकार करो अर्थात् समय को पहिचानो। समय पर ध्यान दो, तभी पर्यावरण का संतुलन बना रहेगा।

पंच समितियों में भाषा समिति को मूकमाटी महाकाव्य में कहा है कि -वज्राघात से आहत हो.... आह ध्वनि निकली जिसे सुनते ही, सौर्यमण्डल बहरा हो गया... रावण की भाँति

चीखना, मेघों का रोना ध्वनि प्रदूषण के वचाव की भावना। इस समिति में सत्य के अनुसरण पर जितना बल दिया गया है उससे कही अधिक ककेश, कटु शब्द आदि का कदापि प्रयोग नहीं हो और न ही ऐसे शब्द ध्वनित करें जिससे कि वातावरण प्रदूषित हो। आचार्य श्री ने इस समिति में ध्वनि पर नियंत्रण करने की बात कही है। (जैनगीता पृ. 80-81)

एषणा समिति के पालन में जैनगीता में आचार्य श्री कहते हैं कि आहार शुद्धि से प्राणियों की रक्षा होती है जिससे पर्यावरण का संतुलन बना रहता है। पंचेन्द्रिय विजय की चर्चा जैनगीता में करते हुये आचार्य श्री कहते हैं कि जो इन पांच इन्द्रिय विषयों को बाह्य मानता है वह सदैव एकेन्द्रिय जीवों से लेकर पंचेन्द्रिय जीवों के संरक्षण पर विशेष बल देता है उनकी दृष्टि सभी जीवों के प्रति समान रहती है।

जैन गीता में प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान से पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने की चर्चा करते हुये आचार्य श्री कहते हैं कि प्रतिक्रमाण से सम्पूर्ण दोष, मल, कलुषता आदि का भाव नहीं होता है, इससे जीवन जगत को बचाया जाता है। प्रत्याख्यान के माध्यम से परित्याग किया जाता है। प्रत्याख्यान में नाम, स्थापना द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव आदि के आश्रय से भविष्यकाल के लिये अयोग्य द्रव्यों का अर्थात् ऐसे पदार्थों को छोड़ा जाता है जिनसे प्रदूषण की संभावना बनी रहती है। प्रत्याख्यान प्रदूषण के परित्याग का नाम है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि साधक की सभी क्रियायें प्राणियों को संरक्षण प्रदान करती हैं। भू-शयन, स्थिति भोजन, अदन्त धावन, एक भुवतव्रत आदि साधक की ऐसी क्रियायें है जिन्हें आधुनिक जगत में सामाजिक दृष्टि से मान्यता मिली हो या न मिली हो, परन्तु बदलते हुये परिवेश, वातावरण ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि श्रमणों की क्रियायें पर्यावरण के संरक्षण में अहं भूमिका निभाती हैं। जिसे आचार्य श्री ने जैनगीता, श्रमण शतक, आदि से सिद्ध किया है।

जैन गीता में श्रावक के मूलगुण, श्रावक के आवश्यक, श्रावक की प्रतिमा आदि से भी किस प्रकार पर्यावरण संरक्षण होता है उन सभी को स्पष्ट किया है।

सन्दर्भ

1. प्राकृत विद्या पर्यावरण एवं प्रदूषण- पृ. 1-2
2. मूकमाटी महाकाव्य- पृ. 5
3. वही महाकाव्य- पृ. 7
4. वही महाकाव्य- पृ. 32
5. चेतना के गहराव में पृ. 9
6. मूकमाटी महाकाव्य पृ. 81
7. वही महाकाव्य पृ. 85
8. सुनीति शतक पद्य- 61
9. वही -पृ. 64
10. मूकमाटी महाकाव्य-पृ. 225
11. मूकमाटी महाकाव्य-पृ. 232-233
12. नर्मदा का नरम कंकर- पृ. 48
13. मूकमाटी -पृ. 2-5
14. वही- पृ. 182
15. डूबो मत लगाओ डुबकी- पृ. 27
16. भावनाशतक पद्य- 84
17. जैन गीता- पृ. 60-67
18. श्रमणशतक पद्य- 37
19. मूकमाटी-पृ. 247
20. जैनगीता-पृ. 80-81
21. वही- पृ. 85
22. वही- पृ. 86
23. वही- पृ. 87

आचार्य प्रभाचंद और उनका परमाणुवाद

❊ ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर ❊

जैन न्याय विद्या की एक विशाल परम्परा है, जिसके प्रतिष्ठापकों में आचार्य समन्तभद्र और आचार्य अकलङ्कदेव का नाम अग्रगण्य है। इन्हीं श्रेष्ठ तार्किकों की परम्परा में आचार्य प्रभाचंद का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है।

ईसा की ग्यारवहीं शताब्दी के विद्वान आचार्य प्रभाचंद्र द्वारा रचित अनेक ग्रंथों का उल्लेख मिलता है, किन्तु **प्रमेयक महामार्तण्ड** और **न्याय कुमुदचंद** इन दोनों ग्रंथों के कारण ही इनकी विशेष ख्याति है। आचार्य प्रभाचंद्र की इन दोनों रचनाओं से जैन दर्शन का जो गौरव प्राप्त हुआ है, वह शब्दों में व्यक्ति नहीं किया जा सकता है।

आचार्य प्रभाचंद ने **अङ्कलकदेव कृत लघीयस्त्रीय** की विस्तृत व्याख्या के रूप में न्यायकुमुदचन्द्र जैसी महनीय टीका जिसमें लघीय स्त्रीयकी 78 कारिकाओं के हार्द को विस्तार से तर्क पूर्ण शैली में उद्घाटित किया है। आचार्य माणिक्यनंदि कृत परीक्षामुख नामक लघु किन्तु महत्वपूर्ण सूत्रग्रंथ पर प्रमेयकमल मार्तण्ड नामक 12000 श्लोक प्रमाण प्रमेयों से भरपूर विस्तृत टीका लिखकर बड़े अभाव की पूर्ति की है।

आचार्य प्रभाचंद के इन दोनों ग्रंथों में आचार्य प्रभाचंद ने सम्पूर्ण भारतीय दर्शनों की प्रायः सभी शाखाओं की प्रमुख मान्यताओं को उनके मूल स्त्रोतों के आधार पर गहन अध्ययन पूर्वक पक्ष के रूप में प्रस्तुत किया है तदनन्तर प्रबल प्रमाणों के आधार पर पूर्व पक्ष का खण्डन करते हुये जैन दर्शन को अकाट्य युक्तियों और प्रमाणों द्वारा प्रस्तुत किया है।

रचनायें :- आचार्य प्रभाचंद की अधिकांश रचनायें व्याख्यात्मक हैं और कुछ स्वतंत्र ग्रंथ की हैं। जो इस प्रकार हैं- 1. प्रमेय कमल मार्तण्ड (परीक्षा मुख सूत्र व्याख्या) 2. न्यायकुमुदचन्द्र (लघीयस्त्रय व्याख्या) 3. तत्वार्थपदवृत्ति पद विवरण (सर्वार्थ सिद्धि व्याख्या), 4. शाकटायन न्यास (शाकटायन व्याकरण व्याख्या), 5. शब्दाम्भोज भास्कर (जैनेन्द्र व्याकरण व्याख्या), 6. प्रवचनसार सरोज भास्कर (प्रवचनसार व्याख्या), 7. गद्य कथा कोश, 8. रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका, 9. समाधितंत्र टीका, 10. क्रियाकलाप टीका, 11. आत्मानुशासन टीका, 12. महापुराण-टिप्पण आदि टीका ग्रंथ है।

आचार्य प्रभाचंद मूल संघान्तर्गत नन्दिगण की आचार्य परम्परा में दक्षिण में हुये थे। इन्होंने प्रमेयकमल की प्रशक्ति के पद्मनन्दि सैद्धांत को अपना गुरु बतलाया है। ये जैन न्याय और दर्शन के उच्चकोटि के विद्वान होने के साथ ही अन्य समस्त भारतीय दर्शनों तथा व्याकरण शास्त्र के भी विशिष्ट विद्वान थे।

उनके द्वारा जैन व्याकरण लिखित शब्दाम्भोज भास्कर से ज्ञात होता है कि उन्हें पातञ्जल महाभाष्य का तलस्पर्शी ज्ञान था।

प्रमेयकमल मार्तण्ड में परमाणुवाद-आचार्य प्रभाचंद ने प्रमेय कमल मार्तण्ड में आत्मद्रव्य विचार के अंतर्गत द्रव्य विचार पर प्रकाश डाला है। जिसमें आचार्य प्रभाचंद के परमाणु के नित्य रूप पक्ष का खण्डन करते हुये कथंचित अनित्यपने की सिद्धि की है।

आचार्य प्रभाचंद ने परमाणु को निरंश एवं निरति शप रूप मानते हुये अनित्यपने की सिद्धि की है। उन्होंने कहा है कि-परमाणुओं का परस्पर में संयोग हो जाने पर वे पहले के अजनक स्वभाव को छोड़कर विशिष्ट संयोगरूप जनक स्वभाव को धारण कर लेते हैं। अतः परमाणु सर्वथा नित्या न रहकर कथंचित अनित्य हो जाते हैं, तभी वे द्वयगुण आदि कार्य के जनक होते हैं।

अतः आचार्य प्रभाचंद ने प्रमेय कमल मार्तण्ड ग्रंथ में नित्य परमाणु रूप द्रव्य का निरास किया है।

2. न्यायकुमुदचंद्र में परमाणुवाद- आचार्य अकलंकदेव के लघुग्रंथ लघीयस्त्रय की 78 कारिकाओं की एवं 3 प्रवेश टीका न्याय कुमुदचंद है। इसमें प्रमाण, नय, निपेक्ष रूप प्रतिपाद्य विषय का विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त तत्संबंधि अवांतर अनेक विषयों की पूर्व उत्तर पक्ष के रूप में चर्चा की गई है।

आचार्य प्रभाचंद ने न्याय में परमाणुओं का परमाणुओं से संयोग मानते हैं और परमाणुओं का संयोग द्विअणुक आदि का निष्पादक है। इस बात का खण्डन-मण्डन करते हुये आचार्य प्रभाचंद ने परमाणु का नित्यत्व एवं अनित्यपना दोनों की पुष्टि की है।

द्वयणु आदि अवयवी रूप अनित्य द्रव्य का विचार करके युक्तिपूर्वक उनका निराकरण किया गया है।

3. तत्वार्थवृत्ति पद विवरण- यह ग्रंथ तत्वार्थ सूत्र की टीका सर्वार्थसिद्धि की विस्तृत व्याख्या है। इसमें आचार्य प्रभाचंद ने परमाणु के बंध की विस्तृत चर्चा की है। पुद्गल, पुद्गल के भेदों का भी विवरण प्रस्तुत किया है। परमाणु को एक प्रदेशी भी कहा है।

अतः आचार्य प्रभाचंद ने अपने ग्रंथों में परमाणु का मौलिक चिन्तन प्रस्तुत किया है। इस प्रकार हमें आचार्य प्रभाचंद के तलस्पर्शी सूक्ष्म दार्शनिक अध्ययन के साथ परमाणु जैसे अन्य अनेक विषयों के अगाध वैदुष्य का बोध होता है। वास्तव में आचार्य प्रभाचंद का वैदुष्य विशाल व्यापक एवं गंभीर था।

चलो देखें यात्रा

गुणावा जी

यह पर्वतीय तीर्थों की श्रेणी से मुक्त है यहाँ से इंद्रभूति गौतम गणधर को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी अतः इनके पावन चरण यहाँ पर विराजमान हैं यहाँ पर दो मंदिर हैं जो विशाब तालाब के बीच में हैं। इस हमेशा जल से भरे रहने वाले तालाब में सुंदर-सुंदर कमल खिले रहते हैं जो इस बात के प्रतीक हैं कि इस तालाब में मंदिर तक पहुँचने के लिये 60 मीटर लंबा सुंदर सा पुल है। भगवान महावीर के मुख्य गणधरों में गौतम गणधर की गिनती होती है। अपने 500 वैदिक शिष्यों के साथ वे भगवान महावीर के समवशरण में गये थे उन्हें भगवान महावीर तक ले जाने के लिये इंद्र को वृद्ध का रूप रखना पढ़ा था और उनके साथ गुरु मिलन गुरु मिलन की भूमिका निभाई थी।

66 दिन की दिव्य ध्वनि के गतिरोध को गौतम गणधर ने समाप्त किया था तदुपरांत उनकी देशना जन-जन के लिये शुलभ हो पाई थी। यह तीर्थ रेल्वे स्टेशन नवादा से 3 किमी. दूर है। गया जंक्शन ने नवदा पहुँचा जा सकता है। यह तीर्थ विहार प्रांत के नवादा जिले में है।

आवास सुविधा भोजन सुविधा - यहाँ पर 40 यात्रियों की क्षमता सुविधा है। दो कमरे अटैच बाथरूम के हैं। 5 कमरे बिना बाथरूम के हैं। एक हॉल है एक त्यागी भवन विद्यमान है। गुणावा में भोजन सुविधा सशुल्क अनुरोध पर उपलब्ध है।

संपर्क सूत्र- अजय जैन आरा मो. 9333496920
सदयचंद्र जैन नवादा मो. 9470027063

कविता

जीतहार के चक्कर

जीतहार के इस चक्कर में अहंकार फलफूल रहा
मद में डूबा भोला चेतन अपने घर को भूल रहा
कहीं जीत का जस्न बनायें कही हार का रोना धोना
पर यह कुछ पल का नाटक है फिर तो घर है सूना सूना

अब तक हमने खुशी मनाई जीते जग सब छूट गये
नहीं किसी की राज संपदा पल में सपने टूट गये
फिर व्याकुल आकुल होता नहीं समझ पाया निज-सत्ता
पतझड़ में ज्यों झड़ जाता है देख तरू का पत्ता

होशियार मत भूल बेटोही नित सम्पत्ति बस चेतन है
आजा इसमें रमलें कुछ पल यही तो शाश्वत केतन है।

आगम दर्शन

सृष्टि विद्या का अनूठा ग्रन्थ त्रिलोयपण्णत्ति

त्रिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में तीना लोक के स्वरूप आकार प्रकार, विस्तार क्षेत्रफल और युग परिवर्तन आदि विषयों का आचार्य यति वृषभ जी ने वर्णन किया है। प्रस्तुत ग्रंथ में प्रसंग बस जैन सिद्धान्त पुराण और भारतीय इतिहास विषयक सामग्री के सन्दर्भ उपलब्ध होते हैं यह ग्रंथ नौ महाधिकारों में विभक्त है। सामान्य जगत स्वरूप, नारक लोक, भवनवास लोक, मनुष्य लोक, तिर्यक लोक, व्यंतर लोक, ज्योति लोक, सुर लोक और सिद्ध लोक। इन नौ महाधिकारों के अतिरिक्त अवान्तर अधिकारों की संख्या 180 है। द्वितीयादि महाधिकारों के अवान्तर अधिकार क्रमशः 15,24,16,16,17,17,21,5 और 49 हैं । चतुर्थ महाधिकार के जम्बू द्वीप, घातकीखण्ड द्वीप ओर पुष्करद्वीप नाम के अवान्तर अधिकारों में से प्रत्येक के सोलह-सोलह अन्तर अधिकार हैं। इस प्रकार इस ग्रन्थ का विषय-विस्तार अत्यधिक है।

इस ग्रन्थ में भूगोल और खगोल का विस्तृत निरूपण है। प्रथम महाधिकार में 283 गाथायें हैं और तीन गद्य-भाग हैं। इस अधिकार में 18 प्रकार की महाभाषायें और 700 प्रकार की क्षुद्र भाषायें उल्लेखित हैं। राजगृह के विपुल ऋषि शैल, वैभार छिन्न और पाण्डु नाम के 5 शैलों का उल्लेख है। दृष्टिवाद सूत्र के आधार पर त्रिलोक की मोटाई, चौड़ाई और ऊँचाई का निरुपण किया है।

दूसरे महाधिकार में 367 गाथायें हैं, जिनमें नरकलोक के स्वरूप का वर्णन है । तीसरे महाधिकार में 243 गाथायें हैं। इनमें भवनवासी देवों के प्रसादों में जन्मशाला, अभिषेक शाला, भूषणशाला, मैथुनशाला, औषधशाला, परिचर्यागृह और मन्त्रशाला, आदि शालाओं तथा सामान्यगृह, गर्भ गृह, कदली गृह, चित्रगृह आसनगृह नादगृह एवं लतागृह आदि का वर्णन है। अश्वत्थ, सप्तपर्ण, शाल्मलि, जम्बू, वेतस, कदम्ब प्रियंगु, शिरीष, पलाश और राजद्रुम नाम के दश चैत्य वृक्षों का उल्लेख हैं। चतुर्थ महाधिकार में 2961 गाथायें हैं। इसमें मनुष्यलोक का वर्णन करते हुये विजयार्द्ध के उत्तर और दक्षिण अवस्थित नगरियों का उल्लेख है। आठ मंगल द्रव्यों में श्रृंगार, कलश, दर्पण, व्यंजन, ध्वजा, छत्र, चंवर और सुप्रतिष्ठ के नाम आये हैं। भोग-भूमि में स्थित दश कल्पवृक्ष नरनारियों के आभूषण, तीर्थंकरों की जन्मभूमि, नक्षत्र आदि का निर्देश किया गया है। बताया गया है कि नेमि, मल्लि, महावीर, वासूपूज्य और पार्श्वनाथ कुमारावस्था में और शेष तीर्थंकर राज्य के अन्त में दीक्षित हुये हैं। समवशरण का 30 अधिकारों में विस्तृत वर्णन है। पाँचवे महाधिकार में 321 गाथायें हैं। इसमें गद्य-भाग भी है। जम्बूद्वीप लवण समुद्र, घातकी खण्ड, कालोदसमुद्र, पुष्करवर द्वीप आदि का विस्तार सहित वर्णन है। छठे महाधिकार में 103 गाथायें हैं, जिनमें 17 अन्तराधिकारों का समावेश है। इनमें व्यन्तरों के निवास क्षेत्र उनके अधिकार क्षेत्र, उनके भेद, चिन्ह, उत्सेध, अवधिज्ञान आदि का वर्णन है। आठवें महाधिकार में 703 गाथायें हैं, जिनमें वैमानिक देवों के निवास स्थान, आयु, परिवार, शरीर, सुखभोग, आदि का विवेचन है। नवम महाधिकार में सिद्धों के क्षेत्र, उनकी संख्या अवगाहना और सुख का प्ररूपण किया गया है। मध्य में सूक्तिगाथायें भी प्राप्त होती हैं।

यह ग्रन्थ ईसा की दूसरी शताब्दी का विरचित है।

केरियर

न्यूट्रेशन में रोजगार

आज भाग-दौड़ भरी जिन्दगी के चलते जिस तेजी से स्वास्थ्य समस्याओं में इजाफा हुआ है, लोगों में स्वस्थ्य रहने के प्रति जागरूकता भी बढ़ी हैं, अपने खान-पान का ख्याल रखने के लिये अब बड़े पैमाने पर आहार या पोषण विशेषज्ञ की सलाह को तरजीह दे रहे हैं। इसलिये अब लगभग सभी सरकारी एवं प्राइवेट हॉस्पिटलों में डायटीशिन एवं न्यूट्रिशिनिस्ट की नियुक्ति की जाती है। बतौर डायटीशियन या न्यूट्रिशनिस्ट स्वतंत्र रूप से क्लीनिक शुरु करने का भी विकल्प हैं।

क्या करते हैं डाइटीशियन- डायटीशियन (आहार विशेषज्ञ) एवं न्यूट्रिशनिस्ट (पोषण-विशेषज्ञ) अपने ग्राहकों के स्वास्थ्य का मूल्यांकन करते हैं इसके बाद अपने निष्कर्ष के आधार पर सलाह देते हैं कि किन खाद्य पदार्थों को खाना है, डायटीशियन एवं न्यूट्रिशनिस्ट की स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में लगभग मिलती-जुलती भूमिका होती है। दोनों भोजन और आहार के विशेषज्ञ हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में बतौर स्वास्थ्य पेशेवर ये लोगों को सेहत के लिहाज से खान-पान संबंधी सलाह देते हैं। इनका उद्देश्य लोगों को हेल्दी फुड के बारे में जानकारी देना और न्यूट्रीशियल फूड के इस्तेमाल के लिये प्रेरित करना होता है। देश में जिस तेजी से लोगों में मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप, हृदय रोग जैसी स्वास्थ्य समस्यायें बढ़ी हैं। आहार विशेषज्ञ की मांग भी बढ़ी है। आहार विशेषज्ञ न सिर्फ रोग को नियंत्रित रखने वाले संतुलित भोजन की सलाह देते हैं, उस भोजन से पर्याप्त पोषण मिल सके। इसका भी बखूबी ख्याल रखते हैं। विभिन्न कार्य क्षेत्रों से जुड़े लोगों का ऊर्जा की आवश्यकता के अनुसार सही आहार तय करना आदि मामलों में प्रशिक्षित डायटीशियन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

आपके लिये यह है करियर :-आपने साइंस, होम साइंस, नर्सिंग से पढ़ाई की है, तो इस करियर क्षेत्र की ओर आगे बढ़ सकते हैं, डायटीशियन की पढ़ाई के लिये होम साइंस या साइंस स्ट्रीम से बारहवी पास होना अनिवार्य हैं। बारहवी के बाद इस विषय में बैचलर डिग्री मास्टर डिग्री या डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं, एक साल का डिप्लोमा कोर्स करने के लिये फूड साइंस, होम साइंस या बायोटेक्नॉलाजी में बैचलर डिग्री आवश्यक है, साथ ही इस तरह की खाने पीने की चीजों के बारे में गइराई से जानने में रूचि होना जरूरी है, इसके लिये आपसे रिसर्च क्षमता और प्रभावी कम्युनिकेशन स्किल्स भी होना चाहिये।

कर सकते हैं ये कोर्स- आप बारहवीं के बाद न्यूट्रिशन एंड हेल्थ एजुकेशन, डायटेटिक्स, न्यूट्रिशन एंड डाइटेटिक्स, फूड साइंस एंड न्यूट्रिशन, डाइटेटिक्स एंड क्लीनिकल न्यूट्रिशन, न्यूट्रिशन एंड फूड टेक्नोलॉजी में डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं नियमित डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। नियमित डिप्लोमा कोर्स की अवधि दो से तीन वर्ष तक हो सकती है।

बैचलर डिग्री कोर्स- साइंस विषय से बारहवीं करने वाले अभ्यर्थियों के लिये क्लीनिकल न्यूट्रिशन, न्यूटिशन एंड डाइटेटिक्स, फूड साइंस एंड न्यूट्रिशन अप्लाइड न्यूट्रिशन,डाइटेटिक्स, होम साइंस, (न्यूट्रिशन एंड फूड साइंस स्पेश लाइजेशन) में बीएससी करने का विकल्प उपलब्ध है।

पीजी कोर्स- ग्रेजुकेशन के बाद एम उस सी या पीजी डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश लेकर इन विषयों में स्पेशलाइजेशन कर सकते हैं- क्लीनिकल न्यूट्रिशन, पीडिएट्रिक न्यूट्रिशन, पब्लिक हेल्थ न्यूट्रिशन, फूड साइंस/टेक्नोलॉजी, स्पोर्टस, न्यू ट्रिशन/डाइटेटिक्स, रीनल, न्यूट्रिशन।

कोर्स करने के लिये प्रमुख संस्थान :- दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली-
विश्वविद्यालय दिल्ली-www.du.ac.in
लेडीइरविन कॉलेज, नई दिल्ली-www. ladyirwin.edu
जीबी पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड टेक्नोलॉजी पंतनगर-www. gbpuat.ac.in
बुन्देलखण्ड यूनिवर्सिटी, झांसी (उ.प्र.)-www. bujhansi.org
कोलकाता विश्वविद्यालय कोलकाता-www.col-univ.ac.in
कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर (उ.प्र.)-www.kanpuruniversity.org.
इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, मैदागढ़ी दिल्ली-www.ignou.ac.in

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
फरवरी 2020

हम नन्हें बालक क्या जाने

प्रथम-

कब से खड़े हुये हो प्रभु हमें क्या पता
यादें नहीं किसी की तुमके रहीं सता
तुम हो नगन पर ठाड़े निज का ही गीत गाते
स्वरूप आपका हम नन्हें बालक क्या जाने

श्रीमति रूचि जैन,सागर

द्वितीय-

गीत प्रभु के हम गायेंगे प्रभु चरणों में
रम जायेंगें
अपने पाप कर्म गल जायें प्रभु का अमृत पायें
रूप प्रभु का खूब निराला हर पल मन को भाने वाला
लो भक्ति के चावल दाने हम नन्हें बाल क्या जाने

श्रीमति रश्मि जैन, सागर

तृतीय-

आदिनाथ के पुत्र हो प्यारे एक वर्ष से तप में ठाड़े
कैसे गये तुम भक्ति सयाने हम नन्हें बालक क्या जाने

श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
जनवरी 2020 के विजेता

प्रथम : डॉ. मीना सुनील जैन,ओबेदुल्लागंज
द्वितीय : श्रीमति अंशु शाह, सागर
तृतीय : श्रीमति पारस जैन, तिलकनगर इन्दौर

वर्ग पहेली क्र. 249
जनवरी 2020 के विजेता

प्रथम : सौ. सरला रमेश कस्तुरे, चंद्रपुर
द्वितीय : श्री अनिल जैन, भोपाल
तृतीय : व्रती बी.एल.जैन, नई दिल्ली

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : फरवरी 2020 का हल

01. कल्याण
02. अनुरूप
03. मोक्षमार्ग
04. दीपक
05. पानी
06. जीवन
07. इन्द्रजाल
08. भेष
09. शिव
10. नश्वर
11. मूल्यवान
12. रागद्वेष
13. जीवन
14. वीतरागता
15. गुणियों
16. सहज
17. ऊर्ध्वगामी
18. आत्म
19. हृदय
20. गुरुत्व
21. बड़प्पन
22. बड़ा
23. मान
24. मानव
25. श्रेष्ठ
26. विवेक
27. आत्मा
28. अन्तरंग
29. गंभीरता
30. कर्तव्य
31. अहंकार
32. सदाचरण
33. संकुचित
34. परिश्रम
35. जीवन
36. दया
37. निंदा
38. मुख
39. सज्जनों
40. जिह्वा
41. आर्यिका तीर्थमति माताजी
42. रामटेक 11 दिसम्बर 2015
43. उत्कर्ष जैन
44. आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज
45. श्रीमति रश्मि जैन, सागर
46. श्रीमति स्मिता जैन ललितपुर
47. श्रीमति रजनी जैन राहतगढ़
48. श्रीमति सरिता पवन जैन रहली
49. श्रीमति पूनम सुभाष जैन गुणायतन
50. गुणरत्नाकर

पुराण प्रेरणा

आत्मलाभ

कालविद्धि कुरूते यथोचितम्।
अवसर को जानने वाला पुरुष निश्चय ही यथोचित कार्य करता है।

सर्वधारणं नृणा मवस्थान्तर वर्तनम्।
मनुष्यों की अवस्थाओं का परिवर्तित होना सामान्य बात हे।

भवेदमृत वल्लीतो विषयस्त प्रसवः कथम्।
अमृत की बेल से विष उत्पत्ति नहीं हो सकती।

अवलम्ब्य शिलाकण्ठे दोर्भ्यां तर्तुं न शक्यते।
कंठ में शिला बांधकर भुजाओं से तैरा नहीं जा सकता।

न हि सागररत्नाना मुपपत्तिः सरसो भवेत्।
समुद्र के रत्नों की उत्पत्ति सरोवर से नहीं हो सकती।

बालुकापीडनाद् बालस्नेहः संजायतेऽथ किम्।
बालू को पेलने से लेश मात्र भी तेल नहीं निकल सकता।

नीर निर्मथने बब्धिर्नवनीवस्य किं कृता।
पानी के मथने से मक्खन की प्राप्ति नहीं हो सकती।

जलैः किं शुद्धिरात्मनः।
जल से आत्मा की शुद्धि नही हो सकती।

नात्मलाभात्परं सुखम्।
आत्म लाभ सेबड़ा कोई सुख नहीं है।

नात्मलाभात्परं ज्ञानम्।
आत्मलाभ से बड़ा कोई ज्ञान नहीं है।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ इ त् ष् ठ् अ प् र् ग् अ आ प्र
2. आ इ त् ष् ठ् आ त् अ र् न् क् अ अ र् प्र
3. आ इ त् ष् ठ् अ स् ओ र् भ अ प्र
4. आ इ त् ष् ठ् अ र् त् न् अ प्र
5. .आ इ त् ष् ठ् अ व् ग् ओ र् अ प्र

परिणाम :
फरवरी 2020: (1) विद्यावाणी (2) दिव्यवाणी (3) संस्कार सागर (4) संस्कार मंजूषा (5) समयोपदेय

■1 दिसम्बर

- जम्मूः राजौरी जिले में एल ओ सी के पास नौशेरा सेक्टर पर पाकिस्तानी घुसपैठियों से मुठभेड़ में संदीप रघुनाथ एवं अर्जुन थापा शहीद हुये।

- मुम्बई : विशेष अदालत ने विजय माल्या की संपत्ति इस्तेमाल करने की इजाजत दी।

- दुमका (झारखंड) बासु की नाथ मंदिर करंट फैलने से पंडा सुमित झा की मौत हुई।

■ 2 दिसम्बर

- भारतीय रेल्वे ने हेल्प लाईन नंबर 139 को एकीकृत रेल्वे हेल्पलाईन में बदला।

- केन्द्र सरकार ने प्रो. सुरेशचंद्रा शर्मा को राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग का चेयरमैन बनाया।

- केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद ने कहा नागरिकता संशोधन कानून के विरूद्ध पास किया गया प्रस्ताव असंवैधानिक है।

■ 3 दिसम्बर

-अमेरिका ने बगदाद में ईरान के शीर्ष कमांडर कासिम सुलेमानी को ढेर किया। 8 सैनिक भी मारे गये।

- पं. बंगाल के 24 परगाना जिले के नेहाटी में एक पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट होने से 4 लोग मरे।

- राजस्थान के सभी छह बसपा विधायक काँग्रेस में शामिल हुये।

■ 4 दिसम्बर

- इराक में अमेरिकी दूतावास और सैन्य ठिकानों पर राकेटों से हमले हुये।

- भोपाल कथित पत्रकार अनम इब्रहिम पर 10000 रूपये का इनाम घोषित हुआ।

- भिण्ड : पूर्व विधायक नारायण सिंह का सरकारी जमीन बना गुडलक बीयरबार होटल एंटी माफिया सेल ने तोड़ा।

- दिल्ली : गुरुद्वारा नानकाना साहिब पर पथराव की घटना का भारत ने कड़ा विरोध किया।

■ 5 दिसम्बर

-नई दिल्ली : जे.एन.यू. के हॉस्टलों नकाब पोश गुंडा ने हमला किया छात्र संघ अध्यक्ष सहित 20 छात्र एम्स में भर्ती हुये।

पटना : देश की पहली लोकसभा के सदस्य कमल बहादुर का निधन हुआ। वे 93 वर्ष के थे शाहबाद से सांसद थे।

पाकिस्तान के मंत्री फयाद चौधरी ने टीवी एंकर मुबाशिर लकमान को थप्पड़ मारा।

■ 6 दिसम्बर

- उज्जैन : नागरिकता संशोधन कानून के समर्थन में 4 किमी. लम्बी रैली निकली 300 मीटर लंबा तिरंगा लेकर लोग निकले।

- राँची : राँची से 15 किमी. दूर पिस्का नगड़ी की बेटी नाबालिग को उ.प्र. के बुलंदशहर के अहमदगढ़ में सौतेली माँ ने 5000 में बेचा।

-ईरान पर हमले और धमकी का असर हुआ सेंसेक्स 788 अंग गिरा।

■ 7 दिसम्बर

- निर्भया दुष्कर्म मामले में पटियाला हाऊस कोर्ट चारों दोषियों विरूद्ध डेथ वारंट जारी किया।

- भोपालः बाहर खेल रही 5 वर्षीय बच्ची से 27 वर्षीय दो बच्चों के पिता रामबाबू मालवीया ने चाकलेट का लालच देकर दुष्कृत्य किया।

- सियाचिन के हीरो ले. जनरल प्रेमनाथ हून का निधन हुआ वे 91 वर्ष के थे।

■ 8 दिसम्बर

- ईरान ने अमेरिका सैन्य कैम्प पर 22 मिसाईलों से हमला किया।

- ट्रेड यूनियन ने भारत बंद का आहवान किया पश्चिम बंगाल में सबसे ज्यादा प्रभाव दिखा।

- अजमेरः प्रतीक्षालय की छत गिरने से 1 महिला की मौत हुई तथा 6 लोग घायल हुये।

■ 9 दिसम्बर

- सूरत : 330 गैस सिलेंडर से भरे ट्रक में आग लगी 27 सिलेंडर फटे 26 स्कूली बच्चे जलने से बचे।

- सागर : आनंद नगर में कबाड़ की दुकान पर टेंक उड़ाने वाले बम का विस्फोट हुआ बैजनाथ अहिरबार की मौत हुई।

-लोकपाल के सदस्य जस्टिस दिलीप बी भौसले ने इस्तीफा दिया।

■ 10 दिसम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने फैसले में कहा इंटरनेट जन्म सिद्ध अधिकार है। बोलने की आजादी दबाने के लिये लम्बे समय तक 144 धारा लगाना सत्ता का दुरुपयोग है।

- कन्नोज : एक ट्रक से एसी बस भिड़ी, बस में भीषण आग लगने 24 यात्री जिंदा जले।

- बलूचिस्तान प्रांत के क्वेटा की मस्जिद में धमाका हुआ 15 लोगों की मौत हुई तथा 20 लोग घायल हुये।

■ 11 दिसम्बर

- भोपाल : सुवासरा के काँग्रेस विधायक हरदीप सिंह डंग नागरिक संशोधन विधेयक के समर्थन में बोले कहा इसमें गलत क्या है।

- भारतीय मूल के जॉन कर्नल राजा जॉन बुरपुतूर नासा के 11 स्नातकों में शामिल हुये।

- मस्कट : ओमान के सुल्तान काबूस बिन सईद का निधन हुआ वे 79 वर्ष के थे।

■ 12 दिसम्बर

- पटना : केन्द्रीय चयन परिषद की ओर से आयोजित सिपाही भर्ती परीक्षा में 24 फर्जी अभ्यार्थी गिरफ्तार हुये।

- ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने शाही परिवार की आपात् बैठक बुलाई।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कोलकाता पोर्ट का नाम श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट दिया।

■ 13 दिसम्बर

- भोपालः सासंद प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने यहाँ केमिकल से भरा लिफाफा पहुँचा लेटर में धमकी।

- अमेरिका में 40 किलो बजनी कछुआ 80 बच्चों का पिता है यह कछुआ समुद्र तट पर देखा गया।

-हाईकोर्ट लाहौर ने पूर्व राष्ट्रपति जनरल मुशर्रफ की मौत की सजा को माफ किया।

■ 14 दिसम्बर

- एम.पी.पी. एस.सी परीक्षा में भील जाति से विवादित पांच प्रश्नों को आयोग ने विलोपित किया।

- माइकल पात्रा रिजर्व बैंक आफ इंडिया के गर्वनर बने।

- जम्मू कश्मीर में हिमस्खलन से बी एस एफ के 5 जवानों सहित 10 लोगों की मौत हुई।

■ 15 दिसम्बर

- रूस के प्रधानमंत्री दमित्री मेदवेदेव ने इस्तीफा दिया।

- गोवा में लूटपाट कर सोना बेचने आगरा जा रहे भोपाल के चार बदमाश खंडवा में पकड़े गये उनसे 2 करोड़ के स्वर्ण आभूषण वरामद हुये।

- लंदन : ब्रिटेन में तूफान से 150 इमारतों को नुकसान हुआ सैकड़ो वाहन दब गये।

■ 16 दिसम्बर

- पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड से एशिया कप की मेजबानी का अधिकार छीना गया।

- भ्रष्ट पूर्व ए डी जी राजेन्द्र चतुर्वेदी को 5 साल के जेल की सजा हुई। इनको भ्रष्टाचार एवं धोखाधड़ी का दोषी माना गया।

- पाकिस्तान ने भारत विरोधी बयान देने पर मेजर जनरल आसिफ गफूर को सेना प्रमुख ने हटाया।

■ 17 दिसम्बर

- पंजाब विधानसभा में नागरिकता संशोधन विधेयक के विरुद्ध प्रस्ताव पारित हुआ पंजाब पहला काँग्रेसी राज्य है।

- पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत में दो हिन्दू लड़कियों का अपहरण हुआ।

■18 दिसम्बर

- रायगढ़ (महाराष्ट्र) ट्रक से टकराकर फिल्म अभिनेत्री शबाना आजमी घायल हुई वे कार में सवार थी।

- प्रवर्तन निदेशालय ने भूषण पाँवर एंड स्टील लिमिटेड के पूर्व सी.एम.डी संजय की 204.31 करोड़ की सम्पत्ति जब्त की।

- कश्मीर में प्रीपेड मोबाईल और एस एम एस सेवा चालू हुई।

■ 19 दिसम्बर

- बैंगलुरः भारत ने आस्ट्रलिया को 7 विकेट से हराकर 2-1 से वनडे सीरीज जीती।

-शिर्डी के सांईबाबा का जन्म स्थान पाथरी बताने पर शिर्डी बन्द रहा छुट्टी के बाद भी 25% श्रद्धालु कम पहुँचे।

- यमन : नमाज पढ़ रहे सैनिकों पर विद्रोहियों ड्रोन मिसाइल से हमला किया जिससे 80 की मौत 100 घायल हुआ।

■ 20 दिसम्बर

- जे.पी. नड्डा भाजपा के नये राष्ट्रीय अध्यक्ष बने।

- सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर को केमिकल लिफाफा भेजने वाला नांदेड का डॉक्टर सैय्यद अब्दुल रहमान गिरफ्तार हुये।

- निर्भया मामले का दोषी पवन गुप्ता सुप्रीम कोर्ट में नाबालिग साबित करने में असफल रहा साजिश नाकाम हुआ।

■ 21 दिसम्बर

- सूरतः पूणा-सरोली रोड़ पर स्थित 14 मंजिला रघुवीर टेक्सटाई मार्केट में आग 300 करोड़ का कपड़ा जला।

- आप पार्टी नेता दिल्ली के मुख्यमंत्री अपना नामांकन 6.30 घंटा कतार में लगने के बाद भर पाये।

- बी.एस. एफ के ए डी जी डॉ. थाउ सेन बने।

■ 22 दिसम्बर

- भोपाल : सहकारिता उपायुक्त राजेश क्षत्री को महिला अफसर को परेशान करने की शिकायत पर मंत्री गोविंद सिंह 1 घंटे में सस्पेंड किया।

- स्पेन में ग्लोरिया तूफान से तबाही हुई 50 फुट ऊँची लहरें उठी।

- थाईलैंड में धूल, धुआ, और फॉग प्रदूषण के कारण 450 स्कूल बंद रहे सरकार ने 4.5 लाख मास्क बांटे।

■ 23 दिसम्बर

- कानूनी हथकंडों से फांसी की सजा टालने पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा फांसी के खिलाफ अपीलों का एक छोर पर अंत जरूरी।

- महाराष्ट्र नव निर्माण सेना के अध्यक्ष राज ठाकरे ने सी.एस. के समर्थन में भगवा झंडा जारी किया।

- हरदा कपलिंग टूटने से पंजाब मेल दो हिस्सों बटी 7 डब्बे जंगल में छूटे।

■ 24 दिसम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने नई बालूनीति व छोटे घाटों की नीलामी करने का फैसला दिया।

- भारत में कोरोना वायरस फैलने की आहट मिली।

- अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पर महाभियोग में खुले आम सत्ता के दुरूपयोग का आरोप लगा।

■ 25 दिसम्बर

- महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री उद्धव ठाकरे ने कहा पाक बांग्लादेश के घुसपैठियों को भारत से बाहर किया जाये।

- राज्यसभा की तदर्थ समिति ने सिफारिश की चाइल्ड पोर्नो ग्राफी पर तत्काल रोक लगे 40 सुझाव भी दिये।

- तुर्की में 6.8 तीव्रता का भूकम्प आया 26 लोगों की मौत हुई।1 हजार से अधिक घायल हुये।

■ 26 दिसम्बर

- 5 जैन गौरव विमल जैन, श्रीमति शांति जैन, मीनाक्षी जैन, नेमनाथ जैन, सुधीर जैन को पद्मश्री सम्मान देने की घोषाण की गई।

- हांगकांग ने कोरोना वायरस को लेकर आपातकाल लागू करने की घोषण हुई।

- पाकिस्तान में पुलिस संरक्षण में एक हिन्दू लड़की का अपहरण करके मुस्लिम युवक से शादी कराई गई।

■ 27 दिसम्बर

-इंदौर : दुबाई फ्लाइट से पेट में कैप्सूल के भीतर छिपा कर आये आधा किलो सोना चैकिंग में पकड़ाया।

- जम्मूः बी एस एफ ने अंतराष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तानी ड्रोन को मार गिराया।

- आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने मुख्यमंत्री कमलनाथ से कहा अंडे की बजाय मगज का लड्डू स्कूलों में बच्चे को दिया जाये इससे बुद्धि का विकास होगा।

■ 28 दिसम्बर

- वरिष्ठ राजनायिक तरनजीत संधू अमेरिका में भारत के राजदूत नियुक्त हुये।

- लेह में भारतीय सेना की ओर से माइनस 20 डिग्री में हाँकी चैम्पियन शिप हुई। आई टी बी पी विजेता रही।

- सागर : मकरोनिया आनंद नगर में पूर्व सैनिक रामगोपाल पत्नी भारती व छोटे बेटे आदर्श 16 वर्ष की सड़ी गली लाशें एक कमरे में मिली जहर से मौत हुई। मामला हत्या का।

■ 29 दिसम्बर

- बेडमिंटन खिलाडी साइना नेहवाल भाजपा में शामिल हुई।

- हिमाचन प्रदेश में बर्फवादी के कारण 619 मार्ग बंद हुये।

- कोरोना वायरस के कारण चीन में 132 लोगों की अब तक मौत हुई 20 दिन तक इंडिगो एवं एयर इंडिया की उड़ानें चीन जाने से रोकी गई।

■ 30 दिसम्बर

- दिल्ली : जामिया में सी.एस विरोधी प्रदर्शन पर नाबालिग ने गोली चलाई एक जख्मी हुआ।

- फर्रूखाबादः जमानत पर एक हत्यारे सुभाष वाथम ने 24 बच्चे को बंधक बनाकर 11 घंटे रखा बंटी के वर्थडे के बहाने बच्चों को बुलाया और बंधक बना लिया।

-आगर मालवा के विधायक मनोहर ऊंट वाला का निधन दिल्ली गुरु ग्राम के मेदना अस्पताल में हुआ।

■ 31 दिसम्बर

- नीट पीजी परीक्षा में डॉ. शिव शर्मा ने दौसा राजस्थान ने ऑल इंडिया टॉप किया 1200 में से 1013 अंक प्राप्त किये।

- उज्जैन : नेपाल के उपराष्ट्रपति के विशेष सांस्कृतिक सलाहकार बनकर आये महावीर प्रसाद तेरड़ी सहित तीन लोब गिरफ्तार हुये।

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने संसद के संयुक्त अधिवेशन में कहा कि संसद ने नागरिकता संशोधन विधेयक पारितकर गांधी जी की इच्छा को पूरा किया।

दिशा बोध

मुनि-महिमा

1. जिन लोगों ने इन्द्रियों के समस्त भोगों को त्याग दिया है और जो तपस्वी जीवन व्यतीत करते हैं धर्मशास्त्र उनकी महिमा को अन्य सब बातों से अधिक उत्कृष्ट बतातेहैं ।
2. तुम तपस्वी लोगों की महिमा को नहीं नाप सकते। यह काम उतना ही कठिन है जितना की दिवंगत आत्माओं की गणना करना।
3. जिन लोगों ने पर लोक के साथ इहलोक की तुलना करने के पश्चात् इसे त्याग दिया है,उनकी महिमा से यह पृथ्वी जगमगा रही है।
4. जो पुरुष अपनी सुदृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा पाँचों इन्द्रियों को इस तरह वश में रखता है जिस तर हाथी अंकुश द्वार वशीभूत किया जाता है वही वास्तव में स्वर्ग के खेतों में बीज बोने योग्य है।
5. जिसने पंचेन्द्रियों की तृष्णा शमन की है उस तपस्वी के तप में क्या सामर्थ्य है यदि वह देखना चाहते हो, तो देवाधिदेव इन्द्र की ओर देखो।
6. महान् पुरुष वे ही हैं , जो अशक्य कार्यों को भी सम्भव कर देते हैं और क्षुद्र वे हैं जिनसे यह काम नहीं हो सकता।
7. जो स्पर्श, रस, गंध,रूप और शब्द- इन पाँच इन्द्रिय-विषयों का यथोचित सम्यक् उपभोग करता है वह सारे संसार पर शासन करेगा।
8. संसार भर के धर्मग्रन्थ, सत्यवक्ता महात्माओं की महिमा की घोषणा करते हैं।
9. त्याग की चट्टान पर खड़े हुए महात्माओं के क्रोध को एक क्षण भी सह लेना असम्भव है।
10. साधुप्रकृति पुरुषों को ही साधु-सत्पुरुष कहना चाहिये, क्योंकि वे ही लोग सब प्राणियों पर दया रखतेहैं।

इसे भी जानिये

ये अनमोल पुस्तकें

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
01.	दि अदर इण्डिया	आई. जे. बहादुर सिंह
02.	दि अनफॉट वार ऑफ 1962	ले. कर्नलजे. आर. सैंगल
03.	ए विलेज आई सी	अनीता देसाई
04.	एपाइन्टमेंट ऑफ ए चीफ जस्टिस	ए. आर. अन्तुले
05.	अभिनव	विमलराय (बंगला)
06.	अभिज्ञान कुन्तलम्	कालिदास (संस्कृत)
	ारतीय पुस्तके वि ि न्न ाषाओं में	
07.	तत्त्वार्थ सूत्र	आचार्य गृद्धपिच्छ (संस्कृत)
08.	भागवद् गीता	वेद व्यास (संस्कृत)
09.	ब्रोकन विंग	सरोजनी नायडू (अंग्रेजी)
10.	बुद्ध चरितम्	अश्वघोष (संस्कृत)
11.	विसर्जन	रविन्द्रनाथ टेगोर (बंगला)
12.	वर्ड ऑफ टाइम	सरोजन नायडू (अंग्रेजी)
13.	बाबरनामा	बाबर फारसी
14.	बिखरे तिनके	अमृतलाल नागर (हिन्दी)
15.	बसन्ती	भीष्म साहनी (हिन्दी)
16.	बीजक	कबीरदास
17.	बया का घोंसला	लक्ष्मीनारायण लाल (हिन्दी)
18.	बेघर	ममता कालिया (हिन्दी)
19.	भारतीय संस्कृति	देवराज (हिन्दी)
20.	ब्रेड ब्यूटी एण्ड पॉवर्टी	ख्वाजा अहमद अब्बास
21.	विटवीन दि लाइंस	कुलदीप नैयर (अंग्रेजी)
22.	द ब्राइड्स बुक ऑफ ब्यूटी	मुल्कराज आनन्द (अंग्रेजी)
23.	ब्लाजमस इन डार्कनस	कृष्णा सोबती

देव-शास्त्र गुरु की त्रिवेणी श्रवणबेलगोला

❊ ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर ❊

देवाधिदेव हे जिनेन्द्र ! हे गोम्मटेश्वर ! जिन प्रणाम ।
गोम्मटेश्वर त्रिलोकसार शत् - शत् वंदन-अभिनंदन ।।
भद्रबाहु प्रभाचंद्र आचार्य सल्लेखना ली अभिराम ।
अघहर के श्रवणबेलगोला, तीर्थ कोशत् बार प्रणाम ।

दक्षिण भारत में जैन संस्कृति के संरक्षण और प्रसार के लिए प्रारम्भ से ही कर्नाटक प्रान्त का नाम रहा है। जिस प्रकार यह भू-भाग अपनी बारह माह हरियाली और प्राकृतिक शोभा-सुषमा के लिए दूर-दूर तक विख्यात रहा है, उसी प्रकार श्रमण साधुओं और जैन तीर्थों के लिए प्रसिद्ध रहा है। इसी कर्नाटक प्रान्त में प्रसिद्ध तीर्थ श्रवणबेलगोला है, जो प्राचीन समय से ही देव-शास्त्र-गुरु की त्रिवेणी रहा है।

श्रवणबेलगोला में 32 जिनायतन अनेक ग्रन्थों का लेखन तथा संरक्षण, सहस्त्रों मुनिराजों के चरण समय-समय पड़े हैं।

वीतरागी अर्हन्त देव - श्रवणबेलगोला तीर्थ में छोटे बड़े सभी मिलाकर 32 जिनायतन है। पर्वतराज चंद्रगिरि पर 16, गिरिराज विन्ध्यगिरि पर 8 और श्रवणबेलगोला नगर में 8 देवालय है। जिनका वर्णन निम्न प्रकार हैं :-

चंद्रगिरि पर्वतराज पर स्थित 16 देवालय :-

1. भद्रबाहु गुफा - अग्रिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने यहां साधना तथा सल्लेखना लेकर देहोत्सर्ग किया था, अतः यहाँ उनके चरण विद्यमान है।

2. चंद्रगुप्त बसदि - यह चंद्रगिरि पर्वत पर सबसे छोटा जिनालय है, इसे सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने स्वयं बनाया था। सम्राट चंद्रगुप्त के स्वर्गारोहण के लगभग 1500 वर्ष पश्चात् दासोज नामक शिल्पकार ने भद्रबाहु और चंद्रगुप्त की वह गौरव गाथा सुनकर और उससे प्रभावित होकर पाषाण फलकों पर अंकित कर दिया और उस शिलाफलक को चंद्रगुप्त बसदि में स्थापित कर दीर्घकाल के लिए गागर में सागर भरकर भद्रबाहु स्वामी के संघ के विहार की घटनाओं का अंकन कर सुरक्षित कर दिया।

3. चंद्रप्रभ बसदि - इसका निर्माण गंगनरेश शिवमार के द्वारा सन् 800 ई. में कराया गया।

4. कूगदेव स्तम्भ - इसका निर्माण गंगनरेश मारसिंह द्वितीय की मृत्यु के समय सन् 974 ई. में किया गया।

5. चामुण्डराय बसदि - गोमट स्वामी की स्थापना के बाद सन् 990 ई. में सेनापति चामुण्डराय ने चामुण्डराय बसदि का निर्माण कराया। बाद में सन् 995 ई. में चामुण्डराय के पुत्र जिनदेव ने ऊपर पार्श्वनाथ की वेदी बनवाई।

6. शासन बसदि - 11 वीं शताब्दी के अतः में चंद्रगिरि पर्वत पर गंगराज सेनापति ने शासन बसदि का निर्माण कराया।

7. कत्तलेबसदि- सेनापति गंगराज ने12 वीं शताब्दी में निर्माण कराया।

8. सवति गंध वारण बसदि - होप्पसल नरेश विष्णुवर्द्धन की पत्नी महारानी शान्तलादेवी ने इस जिनायतन का निर्माण सन 1122 ई. में कराया।

9. तेरिग बसदि - यह जिनालय तेरु अर्थात एक रथ के आकार का बना है इसलिए तेरिग बसदि के नाम से प्रसिद्ध है। इसका निर्माण होयसल सेठ की माता माचिकब्बे और नेमिसेठ की माता शान्ति कब्बे ने सन् 1125 ई. में करवाया।

10. पार्श्वनाथ बसदि - इसका निर्माण सन् 1128 ई. में हुआ।

11. महानवमी मण्डप - इसका निर्माण एक नागदेव मंत्री ने सन् 1174 ई. में हुआ।

12. एरडुकट्टे बसदि - गंगराज सेनापति की पत्नी लक्ष्मी ने करवाया।

13.मज्जिगण बसदि - इसका निर्माण मज्जिगण ने12 वीं शताब्दी में करवाया। 15 वीं और 16 वीं शताब्दी में 14 नं. शान्तिनाथ जिनालय 15 नं. पार्श्वनाथ बसदि एवं 16 नं. शान्तिश्वर बसदि का निर्माण हुआ।

विन्ध्यगिरि के 8 जिनालय - यह पर्वत प्राचीन समय से दोड्डबेट्ट के नाम से जाना जाता था। इसे इंद्रगिरि भी कहा जाता है। यह पर्वत समुद्र तल से 3347 फुट तथा मैदान से470 फुट ऊँचा है। यहाँ 8 जिनायतन है।

1.गोमट स्वामी मन्दिर- विश्व की आश्चर्य कारी 57 फुट की खडगासन भगवान बाहुबली की अत्यन्त मनोहारी प्रतिमा है। इस प्रतिमा को गंगनरेश के महामात्य चामुण्डराय ने 981 ई. में बनवाया था।

2. 24 तीर्थंकर बसदि - यह देवालय 16 वीं शताब्दी में बनवाया गया।

3. ओदेगल बसदि - इसे त्रिकूट बसदि भी कहते हैं।

4.त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ - यह स्तम्भ अधर में हैं। इसके नीचे से रूमाल निकाला जा सकता है। यह चामुण्डराय ने बनवाया था। इस स्तम्भ की पीठिका की दक्षिण दीवाल पर चामुण्डराय और आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती की मूर्ति उत्कीर्ण है।

5. चेणन्न बसदि - इसका निर्माण 16 वीं शताब्दी में चेन्नन्न ने कराया था।

6. सिद्धर बसदि - इसका निर्माण 16 वीं शताब्दी में हुआ। इसमें सिद्ध भगवान की प्रतिमा विराजमान है।

7. अखण्ड बागिलु - यह एक दरवाजे का नाम है, वह दरवाजा एक अखण्ड शिला को काटकर बनाया गया है, इसलिए इसका नाम अखण्ड बागिलु है। इसके ऊपरी भाग पर लक्ष्मी की मूर्ति है जिसे दोनों ओर से हाथी स्नान करा रहा है। इस दरवाजे का निर्माण 11 वीं शताब्दी में सेनापति चामुण्डराय ने कराया था।

8. सिद्दर गुण्डू - अखण्ड बागिलु की दाहिनी ओर एक वृहद शिला है।जिसे सिद्धर गुण्डू (सिद्ध शिला) कहते हैं। इस पर अनेक शिलालेख हैं तथा जैनाचार्यों के चित्र है।

श्रवणबेलगोला नगर के 8 जिनायतन :-

1. अक्कन बसदि - यह नगर का सबसे प्राचीन जिनालय है।यह होय्यसल शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका निर्माण गोमटस्वामी की स्थापना के 100 वर्ष के भीतर बन 1025 ई. में किया गया।

2. नगर जिनालय - इसका निर्माण 1060 ई. में हुआ।

3. भण्डारी बसदि - यह श्रवणबेलगोला का सबसे बड़ा मन्दिर है । इसका निर्माण होय्यसल नरेश नरसिंह प्रथम के भण्डारी हुल्लू द्वारा 1159 ई. में किया गया है। इसमें श्याम पाषाण की 24 प्रतिमायें है। इसलिए इसे भण्डारी बसदि एवं चौबीसी मंदिर कहा जाता है। राजा नरसिंह ने इस जिनालय को भव्य चूड़ामणि नाम देकर वन्दना की थी।

4. सिद्धांत बसदि - प्राचीन समय में इसी जिनालय के एक बंद कमरे में धवला, जय धवल, महाधवल आदि अत्यन्त दुर्लभ ग्रन्थ रखे जाते थे, जो बाद में मूडबर्दी में भेजे गए। इसलिए इसका नाम सिद्धांत बसदि पड़ गया। इसका निर्माण 13 वीं शताब्दी में हुआ।

5. दानशाला बसदि - यहां पहले दान दिया जाता होगा इसलिए इसका नाम दानशाला बसदि पड़ गया। इसका निर्माण लगभग 13-14 शताब्दी में हुआ।

6. मंगायी बसदि - इसका निर्माण 16 वीं शताब्दी में अभिनव चारूकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य मंगायी न बनवाई थी

7. मठ मन्दिर - यह यहाँ के गुरु का मन्दिर कहा जाता है चामुण्डराय ने गोम्मटेश्वर भगवान की मूर्ति का निर्माण कराकर गुरु सिद्धांत चक्रवर्ती को यहाँ का मठाधीश नियुक्त किया था।

8. कल्याणी सरोवर - यह नगर के बीचों -बीच एक छोटा-सा सरोवर है। इसका निर्माण सन् 1572 ई. से1704 के बीच में चिक्कदेव राजेन्द्र ने करवाया था।

जिनवाणी का रसास्वादन - श्रवणबेलगोला में अनेक आचार्यों ने जिनवाणी का प्रसाद अपने शिष्यों में वितरित किया है।

अर्द्धशुष्क ताड़पत्रों पर तीक्ष्ण- लेखनी द्वारा, अनेकों मुनिराज यहाँ एकान्त में बैठकर, आगमशास्त्रों का अंकन किया करते थे। सहस्रों ग्रन्थों का लेखन श्रवणबेलगोला के प्रांगण में हुआ है। यहाँ पठन-पाठन और विचार विमर्श के लिए अन्यत्र से भी अनेक शास्त्र समय-समय पर लाए जाते रहे हैं ।

धवला, जयधवल, महाधवल जैसे महान ग्रन्थों को विधर्मियों की प्रलयकारी दृष्टि से बचाकर अनेक शताब्दियों तक श्रवणबेलगोला के अंक में ही सुरक्षित रखा गया था।

गुरुओं की चरणरज - श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु की समाधि के उपरान्त् अनेक पदचिन्हों की वन्दना का संकल्प लेकर इस पवित्र समाधि गुफा में बैठकर एक बार साधना करने की अभिलाषा लेकर मूल परम्परा के प्रायः सभी महान आचार्य समय-समय पर पधारते रहे हैं, और अपने पावन चरणों के पुण्य स्पर्श से श्रवणबेलगोला को पवित्र करते रहे हैं ।

संघनायक विशाखाचार्य यहाँ दो बार पधारे। षट खण्डागम के सूत्रकार आचार्य पुष्पदन्त और आचार्य भूतबली ने भी आचार्य भद्रबाहु के चरणों की वन्दना की थी।

आचार्य पद्मनन्दी अर्थात् आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी भी यहीं कंदराओं में बैठकर अपने पाहुड़ ग्रन्थों की आवृत्ति करते थे। गृद्ध पिच्छाचार्य उमास्वामी ने महीनों तक भद्रबाहु गुफा में ध्यान किया। स्वामी समन्तभद्र को इस ऋषिगिरि का शांत निराकुल वातावरण तपस्या के लिए अधिक उपयुक्त लगा था। उन्होंने भी यहाँ गंधहस्ति महाभाष्य की विवेचना की।

आचार्य पूज्यपाद स्वामी जो मुनि दीक्षा के पूर्व कुशल वैद्य थे। जिन्होंने सर्वार्थ सिद्धि जैसे महान ग्रन्थ की रचना की थी। वे दुर्लभ वनस्पतियाँ, औषधियों की शोध में अनेक बार यहां आए।

आचार्य वीरसेन, आचार्य जिनसेन, आचार्य गुणभद्र स्वामी की महती श्रुतसेवा का उल्लेख भी शिलालेखों में सुरक्षित हैं।

सिद्धांत चक्रवर्ती श्रुतज्ञ आचार्य नेमिचन्द्र स्वामी की तो श्रवणबेलगोला साधना स्थली रही है। उन्होंने प्रायः गोम्मटसार और त्रिलोकसार का लेखन यहीं किया।

इस प्रकार जिन-जिन करुणायतन मुनिराजों ने अपनी पावन चरणरज से श्रवणबेलगोला की नीरस और कठोर देह को पवित्र की है। उनके परिमाण को संख्या में बांधना संभव नहीं है .

श्रवणबेलगोला का कण-कण, निर्ग्रन्थ वीतरागी मुनियों ने ईर्या मर्यादित पग विन्यास से प्रतिक्षण तृप्त होता रहा है। श्रवणबेलगोला की गोद में ही मुनियों के श्रमशील शरीर को ऊष्मा और तप पूतदेह को शीतलता मिलती रही है।

इस प्रकार देव, शास्त्र, गुरु की पावन त्रिवेणी का संस्पर्श अतीत में अनवरत् रूप से मुझे प्राप्त हुआ। वर्तमान में प्रचुरता पूर्वक प्राप्त हो रहा है और विश्वास है कि भविष्य में युगान्त तक वह अविच्छिन्न रूप से मिलता रहेगा।

कविता

अस्तित्व मिटाती नदी

हरयाली की छाती पर दूध की सी धारा
रेंगते रेंगते आगे बढ़ती चली जा रही
लोग कहते नदी यह सरपट समुद्र से मिलने
बही जा रही है विशाल बनने का
सपना संजोये अपने अस्तित्व को
मिटाने के लिये तैय्यार है उमंग लिये समर्पण लिये
सागर में समाने लिये तैय्यार है
बड़े बनने की यही तो कला है
इससे बड़ा काम और क्या भला है ।

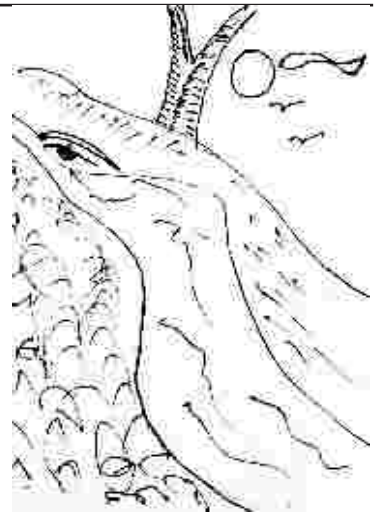

आओ सीखे : जैन न्याय

एक हेतु अनुमान अवयववाद (बौद्ध)

बौद्ध दर्शन अनुमान के अवयव के अतंर्गत मात्र हेतु को ही स्वीकार करता है, वह पक्ष प्रयोग को प्रयोजन रहित मानता है। अपनी इस मान्यता का औचित्य सिद्ध करने के लिये कुछ तर्क देता है वे इस प्रकार से हैं - तर्क

1. केवल हेतु के प्रयोग करने से गम्यमान पक्ष में साध्य का बोध स्वयं हो जाता है।

2. संभवत कोई कहे कि पक्ष का प्रयोग करने से साध्य की प्रतिपत्ति होती है अतः पक्ष का प्रयोग ठीक ही है और निः प्रयोजन नहीं हैं, किन्तु ऐसा कहना ठीक नहीं हैं; क्योंकि पक्ष के कहने से साध्य की प्रतिपत्ति संभव नहीं होती है यदि संभव है, तो केवल पक्ष के कहने से ही साध्य अर्थ का बोध हो जाता है अथवा हेतु सहित पक्ष के कहने से साध्य का बोध होता है। यदि केवल पक्ष के कहने से साध्य अर्थ का बोध होता है तो हेतु कहना व्यर्थ हो जायेगा; क्योंकि प्रतिज्ञा माननी चाहिये। अतः प्रतिज्ञा का प्रयोग व्यर्थ है।

जैनपक्ष बौद्ध विचारकों के तर्क सुनने के बाद जैनाचार्य उत्तर देते हुये प्रतिज्ञा और हेतु को अनुमान मानते हुये अपने प्रमाण प्रस्तुत करतेहैं । वे तर्क इस तरह के हैं -

1) बौद्ध लोग पक्ष प्रयोग को अनावश्यक क्यों मानते हैं ? उनके संभावित कारण और उनमें आने वाली आपत्ति बाधा की तालिका इस प्रकार से हैं -

क्र.	कारण	बाधा
1.	क्या वह साध्य की सिद्धि में रुकावट डालता है।	यह कारण ठीक नहीं माना जा सकता है क्योंकि जब वादी सम्यक् माध्यम द्वारा स्वपक्ष की सिद्धि करता है । तो पक्ष का प्रयोग साध्य की सिद्धि में रुकावट नहीं डाल सकता है।
2.	प्रकरण से ही पक्ष प्रयोग की सिद्धि होती है।	यह विकल्प भी ठीक नही हैं, क्योंकि प्रकरण से जैसे पक्ष के प्रयोग का ज्ञान स्वयं हो जाता है, वैसे ही हेतु आदि का ज्ञान भी स्वयं हो जाता है । अतः अनुमान में हेतु का प्रयोग भी नहीं करना चाहिये।
3.	पक्ष का प्रयोग प्रयोजन	यह कथन भी सिद्ध नहीं होता है; क्योंकि पक्ष का प्रयोग करने से सुनने समझने वाले को विशेष बोध होता है। यही पक्ष का प्रयोजन है।
4.	इस हेतु के प्रयोग से प्रयोजन का साधक है इसलिये अनावश्यक है।	प्रतिज्ञा के प्रयोग के बिना उसे प्रकृत अर्थ का विशेष ज्ञान नहीं होता है। यदि प्रतिज्ञा व्यर्थ है तो हेतु भी व्यर्थ होगा।

3) यदि प्रतिज्ञा का प्रयोग व्यर्थ सिद्ध होता है तो हेतु का प्रयोग भी व्यर्थ सिद्ध होगा।

4) यदि पक्ष का कथन न किया जायेगा तो हेतु में अनेकांतिक दोष भी हो सकते हैं। क्योंकि पक्ष/प्रतिज्ञा के बिना हेतु के गुण दोषों का वास्तविक विचार नहीं किया जा सकता है।

5) यदि केवल पक्ष से ही साध्य का प्रतिपादन हो जायेगा तो हेतु का प्रयोग व्यर्थ है यह बौद्ध का कथन ठीक नहीं हैं क्योंकि कोई भी कारण अकेले कार्य नहीं कर सकता है।

6) साध्य की सिद्धि पक्ष हेतु की अपेक्षा करता है अतः वह साध्य की सिद्धि में कारण नहीं हैं, इस तरह बौद्ध के कथन में सबसे बड़ी बाधा यह आती है कि बौद्धों के द्वारा कल्पित निर्विकल्प प्रत्यक्ष अर्थ की सिद्धि में सविकल्प प्रत्यक्ष की अपेक्षा करता है अतः निर्विकल्प प्रत्यक्ष को भी अर्थ की सिद्धि में कारण नहीं मानना चाहिये।

7) यदि पक्ष नहीं माना जायेगा तो सपक्ष विपक्ष की व्यवस्था कैसे बनेगी ? क्योंकि सपक्ष विपक्ष की व्यवस्था पक्ष पूर्वक ही बनती है।

8) पक्ष का प्रयोग यदि अनुचित है वो शास्त्र आदि में उसका प्रयोग नहीं होना चाहिये।

9) वाद में भी प्रतिज्ञा का प्रयोग होना चाहिये, क्योंकि वाद में भी वाद करने वाले दूसरों का उपकार करने के लिये प्रवृत्त होते हैं।

निष्कर्ष - हेतु की तरह पक्ष या प्रतिज्ञा का प्रयोग आवश्यक है।

कविता

ओ रसना

ओ रसना विद्या-विद्या बोल-बोल
विद्यासागर बोल की रसना हर पल अमृत घोल
ओ रसना.....
विद्यासागर गुरु हमारे करते जन कल्याण
इनकी वाणी सुनकर सबजन पा जाते शिवथान
ओ रसना.....
अहंकार का घूंघट खोलो गुरु दर्शन अब कर लें
गुरु भक्ति का अमृत पीले, मन पावन कर लें
झूम के नाचो गुरु भक्ति में, गुरु की जय-जय बोल
ओ रसना.....
गुरु चरणों की शरण मिले तो तो होगा बड़ा पार
मोह और ममता मिट जाये मिलता जीवन सार
समता के खुलते दरवाजें पद मिलता अनमोल
ओ रसना विद्या.....
विद्यासागर बोल....

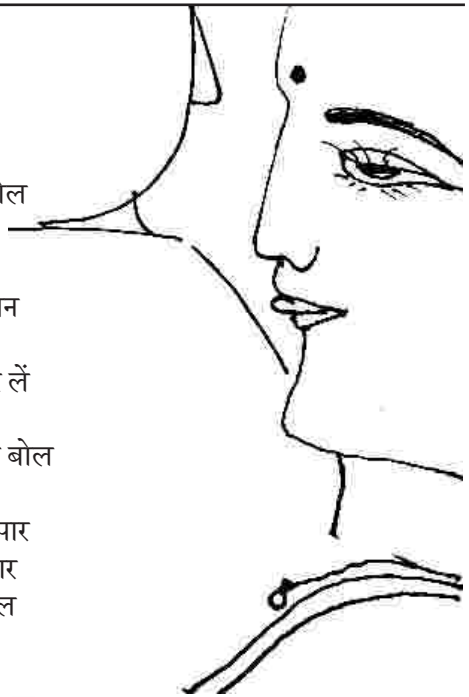

आजादी की लड़ाई में जैन महिलाओं की सहभागिता

❊ डॉ. ज्योति जैन, खतौली ❊

आधुनिकतरण, भूमंडलीकरण के बीच महिलाओं का बदलता मानस पटल आधी आबादी को जागरूक बना रहा है, गतिशील बना रहा है। भारतीय समाज एवं संस्कृति में पुरुष-नारी दोनों की भूमिका को कंधे मिलाकर चलने जैसा माना गया है। भारतीय संविधान में भी स्त्री-पुरुष दोनों को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकार समान रूप से प्राप्त हैं। आज शिक्षा का बढ़ता दायरा एवं महिला संगठनों एवं अधिकारों के प्रति चेतना से महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है।

जैन परम्परा में नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। धर्म, कला,संस्कृति आदि में नारी को समान अधिकार प्राप्त है। जैन धर्म की इसी उदार भावना जहाँ नारी को पारिवारिक, सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाया वहीं उसे आत्मकल्याण की ओर भी प्रेरित किया। भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर तक और भगवान महावीर से लेकर आज तक जैन नारियों के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण की परम्परा विरासत से चली आ रही है।

हमारा देश एक लम्बे समय तक पराधीन रहा और स्वतंत्रता के लिये संघर्ष चलता रहा। आजादी के इतिहास और नवराष्ट्र निर्माण की धारा में देश की महिलाओं के अवदान का सही-सही आंकलन नहीं हो पाया है। जैन महिलाओं का मूल्यांकन तो न के बराबर है। प्रस्तुत लेख के माध्यम से उनके अवदान को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

इतिहास साक्षी है कि स्वाधीनता के इस महासमर में महिलाओं ने अपनी सामाजिक सीमाओं को ध्यान में रखते हुये पूरे जोश-खरोश के साथ कदम से कदम मिलाकर राजनैतिक गतिविधियों में हिस्सा लिया। उस समय स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर की चार दीवारी तक ही सीमित थी। फिर भी महिलाओं ने स्वतंत्रता आन्दोलनों में हिस लिया। अंग्रेजों की दासता से मुक्ति पाने की इस लड़ाई में अनेक वीर महिलायें सामने आयी, जिन्होंने अपना सब कुछ अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ाई में समर्पित कर दिया। स्वतंत्रता की इस लड़ाई में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उनके योगदान को समाज और देश कभी नहीं भुला पायेगा।

स्वाधीनता के समय में जब अनेक नारियों ने अपनी सक्रियता दिखाई तो जैन महिलायें भी सामने आयी। यद्यपि यह वह समय था जब महिलाओं में विशेष जागृति नहीं थी। परम्परागत रूढ़िवादी परिवारों में घूंघट आदि प्रथा के कारण घर से बाहर निकलकर काम करना ठीक नहीं समझा जाता था। फिर भी जैन महिलायें घर से बाहर निकली और आजादी की लड़ाई में सक्रिय बनी। आजादी के दीवानों और क्रान्तिकारियों के परिवार तो अपने आप ही इस लड़ाई में शामिल हो गये थे।

जैन महिलायें अपने राष्ट्र-प्रेम का परिचय देते हुये आंदोलनकारी गतिविधियों से जुड़ गयी। घर-घर चरखे काते जाने लगे और खादी एवं स्वदेशी भावना का प्रचार हुआ विदेशी कपड़ों की होलियां जलाई गयी, शराब की दुकानों पर धरना दिया गया। महिलाओं के शिक्षित वर्ग ने लेख

गीत भाषण आदि के माध्यम से आंदोलन की गति को बनाये रखा। महिलाओं की सक्रियता यहाँ तक हो गयी कि सभायें, धरना, जुलुस आदि निकालना साथ ही लाठी, गोली खाकर जेल तक जाने का कार्यक्रम शुरु हो गया। इस तरह इन महिलाओं ने अपना सब-कुछ देश के लिये न्यौछावर करने की ठान ली। उनके जुझारू संघर्ष का चरित्र सदैव प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

आइये ! भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में समर्पित उन जैन वीर महिलाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें , जिन्होंने सक्रियता से भारत माँ को परतंत्रता की बेड़ियों से आजाद कराया।

आगरा की श्रीमति अंगूरी देवी, जिन्होंने आजादी के आंदोलन में वह अलख जगायी कि आगरा नगर इन्कलाब जिन्दाबाद के नारों से गूंज उठा। अपने पति महेन्द्र जैन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। सन् 1930 में एक सभा में भाषण करने के दौरान पुलिस ने गिरफ्तार कर इन्हें जेल भेज दिया। उस समय आप गर्भवती थी। नमक सत्याग्रह के दौरान आप पुनः गिरफ्तार हुई। 1932 के सत्याग्रह आंदोलन में आपने अनेक क्रांन्तिकारी गतिविधियों को अंजाम दिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी सक्रिय भूमिका निभायी। उनका कहना था कि अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को सहेज कर रखना प्रत्येक महिला का कर्त्तव्य है।

- अजमेर के प्रसिद्ध देश-प्रेमी जीतमल लूठिया की धर्मपत्नी श्रीमति सरादार कुंवरबाई लूठिया राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के कारण अपने तीन वर्षीय पुत्र के साथ जेल में रही।

- मेरठ की श्रीमति कमला देवी को सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण जेल की सजा भुगतनी पड़ी।

- कानपुर के प्रसिद्ध देशभक्त वैद्य कन्हैया लाल जैन की धर्मपत्नी गंगाबाई जैन ने न केवल स्वदेशी का प्रचार किया, अपितु साइमन कमीशन वापिस जाओ, दांडी यात्रा, नमक सत्याग्रह आदि आंदोलनों द्वारा महिलाओं को जागृत किया एवं कारावास झेलना पड़ा।

- नागपुर की श्रीमति धनवतीबाई रांका और उनकी देवरानी श्रीमति सरस्वती देवी रांका राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेने के कारण अनेक बार जेल गयी।

- 1942 के राष्ट्रव्यापी आंदोलन में अहमदाबाद की जयावती संघवी शहीद हो गयी।

- प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी पं. परमेष्ठीदास जी की पत्नी श्रीमति कमला देवी को सभाबन्दी कानून भंग करने के कारण पांच महीने साबरमती जेल में रहना पड़ा।

- कानपुर की श्रीमति कमला सोहनराज ने राष्ट्रीय आंदोलनों में समर्पित भाव से अपनी भूमिका निभायी एवं जेल यात्रा की।

- पूज्य बापू के आश्रम में रहने वाली कंचन जैन ने भी आंदोलन के दौरान कारावास की सजा भोगी।

- ललितपुर की श्रीमति केशरबाई ने तन-मन-धन से इस आंदोलन में भाग लिया।

- कलकत्ता की श्रीमति गोविंद देवी पटुआ ने बड़े उत्साह से आंदोलन में भाग लिया और जेल यात्रा की।

- उज्जैन की श्रीमति ताराबाई कासलीवाल ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और जेल यात्रा की।

- ग्राम लथकाना जिला जबलपुर की श्रीमति नन्हीबाई ने 1942 के आंदोलन में अनेक माह जेल में बिताये।

- वर्धा की श्रीमति प्रेम कुमारी विशारद नागपुर जेल में रहीं।

- नीमच की श्रीमति फूलकुंवर बाई चौरड़िया को अनेक बार पुलिस यातनायें सहनी पड़ी।

- महाराष्ट्र की क्रांतिकारी महिला राजमति पाटिल ने क्रांतिकारी के साथ हथियार चलाना सीखा और आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

- अहमदाबाद की सरला देवी साराभाई ने दांडीयात्रा के समय महिलाओं का नेतृत्व किया था।

- सहारानपुर के सुप्रसिद्ध व संविधान निमात्री सभा के सदस्य बाबू अजित प्रसाद जैन की धर्मपत्नी श्रीमति लक्ष्मी देवी भी आंदोलन के समय गिरफ्तार हुई।

- अम्बाला की श्रीमति लेखवती जैन ने काँग्रेस के लाहौर अधिवेशन में सक्रिय भूमिका निभायी।

- नागपुर की श्रीमति विद्यावती देवड़िया समर्पित देश-प्रेम से भरी कविताओं के माध्यम से जन-जन में राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाया।

- जाआद हिन्द फौज की रानी झांसी रेजीमेन्ट में दो जैन महिलायें श्रीमति लीलावती और रमा बहन ने अपनी सक्रिय भूमिका निभायी।

- जैन बालाश्रम की संस्थापिका माँ चंदाबाई के योगदान को कैसे भुलाया जा सकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी पं. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस आदि नेतागण राष्ट्रीय आंदोलन के जमाने में जैन बालाश्रम आकर ठहरते थे। माँ चंदाबाई ने अपनी लेखनी के माध्यम से जैन महिलादर्श पत्र द्वारा समाज की नारियों को जागृत किया, नयी दिशा प्रदान की।

- भारत सरकार की पद्म श्री उपाधि से अलंकृत महाराष्ट्र की पण्डिता सुमतिबाई शाह ने नारी जागरण की दिशा में अनेक कार्य किये। शोलापुर का श्राविकाश्रम आज भी हजारों नारियों को पथ-प्रदर्शक बना हुआ है।

- आंदोलन में भाग लेने वाली सभी महिलाओं के योगदान की चर्चा इस संक्षिप्त लेख में संभव नहीं है। जैन समाज की अनेकानेक समर्पित महिलायें रही है, जिन्होंने नारी जागरण की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। राजनैतिक चेतना के साथ-साथ शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से जैन समाज की महिलाओं में जो शिक्षारूपी बीज बोये उसका ही प्रतिफल है कि आज देश की जनगणना में जैन नारियां सर्वाधिक शिक्षित हैं। बदलते परिवेश में महिलाओं का समाज में दायरा बढ़ता ही जा रहा है। प्रत्येक क्षेत्र में उनकी सहभागिता दिखाई दे रहा है। महिला संगठनों ने शोषण के विरुद्ध आवाज उठायी है।

महिला समान देश की शक्ति है। देश की राजनीति में दलबदलुओं, धनबल और भुजबलों की संख्या बढ़ती जा रही है। राजनीति और प्रशासन के प्रति नारियों की संवेदनशीलता एवं कर्त्तव्य बोध सैद्धांतिकब राजनीति की मजबूती प्रदान करेगा। आज देश में महिलायें बलात्कार हिंसा, यौन उत्पीड़न, दहेन, भ्रूणहत्या जैसी समस्याओं से जूझ रही है। आओ हम सब मिलकर जागरूक बने और ऐसे जुझारू संगठन बनाये, विकसित करें कि नारी को स्वतंत्रता और अस्मिता सुरिक्षत रहे।

कहानी

पारुल की पतंग

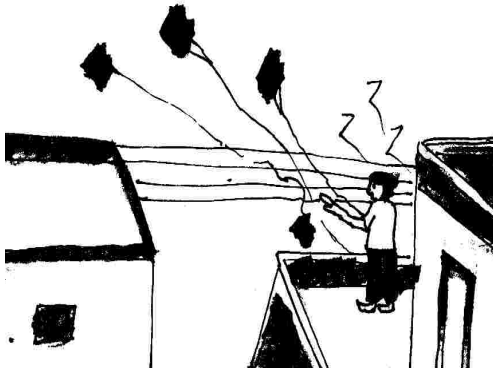

कोहरा छट चुका था। आसमान समुद्र सा नीला दिखने लगा। नीले गगन में उड़ने वाली पतंगें ऐसे लग रही थीं जैसे समुद्र या किसी झील में मछलियाँ तैर रहीं हो। उत्तरायण का पर्व और पतंग एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। पतंग पर्व की प्रसिद्धी बढ़ाने में गुजरात सरकार भी अपने प्रयास कई तरह से करती है। इस वर्ष के पतंग पर्व का उद्घाटन साबरमती के पावन तट पर गृहमंत्री अमित शाह ने पतंग उड़ाकर किया था। पतंग की कला बाजी प्रदर्शित करने अहमदाबाद देश विदेश के सैकड़ों कलाकार हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी आये हुये थे। पतंग उत्सव का कार्यक्रम आज तक चैनल पर लाइव चल रहा था अपने पास उमेश के साथ प्रियंक भी कार्यक्रम देख रहा था अंजली कश्यप ने अपने एक पेकेज साथ सूचना दी कि बच्चों नजर अवश्य रखें कहीं पतंग लूटने के चक्कर दुर्घटना के शिकार न बन जायें। उन्होंने आगे कहा चाईनीज माँझे का प्रयोग न करें इसमें उलझने पक्षी अपनी नाहक ही जान गंवा बैठते हैं। पक्षियों को भी उत्तरायण दिन खुले आसमान पर तो पक्षियों का ही स्वाभाविक अधिकार है हम उस पर पतंग उड़ाकर अनधिकृत चेष्टा ही तो कर रहे हैं। बिजली तारों में उलझी पतंग को निकालने की चेष्टा अकेले में बच्चे न करें क्योंकि कोई भी हादसा हो सकता है।

टीवी को बंद कर उमेश ने घड़ी के तरफ देखा और कहा अभी 9 ही बजे प्रियंक बेटा जरा देखो तो मम्मी तेरी क्या कर रही है। फाफड़ा जलेबी तैय्यार हो गये कि नहीं। प्रियंक पापा की आज्ञा मान तुरंत किचिन की तरफ लपका और लौट भी आया उमेश ने पूँछा क्यों प्रियंक क्या हुआ प्रियंक ने कहा ने कहा पापा किचिन में तो कोई नहीं है।

क्यों रे मम्मी कहाँ गई प्रियंक ने कहा पापा पूजन की थाली नहीं दिख रही है लगता मम्मी मंदिर निकल गई है। हाँ सच हो सकता है।

जब मेरी मम्मी उत्तरायण के दिन

मंदिर जाती थी तब मैं धीरे से किचिन में घुस जाता था और बड़ी कलाकारी से चार जलेबी खा लेता था खूब मजा आता था परन्तु बेटा एक बात थी मैं पकड़ नहीं जाता था उमेश की बात सुनकर प्रियंक के चेहरे पर चमक आ गई वह चहक बोला पापा मैं तो चार जलेबी खा नहीं पाऊंगा मैं सिर्फ दो जलेबी खा लेता हूँ और बढ़िया मुँह पोंछकर आपके पास आकर बैठ जाऊंगा।

उमेश ने कहा बेटा अगर पकड़े गये तो ? मम्मी ! तेरी धोबना से धुलाई होगी मैं तुझे बचा नहीं पाउंगा तेरी मम्मी के बीच का एक समझौता है कि यदि प्रियंक को मैं डाटू या मारूँ तो आप बीच में नहीं बोलेंगे जब आप डाँटे या मारेंगे तो मैं बीच में नही पडूँगी।

प्रियंक ने कहा आज मेरे खातिर आप समझौता तोड़ देना। उमेश ने सिर हिलाकर कहा नहीं यह सब करना मुझे संभव नहीं है। ठीक है पापा जी मैं भी तो आपका ही बेटा हूँ कलाकारी दिखाकर आता हूँ दो जलेबी जरूर खाऊँगा और पकड़ा नहीं जाऊँगा। ठीक है बेटा जो तुझे समझ में आये वह कर ले परन्तु तेरी पिटाई होगी तो मैं बचा नहीं पाऊँगा।

प्रियंक भी बोला ठीक है पापा जो होगा निपटेंगे और प्रियंक ने किचिन में प्रवेश किया और दो जलेबी खाकर मुँह पोंछते हुये उमेश पास आकर बैठ गया उमेश ने मुस्कुराते हुये पूँछा क्यों बेटा हो गई जुगाड़। थोड़ी देर में नूतन मंदिर से लौटकर आ गई और पूँछने लगी क्यों भाई मेरे किचिन में कौन गया था। उमेश ने थोड़ सा मुस्कुराकर कहा नूतन बेन मैं तो गया नहीं था मैं अपने सौफा पर से उठा नहीं यहीं से टीवी देखी और यहीं बैठकर पूरा अखबार पढ़ा मैं तो यहाँ से उठा नहीं।

हाँ प्रियंक को जरूर मैंने तुम्हें देखने को भेजा था मालूम नहीं प्रियंक किचिन गया कि नहीं गया प्रियंक जोर से चिल्ला कर बोला पापा आप मुझे नाहक ही पिटवाने फिर रहे हो आप के कहने से मैं किचिन देखने जरूर गया था पर बाहर से ही लौट आया और आपको बता दिया था कि किचिन मम्मी नहीं फिर आप मुझे जबरन क्यों लपेट रहे हैं। इस परिवार में क्या पिटने के लिये मैं बचा हूँ आप लोगों ने दोनों बहिनों को तो हॉस्टल में भेज दिया उन्हें उत्तरायण पर बुलाया नहीं और बचा अकेला मैं तो मुझ पर झूठे इल्जाम लगाकर मुझे भी हॉस्टल भेजना चाहते हैं। पापा ! मैं कोई हॉस्टल में नहीं जाने वाला।

उमेश ने कहा जाना तुझे भी पडेगा पढ़ाई तो वहीं होती है।

उमेश की बात काटते हुये नूतन बोली नहीं प्रियंक तुझे मैं कभी हॉस्टल नहीं भेज सकती क्योंकि तेरे बिना मेरा एक पल भी रहना मुश्किल है परन्तु तूँ अगर पढ़ाई नहीं करेगा तो फिर किसी भी हॉस्टल में भेजना मेरी मजबूरी ही होगी।

मम्मी आज मैं नहीं तो चल जायेगा न नहीं बेटा अभ्यास और अध्ययन रोज करना चाहिये मम्मी आज उत्तरायण का पर्व है न सब पतंग उड़ायेंगे और मैं पढूँगा तो क्या ये ठीक रहेगा।

चलो कोई बात नहीं आज तूँभी जा पतंग उड़ा पर ये ध्यान रखना है बिजली तारों से दूर रहना है उनके पास नहीं जाना है समझे।

जी मम्मी बिल्कुल बिजली तारों से खूब दूर रहूँगा उमेश नूतन तूँ किसी भी प्रकार की चिंता मत कर मैं हूँ न मैं भी पूरे दिन भर प्रियंक के साथ रहूँगा। आज मैं भी पतंग का आनंद लूँगा और प्रियंक पर भी पूरी नजर रखूँगा।

प्रियंक और उमेश दोनों साथ साथ छत पर चढ़ गये उमेश ने देखा छत पर तो धूल ही धूल है उसने प्रियंक से कहा बेटा जरा नीचे से झाडू लेकर तो आ हम लोग पहले छत साफ करेंगे फिर बाद में पतंग उड़ाने का मजा लेंगे । प्रियंक लपक कर नीचे गया और सीढ़ियों झाडू ठोक ठोक कर ऊपर चढ़ने लगा दोनों पिता पुत्र ने मिलकर खूब अच्छी तरह से छत को साफ किया।

प्रियंक ने देखा कि एक मल्टी से पारूल भी पतंग उड़ा प्रियंक जोर से आवाज लगाई पारूल ! परन्तु उसकी तरफ से कोई आवाज नहीं आई फिर से प्रियंक ने कई बार पारूल की आवाज लगाई तब उस तरफ से भी आवाज आई प्रियंक भाई केम छे। तब प्रियंक ने भी कहा बहु सारो छे ! दोनों एक दूसरों को देखने में कुछ पल के लिये एक टक हो गये।

उमेश ने कहा क्यों रे प्रियंक ये पारूल कौन है तब प्रियंक ने कहा पापा बहुत अच्छी लड़की है पढ़ने में खूब होशियार है। मेरी और उसकी खूब दोस्ती जमती है। जब उमेश ने मजाक करते हुये कहा तो फिर तुम बड़े होकर उसी के साथ शादी करोगे । प्रियंक पापा जी आप भी खूब मजे लेते हो मैं अभी उम्र में कितना छोटा हूँ क्या इतनी सी उम्र में भी शादी की जाती है ? हाँ अगर आप कह देंगे तो बड़े होने पर मैं पारूल के साथ जरूर शादी कर लूँगा। सच बताऊँ तो वह मुझे बहुत चाहती है और मैं भी उसे।

उमेश और प्रियंक दोनों दिन भर पतंग के मजे लेते रहे प्रियंक को पतंग उड़ाने कला के सुर उमेश बखूबी सिखाते रहे । घड़ी में 5 कब बज गये मालूम नहीं चला। एक कबूतर के पंख मंझा फंसा और उसका पंख कट कर अलग फिक गया वह कबूतर आकर उमेश के छत पर गिरा उमेश ने अपने हाथ उठाया और बगल वाले छत पर डाल दिया और उस कबूतर को जीने मरने के लिये उसी के भरोसे छोड दिया उमेश के हाथ खून से लथपथ हो चुके थे प्रियंक ने देखा तो पापा आपको इस कबूतर पर थोड़ी सी भी दया नहीं आयी इसका हम चाहें तो थोड़ा सा उपचार कर सकते हैं या फिर इसे पक्षी घर में भिजवा सकते हैं। उमेश ने कहा बेटा तूँ कहाँ झमेले में पड़ रहा है ये तो

दुनिया है यहाँ तो रोज कोई तड़फता कोई गिरता कोई मरता है हम किस किसको देखेंगे चल तूँ तो अपनी पतंग उड़ा मैं नीचे जा रहा हूँ अभी आता हूँ।

उमेश अपने खून से लथपथ हाथ धोने नीचे जाता है हाथ धोकर जब लौट ही रहा थ तभी उमेश के साथ काम करने वाली महिला चेतना का फोन आ गया उमेश चेतना से बात करने इतने डूब गये कि वे भूल गये कि प्रियंक छत पर क्या कर रहा है। प्रियंक आखरी पतंग भी किसी ने काट अब निराश होकर प्रियंक अपना मांझा घिर्री लपेट लिया था और छत पर टहलने लगा आसमान में उड़ने वाली पतंगों को निहार कर आनंद ले रहा था कि थोड़ी ही देर में आवाज आई कि प्रियंक भाई तुम्हारी छत पर मेरी पतंग गई प्रियंक के कानों पर पहचानी आवाज पारूल की पड़ी तब प्रियंक ने कहा पारूल तेरी पतंग मुझे पहली बार मिलेगी मैं अब इसे खुद उड़ाऊंगा तुझे नहीं दूँगा क्योंकि मेरी पूरी पतंगें कट कर समाप्त हो चुकी हैं। पारूल ने कहा नहीं प्रियंक प्लीज पतंग वापिस कर देना।

उधर उमेश अपनी महिला सहकर्मी से मोबाईल पर बात करने में लीन थे तो प्रियंक पतंग निकालने की जुगाड़ में लगा हुआ था।

कटी पतंग हवा के झौकों में उड़ती उड़ती बिजली के तारों में उलझ गई। प्रियंक भी पतंग की लालच में दौड़ता हुआ कब हाईटेंशन लाईन के नीचे चला गया उसे पता नहीं चला इस बिजली के तारों में 14000 बॉल्टेज का करंट दौड़ रहा था फिर क्या था प्रियंक तारों की तरफ खिच गया बहुत तेज स्पारकिंग हुई यह आवाज उमेश के कान में पड़ी उमेश तुरंत सीढ़ी पर चढ़कर छत पर पहुँचा उसने देखा प्रियंक छत पर नहीं है। तड़ तड़ की आवाज सुनकर उमेश ने बिजली की तरफ देखा। तो वह देखता है कि प्रियंक के तारों जल रहा है। बहुत भीड इकट्ठी हो जाती है। उमेश चिल्लाता रोता रह जाता है। सभी लोग प्रियंक को बचाने का प्रयास अपने अपने तरीके से करते है परन्तु प्रियंक को बचाया नहीं जा सकता है। देखते ही देखते उमेश का इकलौता बेटा मौत के गाल में समा जाता है।

उमेश रोता बिलखता यही कहता रहा नूतन ने मुझे पहले ही सतर्क किया था कि पतंग उड़ाने में बिजली के तारों का पूरा ध्यान रखना प्रियंक तारों के पास न जायें। पर मैं थोड़ा सा मोबाईल पर बात करने में उलझ गया ओर मेरा प्राणें से प्यारा बेटा मेरे हाथों से निकल गया अब मेरा कौन बचा है नीचे गिरे प्रियंक देखकर नूतन के हाल बेहाल हो गये वह अचेत हो गई मुहल्ले की महिलायें नूतन की सम्हालने में लगी थी पूरे मुहल्ले में कोहराम मचा हुआ था सब कह रहे थे देखों वे फड़फड़ाती पतंग की लालच ने इस लाड़ले की जान ले ली।

हमारे गौरव

स्व. सेठ लक्ष्मीचंद्र जैन

दानवीर सेठ लक्ष्मीचंद्र जैन का जन्म दीवानगंज में हुआ था। आपका जीवन सादगी, सरलता एवं धार्मिकता से परिपूर्ण एक जीवन था।

आज से 40 वर्ष पूर्व जैन समाज में द्रव्य का सही दान गजरथ चलाने में समझा जाता था। लेकिन आपने इसके स्थान पर एक शैक्षणिक ट्रस्ट की स्थापना की। आपका यह निर्णय सच-मुच सराहनीय रहा। और आपको श्रीमंत की उपाधि से सुशोभित किया गया।

इसके बाद आपने जैनागम प्रकाशन के लिये आर्थिक सहायता प्रदान की, इसी के अंतरगत साहित्य का ताड़पत्रीय सबसे महान मूल ग्रंथ षटखंडागम का प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त आपने विदिशा स्टेशन के पास एक विशाल धर्मशाला का निर्माण कराया जिस पर लगभग चार लाख रूपये व्यय हुआ। ग्वालियर स्टेन ने आपको दानवीर की उपाधि से विभूषित किया था आपके द्वारा स्थापित ट्रस्ट से अब तक 50 हजार रूपये की छात्रवृत्तियां दी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त आपने चिकित्सा सुविधा के लिये भी काफी धन दिया।

ऐसे महान व्यक्ति का 1966 में स्वर्गवास हो गया। परिषद का भेलसा अधिवेशन आपके प्रयासों से सफल हुआ व परिषद की गतिविधियों में सहयोग प्रदान करते रहे।

कविता

नजारे बदल गये

नजर क्या बदली उनके नजारे बदल गये।
बदनसीबी में तो दरिया कि किनारे बदल गये॥
मौफा परस्ती के दौर में गैरों की क्या कहें।
जिन्दगी में तो अपनों के इशारे बदल गये॥
जिनके भरोसे चल रही थी अब तलक जिन्दगी।
मौत के आते ही सबके सहारे बदल गये॥
रात जिसके साये में काटते थे रोज-रोज।
सुबह क्या हुई उनके उजारे बदल गये॥
खुदा की खुदाई की खुली जब से असलियत।
तब से पूजा घरों के पुजारे बदल गयें॥

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

जैन व्यक्तित्व
श्रीमद् राजचंद्र जी

श्रीमद् राजचंद्र एक जैन कवि, दार्शनिक, विद्वान और समाज सुधारक थे। वह एक मात्र व्यक्ति थे जिन्होंने सात साल की उम्र में जाति स्मरण ज्ञान (अपने पिछले जन्मों को याद रखने) का दावा किया। उन्होंने (मेमोरी रिटेंशन) अवधान (असाधारण स्मृति) का प्रदर्शन किया जिससे उन्होंने लोकप्रियता प्राप्त की लेकिन बाद में उन्होंने अपने आध्यात्मिक गतिविधियों के पक्ष में इसे हतोत्साहित किया। उन्होंने आत्म सिद्धि सहित कई दार्शनिक कवितायें लिखी। उन्होंने बड़ी संख्या में पत्र और टिप्पणियां भी लिखी और कुछ धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद किया। वह जैन धर्म पर अपनी शिक्षाओं और महात्मा गांधी के आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में सबसे अच्छी तरह जाने जाते हैं।

इनको शुरु में रायचंद्र भाई कहा जाता था बाद में संस्कृत के रूप में नाम बदलकर राजचंद्र और इनकी मृत्यु के बाद इनके शिष्यों के नाम के आगे सम्मान जनक शब्द श्रीमद् जोड़ा। इनका जन्म 9 नवंबर 1867 को मोरबी (गुजरात) के निकट एक बंदरगाह वावनिया में हुआ था। इनकी माता का नाम देवभाई था जो श्वेताम्बर जैन थी तथा पिता का नाम रविजी भाई था जो कि वैष्णों हिन्दू थे। जब इनकी उमर सात वर्ष थी इनके गांव के एक आदमी की मृत्यु हो गई। इन्हें नहीं पता था कि मृत्यु क्या होती है। इन्होंने अपने दादा से पूछा उन्होंने उत्तर से बचने के लिये इन्हें भोजन करने की सलाह दी लेकिन राजचंद्र ने उत्तर देने के लिये जोर दिया तब दादा जी ने कहा कि जब शरीर से आत्मा अलग हो जाती है तो इसका अर्थ है मृत्यु होना। मृत शरीर हिलना जुलना बंद कर देता है। यह दूषित हो जाता है, ऐसे मृत शरीर को नदी के किनारे जला दिया जायेगा क्यों कि यह कोई भी कार्य करने के लिये खत्म हो गया है। वह चुपचाप संस्कार करने वालों के पीछे हो लिया व संस्कार वाले मैदान से कुछ दूर गुप्त रूप से एक बबूल के पेड़ पर चढ़कर मृत व्यक्ति के शरीर को देखने लगा, लोगों ने उसके शरीर को आग लगा दी, उसने मन में सोचा कि ये कितने क्रूर व्यक्ति हैं। पेड़ पर ही बैठे-बैठे मौत की प्रकृति पर विचार करने लगा। मृत्यु के गहन विचार करते करते उन्हें भगवान् महावीर स्वामी के दर्शन हुये। इसके परिणाम स्वरूप इन्हें अपने पिछले जन्म के भव की याद आने लगी। जाति स्मरण ज्ञान प्राप्त हुआ। पुनः जीवन में उनको विश्वास हुआ। कुछ समय बाद जूनागढ़ में किले का दौरा करने के बाद उन्होंने फिर इसका अनुभव किया। उनके अनुभव ने उन्हें धार्मिक जीवन जीने के लिये प्रभावित किया। यह एक असाधारण स्मृति (रिटेंटिवनेस) और याद थी।

वह साढ़े सात वर्ष की उमर में स्कूल में दाखिल हो गये थे। लेकिन सिर्फ एक महीने में ही गणना में प्रारंभिक स्तर पर महारत हासिल कर ली थी। दो वर्षों में उन्होंने 7 ग्रेड का अध्ययन पूरा किया। आठ वर्ष की आयु में उन्होंने कविताओं की रचना शुरु कर दी, माना जाता है कि उन्होंने

एक वर्ष में ही 5000 पदों की रचना की थी। उन्होंने 9 वर्ष की आयु में रामायण और महाभारत पर कविता लिखी। दस वर्ष की आयु में उनमें सोच और तर्क की परिपक्वता आ गई, सार्वजनिक बोलने की शुरुआत 11 वर्ष की आयु में की तथा समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में लेख लिखने शुरु कर दिये 12 वर्ष की आयु में 300 कवितायें लिखी। ई. सन् 1880 में वह अंग्रेजी भाषा व अन्य भाषाओं का अध्ययन करने के लिये राजकोट चले गये। 1882 तक उन्होंने कई विषयों का अध्ययन और महारत हासिल कर ली थी। वह एक युवा कवि के रूप में लोकप्रिय हो गये। वह कभी कभी कच्छ के शासक के महल में दौरे पर जाते थे जहां वह एक लेखक के रूप में जाते थे तथा वहां उनके हाथ की खूबसूरत लिखावट की बड़ी प्रशंसा होती थी। उन्होंने 12 वर्ष की आयु में अपने पिता की दुकान पर जाना शुरु कर दिया तथा खाली समय में बैठे बैठे राम और कृष्ण के जीवन पर कई कविताओं की रचना की थी। वह दुकान पर कभी कम या अधिक नहीं तोलते थे।

अवधान- ध्यान और याद की एक मुश्किल प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति एक समय में कई आब्जेक्ट्स और गतिविधियों में भाग लेता है। 1884 में वह मोरबी गये जहां उन्होंने शास्त्री शंकरलाल को एक समय में आठ अवधानों को करते देखा, दो दिन बाद राजचंद्र ने अपने दोस्तों व जनता के सामने सार्वजनिक तौर पर 12 अवधान किये। तथा बाद में 2000 दर्शकों के सामने 16 अवधान पेश किये जिन्हें समाचार पत्रों में खूब प्रशंसा मिली। उन्होंने बोतड् में 52 अवधान का प्रदर्शन किया जिसमें 3 खिलाड़ियों के साथ चोपट खेलना, 2 खिलाड़ियों के साथ चोपट खेलना, 2 खिलाड़ियों के साथ कार्ड खेलना, शतरंज खेलना एक छोटे गोंग की आवाज की गिनती, मानसिक रूप से गणित के योगों की गणना करना, जोड़-घटाव, गुणन और विभाजन, एक धागे के साथ मोतियों की आवाज की गणना, आठ नई समस्यायें हल करना, एक समय में चुने गये 8 विविध विषयों पर छंद लिखे और दर्शकों के विभिन्न 16 सदस्यों द्वारा चुने गये, विशिष्ठ विषयों को सही क्रम में ग्रीक, अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, अरबी, लैटिन, उर्दू, गुजराती, मराठी, बंगाली, मारू, जेडीजी सहित क्रम में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं के 400 शब्दों को पुनर्व्यवस्थित किया। इन्हें 22 जनवरी 1887 को बाम्बे में सर फ्रेमजीक्वासडी इंस्टीट्यूट द्वारा स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। राजचंद्र का मानना था कि ऐसे अवधानों द्वारा प्राप्त ख्याति आध्यात्मिक गतिविधियों में बाधा बन जाती है। इसलिये उन्होंने धीरे-धीरे इस प्रदर्शन को हतोत्साहित किया और 20 वर्ष की आयु में इसे पूरी तौर पर बंद कर दिया। महात्मा गांधी ने भी अपनी आटो बायोंग्राफी में पृष्ट 82 पर राजचंद्र जी की यादाश्त की बड़ी तरीफ की है। उन्होंने कहा कि मुझे जितने भी योरपियन भाषाओं के जितने शब्द आते थे वह मैंने बोल दिये, राजचंद्र ने उसी क्रम में वह सब शब्द बाद में बोल दिये, यह उनके अपार ज्ञान के भंडार की महिमा बताती है। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा द स्टोरी आफ माई एकसपेरिमेंटस विद ट्रुथ के भाग-2 में पृष्ठ 81 से 83 तक राजचंद्र के बारे में ही लिखा है। मेरे चरित्र निर्माण में कवि रायचंद भाई, रस्किन और टॉल्सटॉय का योगदान रहा है। परन्तु कवि ने आध्यात्मिक मामलों में मेरा हृदय जीत लिया है। इतना गहरा प्रभाव मुझ पर कोई और नहीं डाल सका। कवि के साथ मेरे वैयाक्तिक और घनिष्ट संबंध रहे हैं।

22 वर्ष की आयु में इन्होंने आत्मा के बारे में बहुत कुछ जान लिया था। मन में कैसे परिवर्तन होता है ? बोलने व सोचने में एकीकरण (अखंडता) कैसे आती है ? इंसान दौलत के पीछे क्यों भागता है ? यह संसार कैसा विभिन्न है। इंसान को बेहद खुशी तथा अपार कष्ट व दुःख क्यों मिलते हैं ?

इस सबका उनको अनुभव हुआ। इन्होंने अपनी स्मृति में बड़े-बड़े संतों, महात्माओं, दार्शनिक के विचारों को स्थान दिया। बड़े भयंकर, शंकाशली, आकांक्षा और इच्छाओं, उदासीन व निर्मल विचारों को जाना। यह सब इन्होंने तप के माध्यम से अर्जित किया।

इनके जीवन पर भगवान महावीर के साहित्य तथा शिक्षाओं को बड़ा गहरा प्रभार था। इन्होंने आध्यात्मिक तौर पर इन शिक्षाओं का साक्षात प्रकट किया। वह एक परोपकारी व भलाई करने वाले पुरुष थे। वह भगवान् महावीर के पूर्ण ज्ञान के प्रति समर्पित थे। इन्होंने अपने आपको संसार की बौद्धिकता से अलग कर लिया था। इनका जीवन लगातार धार्मिक होता हुआ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर बढ़ रहा था।

इनकी अमूल्य रचनायें श्रीमद् राजचंद्र नामक ग्रंथ में संकलित और प्रकाशित की गई है। काव्य-कृति , श्री आत्मसिद्धि शास्त्र इनकी सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक हैं। इनके द्वारा विरचित अन्य शोध-प्रबंध काव्य रचनायें, लेख सूक्तियां और व्यक्तिगत भाष्य भी हैं, जिनमें गहन चिंतन और गहन आत्म-अनुभूति को अभिव्यक्ति की गई।

सत्य में गहन आस्था रखने वाले श्रीमद् राजचंद्र जी को 23 वर्ष की अवस्था में ही भावनात्मक आध्यात्मिक-अनुभूति आत्मज्ञान हुआ। सांसारिक गतिविधियों के बीच भी इन्होंने इस अनुभूति को प्रज्जवलित रखा। 28 वर्ष की आयु उपरांत, उन्होंने वर्ष के 4 से 6 महीने तक का समय गुजरात के जंगलों, पर्वतों तथा निर्जन स्थानों में एकांतवास के रूप में व्यतीत करना शुरु किया तथा सहजतापूर्वक इस कठोर जीवन का पालन किया। असाध्य रोग के कारण श्रीमद् राजचंद्र का स्वास्थ्य सन् 1900 में अत्यंत खराब हो गया, जिससे वे फिर उभर नहीं पायें। अत्यंत शारीरिक कष्ट के बावजूद उनका व्यक्तित्व परमानंद से कांतिमय रहता था। उनकी आत्मा ने 9 अप्रैल 1901 को राजकोट में इस नश्वर देह का परित्याग कर दिया। इस समय उनकी आयु केवल 33 वर्ष थी।

श्रीमद् राजचंद्र जी पर डाक टिकट :- भारत सरकार के डाक विभाग ने श्रीमद् राजचंद्र जी के चित्र वाला एक 500 पैसे मूल्य वाला डाक टिकट वेट ऑफसेट मुद्रण प्रक्रिया द्वारा, प्रतिभूति मुद्रणालय हैदराबाद से 4,77,640 संख्या में छपवाकर 29 जून 2017 को जारी किया था। इस डाक टिकट को जारी करने का मुख्य समारोह साबरमती आश्रम, अहमदाबाद में हुआ, जहां पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इसे जारी किया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव श्री राकेश भाई जो कि श्रीमद् राजचंद्र मिशन के संस्थापक हैं , गुजरात प्रदेश के राज्यपाल श्री ओमप्रकाश कोहली, मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी, उपमुख्यमंत्री श्री नितिन भाई पटेल तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी समारोह में भाग लिया। श्रीमद् राजचंद्र जी के चित्र वाले दो यादगारी सिक्के भी इस अवसर पर जारी किये गये जिसमें एक सिक्का 150 रूपये मूल्य का स्मारक सिक्का है, यह संग्रहकर्त्ताओं के लिये हैं जब कि प्रचलन में रहने वाला दूसरा सिक्का 10 रूपये का है। श्रीमद् राजचंद्र जी की 150वीं पावन जयंती पर यह डाक टिकट तथा सिक्के जारी किये गये हैं।

मध्यप्रदेश में व्यवसायिक शिक्षा की निम्नता की उच्चता पर ?

❊ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ❊

मध्यप्रदेश सरकार को मनपसंद सरकार कहना उचित हैं कारण यहाँ पर वे सब काम जो असंभव कहलाते हैं यहाँ संभव हैं। हजारों स्कूल बिना शिक्षक के चल रहे हैं, बिना भवन के हैं और कई स्कूल बिना छात्रों के भी हैं, और जहाँ सब कुछ हैं, पढ़ाई नहीं हैं। प्राथमिक स्तर की पढ़ाई इतनी निम्न स्तरीय होती हैं की पांचवी पास छात्र अपना नाम नहीं लिख पाता और उसके बाद छठवीं से आठवीं तक वो पूरी पढ़ाई न कर पाने से उसके माँ बाप को उसकी नौकरी की चिंता नहीं रहती। कारण आठवीं पास न होने से रोजगार कार्यालय में पंजीकृत नहीं हो सकता। जिसके कारण माँ बाप को यह चिंता नहीं रहती की लड़का पढ़ाई करने के बाद दूसरे शहर नौकरी में चला जायेगा या भाग जायेंगा। कम से कम वह माँ बाप की सेवा के योग्य रहेगा और कम पढ़ा लिखा होने से वह कोई भी छोटा मोटा काम करके अपना भरण पोषण कर लेगा और बेरोजगार की श्रेणी में नहीं आयेगा और वह और उसका परिवार, सरकार चिंता मुक्त रहेगी।

इसके बाद आजकल माध्यमिक, प्राइमरी स्कूल स्तर के शिक्षकों की भारी कमी हैं कारण आजकल सबसे सरल सुविधाजनक शिक्षा इंजीनियरिंग की हो गयी हैं तो शिक्षकीय कार्य इंजीनियर नहीं कर सकते और बी.एड. आजकल प्राइमरी शिक्षा से भी गयी बीती हैं, उनकी परीक्षा एक प्रकार की औपचारिकता होती हैं उसके बाद हर साल नित्य नये प्रयोग शिक्षा में होते हैं और उनका पाठ्यक्रम भी बदलता जाता हैं जो शिक्षकों को पल्ले नहीं पड़ता तो वे क्या खाक छात्रों को पढायेंगे। 12वी के बाद विषय चयन भी बहुत सामान्य व्यवस्था के अंतरगत होती हैं और फिर प्रवेश परीक्षा माध्यम से इंजीनियरिंग, मेडिकल, लॉ और अन्य शाखाओं में प्रवेश विश्वविद्यालय स्तर पर होता है। ये कॉलेज एक प्रकार के इंजीनियरिंग मेडिकल लॉ विषयों की फैक्ट्री हैं जहाँ से एक से सांचे में ढले छात्र निकलते हैं और जिनकी योग्यता किसी भी अन्य प्रदेश की स्तरीय संस्थान से श्रेष्ठ न होकर बहुत घटिया होती है।

मनपंसद सरकार के अंतरगत शासकीय के साथ निजी कॉलेजों की स्थिति बहुत ही निम्न स्तर की हैं जहाँ न शिक्षक हैं न अधोसंरचना हैं और न कोई क्लास लगती मात्र फीस के आधार पर उपाधि दी जाती हैं, इसी कारण अधिकांश संस्थाओं की मान्यतायें खतरे में हैं और अनेकों कॉलेज बंद होने की कगार पर हैं और यहाँ से पास छात्रों की योग्यता और

उपाधि की मान्यता का कोई अन्य जगह महत्व नहीं हैं। आज स्थिति यह हैं कि उपाधि धारक कोई भी निम्न स्तरीय काम करने को तैयार हैं, मजबूर हैं, बाध्य हैं कारण पेट के खातिर कुछ भी करने को तैयार हैं। और कोई कोई तो अवसाद में आने पर आत्महत्या भी कर लेते हैं।

इसके बाद मेडिकल कॉलेजों की स्थिति और भी दयनीय हैं पहली बात प्रवेश परीक्षा में धांधलियां मामूली बात हैं इसके बाद प्रवेश में लाखों रूपये का लेन देन और उसके बाद बिना योग्यता के उपाधि मिलना और फिर योग्यता न होने पर किसी निजी नरसिंघ होम में नर्सिंग स्टाफ का काम करते हैं मध्य प्रदेश का व्यापम काण्ड विश्व स्तर पर कुख्यात हो चूका हैं और कभी बिना परीक्षा के पास होना आदि अनियमितायें होती हैं। निजी कॉलेज तो कुछ योगदान देते हैं पर वहाँ पैसों की धांधलिया होती हैं और कहीं कहीं अधोसंरचना का अभाव होने से उनके भविष्य अंधकारमय हो जाते हैं ।

भोपाल स्थित नेशनल लॉ इंस्ट्रिटयूट यूनिवर्सिटी में कितने फैल हुये छात्रों को पास किया गया और कितनों को फैल किया गया और अब तो स्थिति यहाँ तक पहुंच गयी हैं की कई छात्रों के विरोधः पुलिस में रिर्पोट दर्ज की गयी हैं। ये उस स्थान की बात हैं जहाँ से न्याय की गंगा बहती हैं। जब गंगोत्री ही अपवित्र हैं तो गंगा कहाँ तक पवित्र होगी ?

ऐसा ना जाने कितनी संस्थायें बिना अनुमति के धड़ल्ले से चल रही हैं और सरकार में पदस्थ अफसर कुम्भकर्णी निद्रा में लोभ लालच के कारण अंधे बैठे हुये हैं हमारे प्रान्त में क्या देश में लॉ एंड आर्डर (लाओ और आदेश ले जाओ) की व्यवस्था हैं। जितना अधिक नियंत्रण उतना अधिक भ्रष्टाचार जो जितना अधिक कड़क अफसर उतना अधिक भ्रष्ट या जितना मधुर बोलने वाला उतना लक्ष्मी विलासी होता हैं , उनका स्पष्ट कहना हैं कि नौकरी करने का वेतन मिलता हैं और काम करने/कराने के लिये लक्ष्मी चाहिये। घोड़ा घास से यारी करेगा तो उसका पेट कैसे भरेगा ?

लाखों शिक्षकों/प्रोफेसरों के पद खाली हैं, प्रभारियों से कार्य सम्पादित कराया जा रहा हैं, उससे शासन को और उच्च अधिकारियों को यह फायदा होता हैं की वे प्रभारी कार्यालयीन कार्यों में अनुभवहीन होने से गलतियां करते हैं या हो जाती हैं उन पर अप्रत्यक्ष्य दबाव बनाया जाता हैं और इसके अलावा उन्हें प्रभार से हटाने का भय दिखते रहते हैं जिससे कार्यालयीन कार्य तो प्रभावित होते हैं और कई जाँच के कारण अकाल काल के गाल में समां जाते हैं, इससे उच्च अधिकारियों को दोनों तरह से फायदा होता हैं। नियुक्ति और हटाने के भय से सुविधा शुल्क मिलती रहती हैं और शासन का कार्य अप्रभावित होता हैं।

जब बुनियाद ही कमजोर होती हैं या रहती हैं तो कुछ बिरले ही छात्र शोध में काम कर पाते हैं अन्यथा अधिकांश अपने पेट की लड़ाई में लगते हैं या रूचि के अनुरुप काम नहीं मिलने से अनमने मन से काम करते हैं। आजकल शिक्षा पर बजट भी सरकार कम करती जा रहीं है, और जिस पार्टी की सरकार होती हें वे अपनी विचारधरा थोपती हैं। जबकि शिक्षा को राजनीति से अप्रभावित होना चाहिये पर शिक्षा विभाग से ही राजनीति का पाठ पढाया और सिखाया जाता हैं। विश्वविद्यालय राजनीति की पाठशाला होती है।

अब यह प्रश्न हमारे सामने उपस्थित हैं की इस प्रकार के मानदंडों पर हम कैसे विश्वगुरु की कल्पना कर सकते हैं , इस सम्बन्ध यह बात सही भी हैं की देश में क्रांति मूर्खों से ही आती हैं पढ़े लिखे लोग कब क्यों कहाँ जैसे प्रश्न करते हैं और मूर्खों अनपढ़ को आदेश का पालन करना पड़ता हैं, वह किन्तु परन्तु नहीं करता, इसीलिये वर्तमान सरकारें इसी प्रथा का पालन कर रही हैं और उनके लिये जरूरी हैं। जैसा प्रधान सेवक जैसी प्रजा, यानी मूर्ख राजा मूर्ख प्रजा। राजा के कृत्यों का प्रभाव प्रजा पर पड़ता है। राजा यदि झूठ बोलता है, मक्कारी करता हैं आत्मप्रशंसा में लीन रहता हैं, पर निंदा में उसे निंदा रस मिलता हैं, बातों से ही दिन में तारें दिखाता हैं, जिसे अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करने में दिन रातर बेचैन रहता हैं, कल्पना लोक में सैर कराता हैं उस देश की प्रजा भी कल्पना लोक में ही जीती हैं।

शिक्षा एक ऐसा संवेदनशील विषय हैं जिसमें पूरी गंभीरता की जरूरत हैं, इसके कारण देश का भविष्य निर्माण होता हैं, जिस देश की शिक्षा कमजोर हो उसका भविष्य अंधकारमय होता हैं और होगा मात्र नवीनतम तकनीकी से हम ज्ञानवान नहीं बन पायेंगें, हम मात्र सूचना एकत्रित करने वाली मशीन रह जायेंगे और उसी पर आधारित रहेंगे।

यह अजीबोगरीब संधिकाल हैं इससे यदि हम नहीं उबरे तो सिर्फ मात्र कागजों में ही श्रेष्ठ रहेंगे, मूलरुप से शून्य होंगे।

बिना नींव के भवन अट्टालिकायें देखी हैं - हाँ

जब बिन गुरु ज्ञान मिल सकता हैं जो आज घर घर हर हाथ में ज्ञान का भण्डार मोबाईल

घर घर में टीवी कम्प्यूटर इंटरनेट का बोलबाला तो क्या जरूरत हैं देश को लोक कल्याणकारी राज्य कहलाने की क्योंहम भूल मुलइयों में पड़े हैं अभिमन्यु ने गर्भ में ही शिक्षा ली थी हम उस देश के वासी जहाँ झूठी नदियां बहती हैं।

थोथा चना बाजे घना

❊ आर्यिका 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी ❊

गांधी जी के गुरु श्री मद् रायचन्द्र जी कहते हैं कि जब मुझे थोड़ा ज्ञान था तब सिर उठाकर चलता था। लगता था कि कोई मुझे सुनले कि मेरे अंदर भी ज्ञान है। थोथा चना बाजे घना कहावत भी प्रसिद्ध अधजल गगरी छलकत जाये। जब गगरी में पानी आधा भरा हो तो छलकता है। भरी गगरी से पानी बाहर नहीं आता। वे कहते थे थोड़ा ज्ञान होने पर दिखाने का मन करता था।

लेकिन जब मुझे वास्तव में ज्ञान हुआ तो मैं झुकाकर चलने लगा। और ज्ञान बताने के भाव खतम हो गया। मौन में आनंद आने लगा। एकांत अच्छा लगने लगा। ज्ञान चक्षु के खुलते ही मैं स्वयं से जुड़ने लगा। श्री मद्राय जी जैन लिखते हैं कि मैं अपनी पूर्व की स्थिति पर स्वयं हंसता था।

आज के आदमी की यही स्थिति है। उसे थोड़ा ज्ञान होता है और सबको सिखाने चल पड़ता है। स्वयं को जाने बिना, दुनिया को जानने में ही अपने आपको ज्ञानी मानने लगता है। ज्ञान का प्रकाश पहले स्वयं को प्रकाशित करता है फिर वह दूसरे को प्रकाशित करता हमारी क्रोधादि कषायों कम नहीं हुई तो समझना कि ज्ञान बस्ता पीठ लदा या दिमाग में रखा बराब ।

जैसे किसी गधे की पीठ पर किताओं का बोझ है। वह नहीं जानता कि ज्ञान क्या है उससे आनंद की प्राप्ति कैसे होती है। वह नही जानता ठीक इसी तरह एक व्यक्ति ने उन किताओं के अक्षरों को याद करके दिमाग में रख लिया। कम्प्युटर में लिखे शब्द और दिमाग में लिखा शब्द में कोई अंतर नही यदि उनका उपयोग सही।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

हार्निया का समय पर उपचार द्वारा सर्जरी से बचें

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (गोरीनगर इन्दौर) ❊

मानव शरीर के कुछ अंग अंदर खोखले स्थानों में स्थित है। इन खोखले स्थान को देहगुहा **(Body Cavity)** कहते हैं। देहगुहा झिल्ली की परत से ढंकी रहती है। जब उन देहगुहाओं की झिल्ली किन्हीं करणों से कमजोर या फट जाती है और मांसपेशी या उत्तक किसी छेद के माध्यम से अंदर का भाग उमर कर बाहर आने लगता है ऐसी विकृति को हार्निया कहते हैं । अधिकांश हार्निया आमतौर पर पेट में होता है, लेकिन जांघ संधि, कमर के आस पास नाभि, आहार नली में हो सकता है। पेटी की आंतों को चारों तरफ से लपेटकर घेरने वाली एक परत है जो कमजोर हो जाने पर आंते बाहर आ जाती हैं इसे ही आंत उतरना या हार्निया कहते हैं। हार्निया किसी भी उम्र में हो सकता है किन्तु 35 वर्ष के ऊपर की अवस्था में उत्तक व मांसपेशियों कमजोर होने लगती है जिससे इसके हाने की संभावना अधिक हो जाती है।

हार्निया साधारणतः दो प्रकार का अधिक होता है। 1. इंगुनैल, 2. अम्बिलाइकल

1. इंगुनैल हार्निया :- यह जांघ संधि में होता है। इसमें छोटी आंत का कुछ भाग पेट से निकलकर अण्डकोष में आ जाती है ये 70% हार्निया पुरुषों में महिलाओं की अपेक्षा ज्यादा होता है। इस हार्निया में दो अवस्थाओं उत्पन्न हो सकती है।

(अ) इरिडिउसिब्ल हार्निया– जब निकली आंत पुनः पेट के अंदर चली जाती है।

(ब) स्टैगुलटेड हार्निया– जब निकली हुई आंत अंडकोप के भीतर ही रूकी रहे और उसे अपने स्थान पर न लाया जा सके या आंत बाहर निकलकर पुनः फस जाती है, तब उस अवस्था को इन्कारसिरेटेड हार्निया कहते हैं। जिसमें आंत फूलने लगती है, रक्त आपूर्ति रूक जाती है। रोगी को दर्द, उल्टी, बुखार व बाद की अवस्था में फूला स्थान सड़ने लगता है इस अवस्था में सर्जरी ही सर्वोत्तम है।

2. अम्बिनलाइकल :- यह कम उम्र के बच्चों में होता है जिसमें नाभि के छेद से आंत बाहर निकल आती है, नाभि फूल जाती है। जो ईलाज से ठीक हो जाता है व पेट की मांसपेशियां मजबूत होने पर भी स्वतः ठीक हो जाता है जिन स्त्रियों की अधिक संतान हो चुकी है, उनको भी हार्निया हो सकता है। किन्ही विशेष परिस्थिती में बच्चे की उम्र अधिक हो जाने पर हार्निया ठीक न हो तो बचाव सर्जरी से किया जाता है । इसके अतिरिक्त फिमोरैल हार्निया, इंसिजनल हार्निया, स्पोर्ट्स हार्निया, पेन्टल हार्निया, हाइटल हार्निया भी होते हैं जिनका समय पर इलाज से नियंत्रण हो जाता है। हार्निया होने के मुख्य कारण बहुत भारी वजन उठाना, गिर जाना, बहुत ऊंचे पहाड़ पर चढ़ना, घोडे की सवारी करना, बहुत तेजी से बहुत दूर तक पैदल चलना, मुंह से फूकने का वाद्य यंत्र बहुत दिनों तक बजाना, कब्ज, जोर से खांसना, दमा, हूंपिंग खांसी, प्रसव के समय अत्याधिक जोर लगाना, प्रोस्टेट होना, मूत्र वृच्छता, मल्टी विटामिन ज्यादा खाना, वजन बढ़ना, मसालेदार भोजन, धूम्रपान करना।

जिनको हार्निया की बिमारी है उन्हें हमेशा ट्रस बांधकर रखना, बजन नियंत्रित रखना, खूब पानी पीना, पौष्टिक सुपाज्य भोजन करना, शारीरिक गतिविधियां करना व्यायाम, कब्ज से बचना, मल त्याग और पैशाब के दौरान ज्यादा जोर नहीं लगाना, वजन उठाते समय सही तकनीकि का उपयोग, खांसी दमा नियंत्रण रखना, धूम्रपान नहीं करना आदि। जिनको हार्निया हुआ है इलाज के बाद भी जोखिम रहता है अतः सावधानी रखें ।

अधिकांश हार्निया घातक नही होते समय पर इलाज द्वारा सर्जरी से बचा जा सकता है। सभी चिकित्सा पद्धति से समय पर सुयोग्य चिकित्सक की देख रेख में इलाज हो जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हार्निया का कोई लक्षण नहीं हो लेकिन शरीर में आराम के दौरान या गतिविधि के दौरान ज्यादा, कम दर्द हो जो नजर अंदाज नहीं करना चाहिये व शरीर को स्वस्थ्य सुडोल रखकर सुखीमय जीवन व्यतीत करें ।

हास्य तरंग

1. पत्नी से पीढ़ित एक व्यक्ति बहुत पहुँचे बाबा के पास पत्नी की समस्या बताता है कि वह मुझे बात-बात पर मारती है, प्यार नहीं करती है। बाबाजी ने अपनी दक्षिणा लेकर उपाया बताया। घर जाकर पत्नी से भोजन मांगो व उसके भोजन की जी भरकर तारीफ करो देखों क्या चमत्कार होता है। पर व्यक्ति घर जाकर ऐसा करता है कि पत्नी अपनी तारीफ सुनकर जोस से चांटा मारती है, कहती है पड़ोस से भोजन मांग कर लाई तो तारीफ के पुल बांध दिये मैं इतने वर्षों से भोजन बनाकर देती हँ कभी झूठी तारीफ भी नहीं की।

2. पत्रकार- दुर्घटना स्थल पर पुलिस से से पूंछती है कि दुर्घटना घटने के बाद पुलिस देर से क्यों पहुँचती है । पुलिस क्योंकि लाश 2-3 घंटे तक गरम रहती है।

3. सौरभ ने मोबाईल पर पत्नी से कहा, मैं अपने दोस्त को लंच पर घर ला रहा हूँ, तुम उसका भी भोजन बना लेना। पत्नि ने कहा महिने का आंखरी सप्ताह है, घर पर सब्जी नहीं है, गैस टंकी भी खत्म होने वाली है, सारा घर अस्त व्यस्त है। चिन्ता न करो यही सब दिखाने के लिये उसे ला रहा हूँ क्योंकि वह भी शादी करने जा रहा है।

4. टीचर- (भावित से) जिसका जन्म सन् 1995 है उसकी उम्र इस समय क्या होगी। भावित पहिले यह बताईये कि वह लड़की या लड़का है।

5. एक कवि ने पत्रिका में प्रकाशनार्थ एक कविता भेजी जिसका शीर्षक था मैं जीवित क्यों हूँ जो चार माह बाद प्राप्त हुई। सम्पादक लौटती डाक से वापिस भेज दी और लिखा क्योंकि आपकी अपनी कविता पोस्ट ऑफिस डाक से भेजी है।

संकलन : जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✲ **पोस्टमेन**

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि-सब स्वयंसेवक एक-एक शहर का नाम शिखर जी, नैनागिरजी, पावापुरजी...आदि बतायेंगे । शिक्षक किसी खिलाड़ी (अ) को कोई वस्तु पत्थर, रूमाल देगा तथा उसे निर्धारित डाकघर उदा.चम्पापुर पर पहुँचाने को कहेगा (अ) अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर चम्पापुर बोलने वाले के पास जाकर खड़ा होगा। यदि अ ठीक है तो वह डाक ले लेगा। अन्यथा (अ) की पीठ पर एक मुक्का लगाकर उसे आगे भेज देगा। (अ) जब ठीक व्यक्ति को डाक दे देगा तो वह शिक्षक के निर्देश पर उसे अगले स्थान तक पहुँचायेगा।

✲ **फुग्गा वाले बाबा**

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- मंडल में सब खिलाड़ी बैठे रहेंगे। शिक्षक एक को फुग्गा वाला बाबा बनायेगा। जो फुग्गा वाला बाबा होगा । वह अपना रूप फुलायेगा। दूसरा खिलाड़ी उसके गाल पर चपत मारकर फुग्गा फोड़ने की कोशिश करेगा। यदि वह सफल हो जाता है और बाबा के दाँत दिख जाते हैं तो दूसरा खिलाड़ी सफल हो जायेगा।

✲ **मुर्गा युद्ध**

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- स्वयंसेवक दोनों हाथों से अपना कोई एक पैर पीछे की ओर पकड़ेंगे। इसी अवस्था में एक दूसरे को टक्कर मार कर मंडल से बाहर निकालेंगे।

बाल कहानी

नेक अभियान

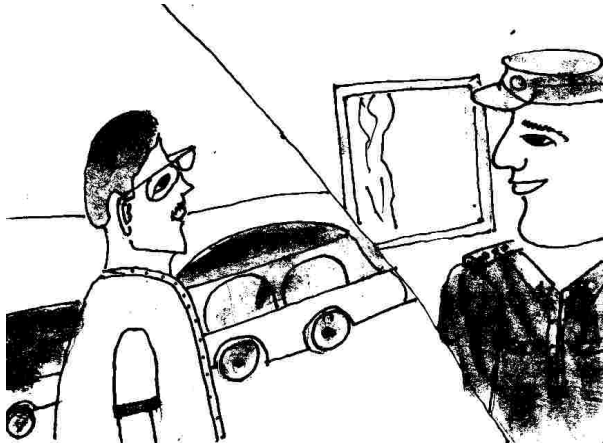

झारखंउ में रांची एक शहर है, इस शहर में एक ऋषभ आनंद नाम का पत्रकार रहता था, उसकी पत्रकारिता में बहुत रूचि थी वह धोखों की पत्रकारिता नहीं करता था, प्रायः वह ऐसे काम करता था जिससे दूसरों का भला हो एक दिन ऋषभ को बहुत जरूरी काम से दिल्ली जाना था निजामुद्दीन एक्सप्रेस उसे पकड़नी थी, लेकिन वह ट्रॉफिक के जाम में फंस गया उसकी ट्रेन चूक गई,ऋषभ ने अपने क्षेत्र के ट्रॉफिक पुलिस कार्यालय से संपर्क किया किंतु किसी ने उसे महत्व नहीं दिया, उसने अपने कार्य की आवश्यकता एवं होने वाले नुकसान को एस.पी. के लिये बताया, पहले तो एस.पी ने टालमटोल की, किंतु बाद में ऋषभ के लिये समझना पड़ा तदउपरांत दिल्ली जाने के लिये पुलिस ने एक इंडीगो का फ्लाइट टिकिट भेजा तथा एक दिन एक रात अतिरिक्त ठहरने का पुलिस ने बिल भी चुकाया।

ऋषभ ने अपनी इस घटना से एक संकल्प लिया कि मैं ट्राफिक जागरूकता के लिये अभियान चलाऊँगा और ऋषभ ने राँची के अंदर शिक्षण संस्थाओं में जाकर विद्यार्थियों के बीच ट्राफिक के नियम और सुरक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने का भाषा देना शुरु किया, ट्रॉफिक पुलिस से मिलकर ऋषभ ने तीस रविवार तक नये नये स्कूलों में जाकर अपने अभियान को आगे बढ़ाया, ऋषभ की चर्चा जन जन तक पहुँची और ऋषभ ने यह सबको संदेश दिया कि बड़े उद्देश्य पर काम करने वालों को हमेशा बड़ी ऊर्जा मिलती है तथा अपनी योजना अनुसार काम करने वाला व्यक्ति सदैव सफल होता हे और ऋषभ ने एक स्कूल भी खोल दिया जिसका नाम कार+टून रखा। इससे ऋषभ का नाम पूरे झारखंड में आदर के साथ लिया जाने लगा।

संस्कार गीत

जैनी एक करोड़

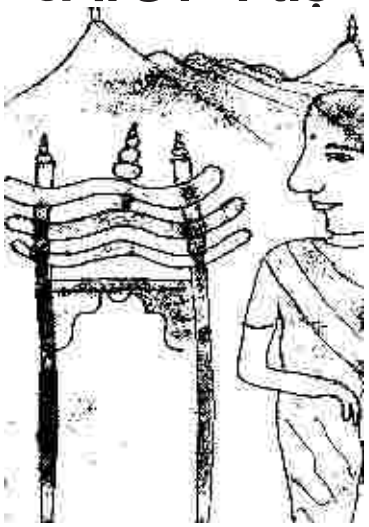

भारतवासी मूल निवासी जैनी एक करोड़
गौरवशाली संस्कृति अपनी दुनिया में बेजोड़

1.

जैनी अपना धर्म न भूलें जैन धर्म अनमोल
जनगणना में जैन लिखायें लक्ष्य होवे गोल
अवसर अब हम चूक न जायें
पूरे कर दें एक करोड़

2.

जागें और जगायें हम सब जैन धर्म का मान बचायें
जैन धर्म की विश्व प्रतिष्ठा सत्य नहीं विसरायें
सिद्ध करें हम 1 कोटि जन साजिश देंगे तोड़

3.

धर्म अहिंसा अनेकांतमय, वीतरागता रूप महा
क्षमा सखि है जिन वृष की तो
दया रही है दिव्य सखा
बच धर्म बचाने कढ़िबद्ध हो
अहंकार को अपना छोड़

बाल कविता

पंतग की डोर

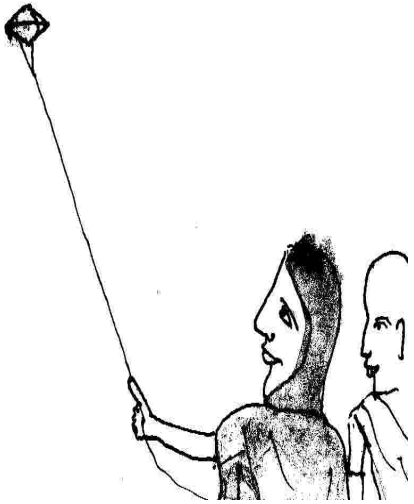

एक गुरु थे एक था चेला
उन दोनों में बड़ा था मेला
एक दिवस कुछ ख्याल ये आया
चेले को गुरु ने समझाया
संस्कार की डोर हो पक्की
तो ऊँचाई भी मिलती नक्की
बिना डोर के वह गिर जाती
बिना हवा के चले न चंग
बिना डोर नहीं उड़े पतंग
झाड़ झंखडों से फट जाती
अनुशासन से उन्नति होती
जैसे सीप में बनता मोती
अनुशासन का पाठ निभाओं
आगे आगे बढ़ते जाओ

समाचार

दीक्षा सम्पन्न

अहमदाबाद- आर्यिका शुभमति माताजी द्वारा मधुसुदन भाई उस्मानपुरा अहमदाबाद को 31 जनवरी 2020 को क्षुल्लक दीक्षा दी गई जिनका नाम क्षुल्लक श्री सुत्यागसागर जी महाराज रखा गया।

उदयपुर राजस्थान- आचार्य श्री विभवसागर महाराज के करकमलों से 21 फरवरी 2020 को बीसाहुमड़ भवन तेलीवाड़ा उदयपुर राजस्थान में सेठ लख्मीचंद जी एवं बाल ब्रह्मचारिणी मंजू दीदी को दीक्षा दी गई। जिनका नाम क्रमशः क्षुल्लक सिद्धसागर जी एवं क्षुल्लिका अद्योमश्री माताजी रखा गया।

टोंक राजस्थान- गणिनी आर्यिका विशुद्धमति माताजी के करकमलों से 21 फरवरी 2020 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर टोंक में ब्रह्मचारी बहन संतरा जैन मालपुरा, ब्र. पुष्पा दीदी बिभाड़ा, ब्र. संतोष दीदी दिल्ली, को दीक्षायें दी गई जिनका नाम क्रमशः आर्यिका विदर्शमति माताजी, क्षुल्लिका विलोक्यमति माताजी, क्षुल्लिका विपुलमति माताजी रखा गया।

यरनाल- आचार्य श्री वर्धमासागर जी महाराज के करकमलों से 30 जनवरी 2020 को श्री कैलाशचंद जी काला कोलकाता, कस्तूरी आदिनाथ चौगले बस्तवाड़ को दीक्षायें दी गई जिनके नाम क्रमशः क्षुल्लक दिव्यसागर जी महाराज, आर्यिका चेतनामति माताजी नाम रखा गया।

जहाजपुर- आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माता जी एवं लक्ष्मीभूषण माताजी को गणिनी पद 13 फरवरी 2020 को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जहाजपुर राजस्थान में दिया गया साथ ही आर्यिका श्री मुक्तिभूषण जी आर्यिका श्री सरस्वतीभूषण जी आर्यिका श्री सृष्टिभूषण जी आर्यिका श्री दृष्टिभूषण जी को गणिनी पद दिया जावेगा आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने कहां कि गणिनी आर्यिकाओं को दीक्षा देने का अधिकार नहीं होगा संघ का नेतृत्व कर सकती है। तथा क्षुल्लिका अन्तसमति एवं ब्र. अल्पना दीदी (गुड़िया दीदी) दिल्ली को आर्यिका दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः आर्यिका श्री अन्तसमति माताजी एवं आर्यिका श्री आर्षमति माताजी नाम रखा गया। उक्त कार्यक्रम में क्षुल्लक योगभूषण महाराज की उपस्थिति रही।

आचार्य पद एवं दीक्षायें सम्पन्न

उदी तीर्थ- आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी महाराज के करकमलों से दिनांक 01 फरवरी बालाचार्य सुरत्नसागर महाराज को आचार्य पद से सुशोभित किया गया। तथा आचार्य कुशाग्रनन्दी महाराज के शिष्य मुनि श्री दयाऋषि महाराज को उपाध्याय पद से सुशोभित किया गया साथ ही ब्र. अतुल भैया करल, ब्र. सीमा दीदी भिण्ड, ब्र. मधु दीदी गोवर्धन को मुनि एवं क्षुल्लिका दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री सुतीर्थसागर जी, क्षुल्लिका श्री सुआर्यमति माताजी, क्षुल्लिका सुश्रेष्ठमति माता जी रखा गया।

आगरा (उ.प्र.)- आचार्य श्री धर्मभूषण महाराज के शिष्य मुनि श्री विज्ञानभूषण महाराज को दिनांक 17 फरवरी 2020 को अग्रवाल दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर मोतीकटरा आगरा में आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज (कमल मंदिर वाले) द्वारा आचार्य पद दिया गया।

मधुवन शिखरजी- आचार्य श्री अनेकान्त सागर जी महाराज के करकमलो से 25 जनवरी 2020 को शान्तिसागर धाम शिखर जी

में क्षुल्लक सत्यसागर महाराज को एलक दीक्षा दी गई। जिनका नाम एलक श्री अभिक्षण सागर महाराज रखा गया।

लसुड़िया परमार- आचार्य श्री प्रसन्नऋषि जी महाराज के करकमलों से ब्र. पुष्पा दीदी एवं ब्र. नन्हीं दीदी को श्री दिगम्बर जैन ऋषि तीर्थ लसुडिया परमार ए.बी. रोड इन्दौर में 25 फरवरी 2020 को दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः क्षुल्लिका पारणमति माताजी, क्षुल्लिका प्रेरणामति माताजी रखे गये।

आगामी दीक्षायें

सोनागिर-आचार्य श्री विरागसागर महाराज के करकमलों से निरंजन बहन अहमदाबाद को आर्यिका दीक्षा 14 अप्रैल 2020 को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिर में दी जावेगी।

समाधिमरण

अहमदाबाद- आर्यिका शुभमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में क्षुल्लक श्री सुत्यागसागर जी महाराज का 5 फरवरी 2020 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर हाटकेश्वर में प्रातः 9.25 पर समाधिमरण हुआ।

अहमदाबाद-आर्यिका श्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में आर्यिका श्री सुप्रभमाता जी का समाधिमरण 10 फरवरी 2020 को श्री दिगम्बर जैन धर्मशाला हाटकेश्वर अहमदाबाद में हुआ।

अहिक्षेत्र (उ.प्र.)- आचार्य श्री चैत्यसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका श्री समकित श्री माताजी का समाधिमरण 5 फरवरी 2020 को 11.27 मिनट पर हुआ।

कुंथुगिरी- आचार्य श्री कुंथुसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री विजयनंदी महाराज का समाधिमरण 29 जनवरी 2020 को रात्रि 12.02 मिनट पर हुआ।

ईडर गुजरात- आचार्य श्री धैर्यसागर महाराज जी के शिष्य आचार्य श्री धन्यसागर जी महाराज का समाधिमरण 16 फरवरी 2020 दोप. 2 बजे मुनि श्री अनुसरणसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

कानपुर- मुनि श्री विशोकसागर जी महाराज के सान्निध्य में आचार्य श्री विरागसागर महाराज के शिष्य मुनि श्री सुरत्नसागर जी महाराज का समाधिमरण 21 फरवरी 2020 को ब्रम्हमूहूर्त में लाला गुलजारीमल दिगम्बर जैन धर्मशाला सब्जी मंडी बादशाही नाका कानपुर में हुआ।

बांसवाड़ा- आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री सुस्थिरसागर जी महाराज का समाधिमरण 22 फरवरी 2020 को बाहुबली कॉलोनी बांसवाड़ा में हुआ।

पंचकल्याणक सम्पन्न

देवरी- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी के शिष्य मुनि श्री प्रशांतसागर जी महाराज, मुनि श्री विमलसागर जी महाराज, आर्यिका गुणमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 14 से 20 फरवरी 2020 को श्री मज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब प्रतिष्ठा एवं विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन किया गया यह पंचकल्याणक श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर विद्याविहार कॉलोनी देवरी जिला सागर म.प्र. का प्रतिष्ठा सम्राट प्रतिष्ठा रत्न वाणी भूषण बाल ब्र. विनय भैया सम्राट के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

श्री अष्टापद कैलाश मानसरोवर जैनयात्रा

दिल्ली- क्षुल्लक श्री योगभूषण जी महाराज की प्रेरणा से अष्टापद कैलाश जैनयात्रा समिति दिल्ली द्वारा दिनांक 17 जून से 26 जून 2020 तक प्रथम बार श्री अष्टापद मानसरोवर कैलाश यात्रा जा रहीं है। यह यात्रा हेलीकॉप्टर द्वारा की जायेगी। जिसमें सात्विक भोजन आदि की सुविधायें हैं। यदि आप जाना चाहते हैं तो 9211881008 पर सम्पर्क कर अपना स्थान सुनिश्चित करें।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : मार्च 2020

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

01. हम लोग अभाव में तो पूजा करते हैं पर ..... में नहीं ?
02. ..... की धरती पर ही राग-द्वेष की खेती हो रही है ?
03. व्यक्ति, माल से मालदार नहीं किन्तु भावों से ..... बनता है ?
04. हमें दीप का नहीं ..... का और सीप का नहीं मोती का सम्मान करना है ?
05. जब हवा काम नहीं करती तब दवा काम कर जाती है और जब दवा काम नहीं करती तब ..... काम कर जाती है ?
06. वचनों के माध्यम से देश, वंश और ..... का परिचय प्राप्त हो जाता है ?
07. कलयुग की यही पहचान है जिसे खरा भी ..... है सदा, और सतयुग उसे तू मान जिसे बुरा भी बूरा (शक्कर) सा लगा है सदा ?
08. ..... तत्त्व कपा निरीक्षण करने वाला व्यक्ति पावन/ पवित्र होता है ?
09. स्वतंत्रता के अधिकार के साथ-साथ..... के सम्मान का कर्तव्य भी लगा हुआ है ?
10. शाकाहार के साथ-साथ आहार की मात्रा भी ..... करना जरूरी है ?
11. देश पर आपत्ति के क्षणों में अपने संगृहीत धन का सदुपयोग नही करना, राष्ट्र के प्रति बहुत बड़ी ..... है ?
12. ..... व्यक्ति ही देश और धर्म की सुरक्षा कर सकता है ?
13. देश के धन को विदेशी बैंकों में जमा करना और व्यक्तिगत पूँजी बना लेना ..... की नींव को कमजोर करना है ?
14. पारस्परिक सौहार्द और ..... से ही देश की एकता और अखण्ड़ता कायम रह सकती है ?
15. प्रेम, मैत्री, करुणा और आस्था ..... संगठन की आधारभूत भावनायें है ?
16. विनय, वात्सल्य, एकता तीनों रत्नत्रय के समान हैं, ... की संरचना में इनका बहुमूल्य योगदान है ?
17. अपरिग्रह का सिद्धांत समाजवाद का व्यावहारिक रूप है। यह सिद्धांत समाजवाद को जीवित रखने के लिये ..... संजीवनी का काम करता है ?
18. प्रवृत्ति को छोड़कर ..... के मार्ग पर जाना ही श्रेयस्कर है ?
19. वर्तमान ..... का प्रभाव भूत और भविष्य दोनों पर पड़ता है ?
20. ..... पर्याय की प्राप्ति उतनी ही दुर्लभ है जितनी कि गुणों में कृतज्ञता ?
21. बड़ों में गंभीरता, धैर्य, साहस और वैराग्य सब कुछ ..... होना चाहिये ?
22. पक्ष-विपक्ष से परे जीवन को ..... बनाना ही श्रेयस्कार है ?
23. ..... नहीं सुई बनो, क्योंकि कैंची का काम है काटना और सुई का काम है जोड़ना ?
24. हमें जोरदार नाम नहीं करना, किन्तु जोरदार ..... करना है ?
25. उच्चविचार ही जीवन में उच्च आचार को लाते हैं तथा ..... स्थान दिलाने में कारण होते हैं ?
26. अच्छेकार्य करने से ही अच्छेपद मिला करते हैं, बुरे कार्य करने से कभी भी ..... पद नहीं मिलते ?
27. अधिक बोलने से शक्ति का अपव्यय होता है, ... रहने से चिन्तन में प्रखरता तथा

25. उच्चविचार ही जीवन में उच्च आचार को लाते हैं तथा ..... स्थान दिलाने में कारण होते हैं ?
26. अच्छे कार्य करने से ही अच्छे पद मिला करते हैं, बुरे कार्य करने से कभी भी ..... पद नहीं मिलते ?
27. अधिक बोलने से शक्ति का अपव्यय होता है, ... रहने से चिन्तन में प्रखरता तथा विचारों में प्रौढ़ता आती है ?
28. खसखस के दाने बराबर दूसरों को दिया गया दुःख हमारे लिये..... के बराबर होकर फलता है ?
29. जो पापों से बचाकर ..... की रक्षा करे वह है क्षत्रिय ?
30. मात्र लोक के पीछे मत दौड़ो, नहीं तो ..... की तरह जीवन का अन्त हो जायेगा ?
31. गुणीजनों को हमेशा मान-सम्मान देने का प्रयास करो किन्तु मान-सम्मान पाने की ..... मत रखो ?
32. स्वयं में गुरुता का अनुभव करने वाला व्यक्ति ही ..... करता है ?
33. यदि माता-पिता और गुरुओं का ..... हमारे ऊपर है तो हम अपने लक्ष्य की ओर अबाधित बढ़ते जायेंगे। फिर यह जगह सफलता ही सफलता मिलेगी ?
34. वातावरण ऐसा निर्मित करें जिससे व्यक्ति पतन नहीं बल्कि ..... की ओर अग्रसर हो ?
35. भौतिक सुविधायें मन को ..... करती है ?
36. मंदिर जाओ, जाना न पड़े ओर घर न जाओ, जाना पड़े तो समझ लो ..... की शुरुआत हो गई ?
37. बहुमूल्य प्रतिमाओं का मूल्य नहीं किन्तु ..... होनी चाहिये ?
38. व्यक्ति की परख उसके कुल से नहीं ..... से होती है ?
39. हमें धन का समर्थन, परिवर्द्धन नहीं करना किन्तु समय-समय पर उसका ..... करना है ?
40. भले ही देश बदल जाये, वेष बदल जाये, लेकिन कभी अपना ..... नहीं बदलना, उद्देश्य नहीं बदलना ?
41. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के सान्निध्य में इन्दौर में पंचकल्याणक कब से कब तक हुआ ?
42. आर्यिका प्रत्यक्षमति माताजी की समाधि कब हुई ?
43. मुनि श्री सुधीर सागर जी का समाधिमरण कब और कहाँ हुआ ?
44. सोरई (उ.प्र.) में मुनि सुप्रभसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में पंचकल्याणक कब हुआ ?
45. सवासन प्रत्येक व्यक्ति को कितने मिनिट तक करना चाहिये ? 3 से 10 मिनिट
46. हमें स्वस्थ्य रहने के लिये कितने घंटे सोना चाहिये ? 6 घंटे
47. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने मूकमाटी में सौर्यमंडल के रूप में प्रभाकर का नाम किस पृष्ठ पर आया है ?
48. ब्र. नवनीत गंगवाल की मुनि दीक्षा कहाँ पर कब हुई ?
49. आचार्य सौभाग्यसागर जी महाराज ने रोहिणी दिल्ली में 20 जनवरी 2020 को कितनी दीक्षायें दी ?
50. आर्यिका सुनयमति माताजी की समाधिमरण कब हुआ?

10 प्रश्न संस्कार सागर फरवरी 2020, 40 प्रश्न दिव्यवाणी सागर बूंद समाय, निजता का पाठ, राष्ट्र-भावना, श्रेयस् पथ से लिये गये है।

अगले महीने से मुनि श्री कुंथुसागर जी द्वारा रचित परमार्थ देशना से प्रश्नोत्तर पुछे जायेंगे जिनको भी पुस्तक प्राप्त करनी हो वह संस्कार सागर कार्यालय में सम्पर्क करें। फोन 0731-4003506

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः मार्च 2020

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम .....स्थान .....

उम्र .....सदस्यता क्र. .....

पूर्ण पता .....

पिन कोड ..... फोन नं..... (एस.टी.डी.) .....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम ..... हस्ताक्षर

नियम :– ..... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 250

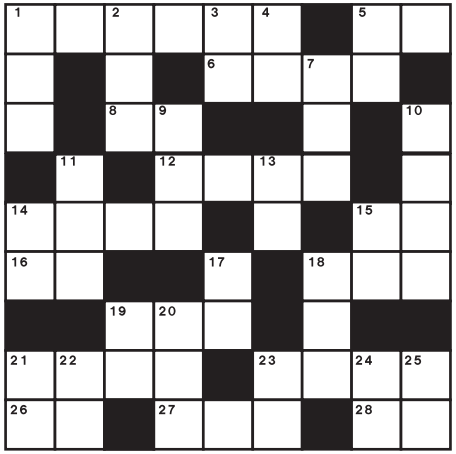

ऊपर से नीचे

1. चपल, अस्थिर -3
2. एक फूल, फूलों का राजा -3
3. मृत्यु -2
4. मृत्यु का देवता -2
5. माता के पिता, माँ के पिता -2
7. कटि -3
9. तरंग,बेव -3
11. रज, फूल का सुंगधित अंग -3
13. मैं का बहुवचन -2
15. संसार, दुनिया, जहाँ -2
17. चित्त अंतः करण -2
18. जाने की क्रिया, गति सूचक -3
19. परन्तु, पंख -2
20. देश राष्ट्र -3
22. मूल्य, कीमत, धन -2
23. जंगल अरण्य -2
24. रास्ता, मार्ग, पथ -2
25. बुढ़ापा वृद्धपना -2

बाये से दाये

1. एक सम्राट जो चाणक्य का शिष्य और जैनाचार्य भद्रबाहु से दीक्षित हो -6
5. गर्व, अभिमान -2
6. भड़कना, क्रोधित होना, उत्तेजित होना -4
8. शक्ति ताकत -2
10. माली, बाग का रक्षक -1
12. बहना, हरिहर, त्रिदेव -4
14. देव-दानव -4
15. एक धान्य, यव -2
16. पक्षी, पखेरु -2
18. आकाश, आसमान, गगन -3
19. हवा, वायु -3
21. घुमना, भागना -4
23. शेर सिंह जंगल का राजा -4
26. दुख, कष्ट -2
27. नमस्कार करने का भाव -3
28. धानी, ग्रीन, एक रंग -2

वर्ग पहेली 250 का हल

1 अ	ष्ट	2 श	3 ती	■	4 अ	5 क	6 लं	7 क
म	■	8 त	र	■	9 जिं	त	■	ल
10 र	11 ज	क	■	12 ख	त	रा	■	म
■	हा	■	13 ना	च	ना	■	14 भ	■
15 व	ज	15ए न	■	16 र	थ	■	17 त	प
र	■	18 ज	स	■	■	19 स	वा	ल
20 ग	21 द	र	■	22 स्व	■	23 मा	लि	क
24 द	श	■	25 ज	र	■	ज	■	■
■	26 क	म	ल	■	27 कः	■	28 ग	ज

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.)
प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

गुरु सपने का भारत बनाना है।
सबको अपने घर पुस्तक मँगाना है ॥
सदियों से हमारी मातृभाषा अपना स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्षशील होकर हमेशा आंदोलनों से गुजरती रही है, उसी दिशा में एक पहल...
प्रेरणा एवं आशीर्वाद
आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज
संकलन : डॉ. ब्र. भरत भैया, सागर
प्रकाशक
जैन विद्यापीठ
भाग्योदय तीर्थ, सागर
हिन्दी लिखें
हिन्दी बोलें
हिन्दी में सोचें
प्राप्ति स्थान
धर्मोदय विद्यापीठ
सागर (म.प्र.)
https://vidyasagar.guru/blogs/entry/2016-post
प्राप्ति स्थान
संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर
www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008